उपत्यका

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका सत्र 2021-22

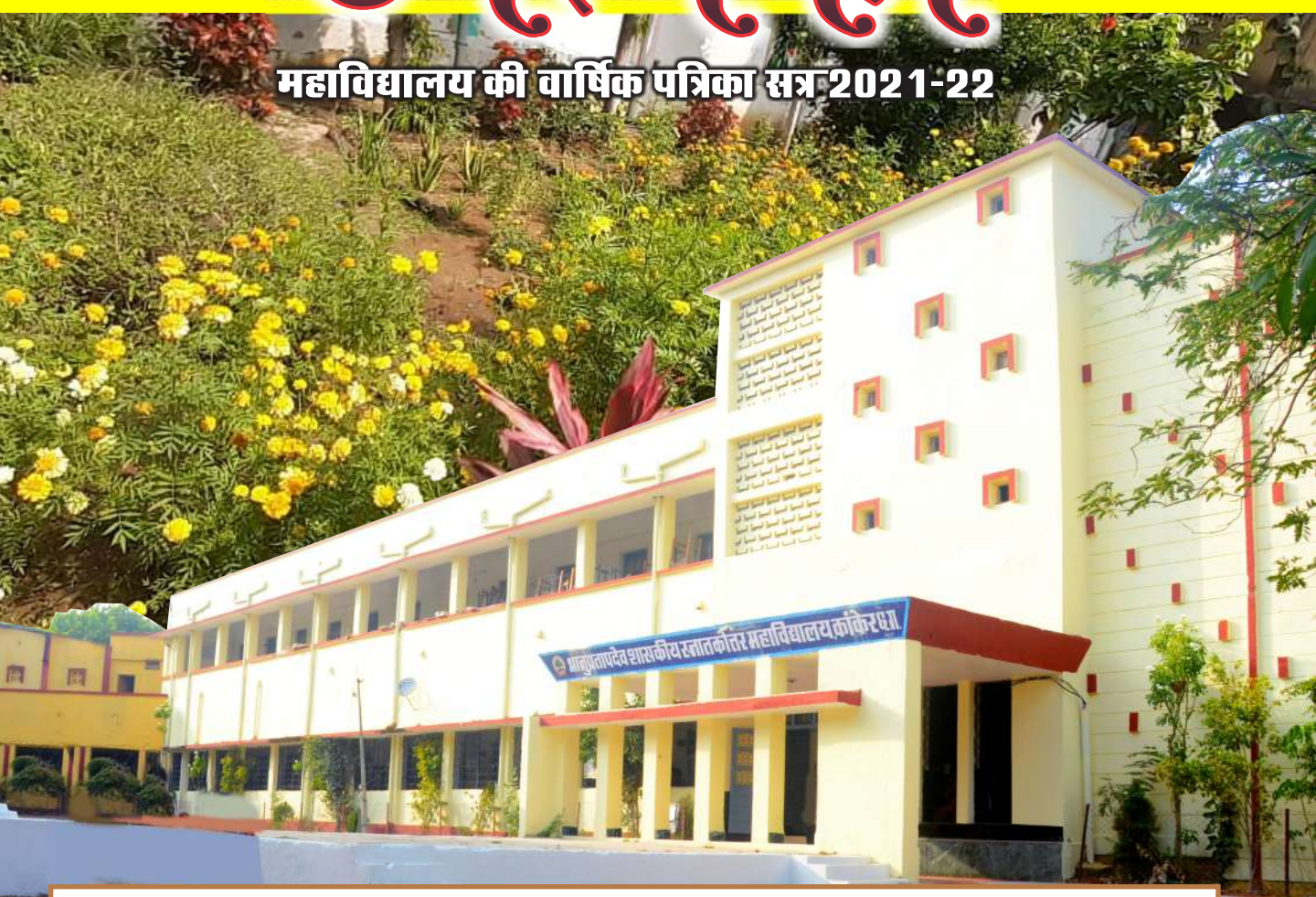

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर (छ.ग.)

उच्च शिक्षा के स्वप्नदृष्टा

जिनके हम ऋणी हैं...

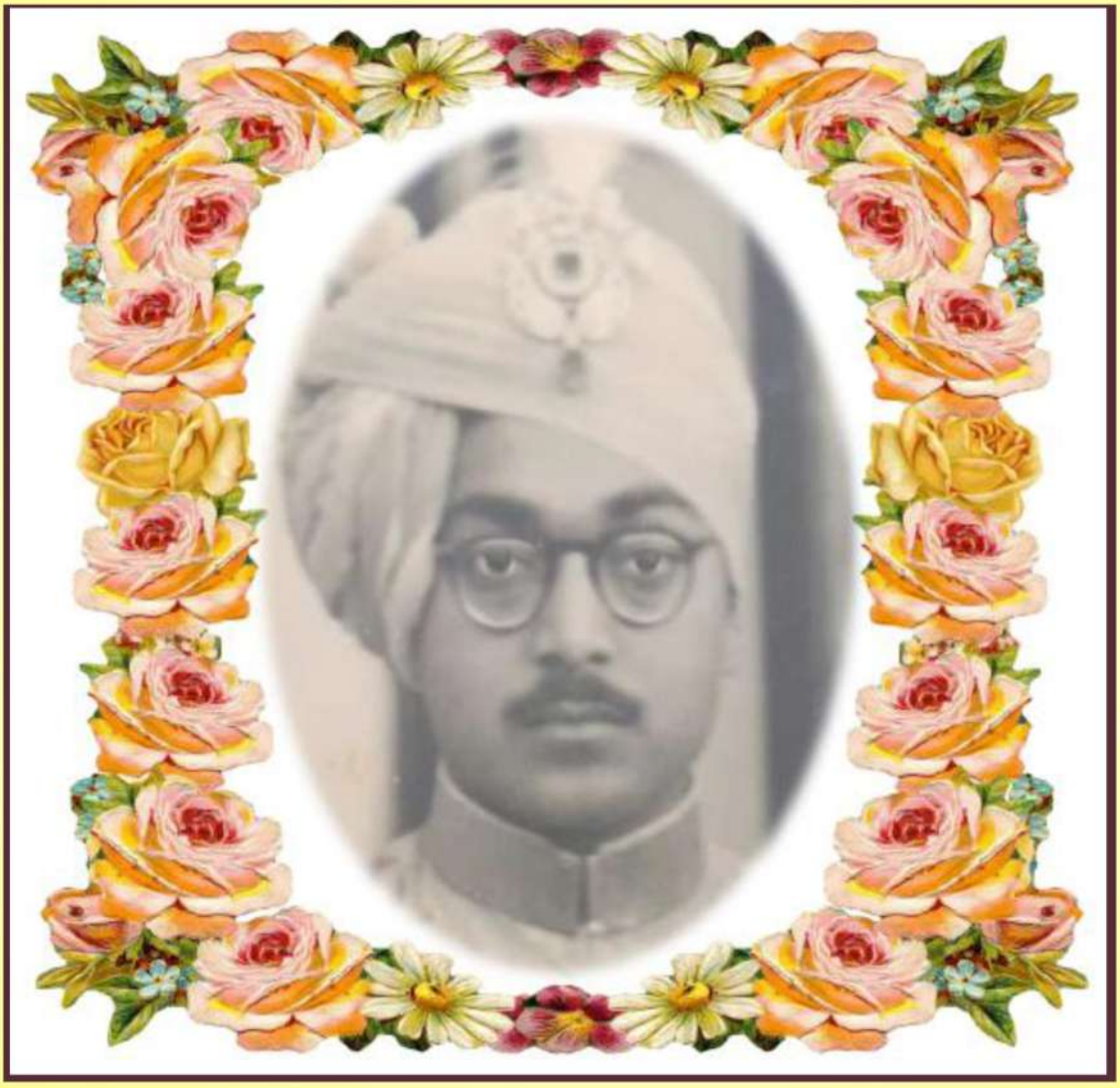

जन्म: १७ सितम्बर १९२२ मृत्यु: १४ अगस्त १९६९

स्व. महाराजाधिराज भानुप्रतापदेव

महाविद्यालय के संस्थापक

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर

जिला– उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)

(नैक द्वारा मूल्यांकित, बी–ग्रेड)

उपत्यका

सत्र– 2021–22

संरक्षक/ प्राचार्य

डॉ. सरला आत्राम

सह-संपादक

डॉ. बसंत नाग

डॉ. निधि भट्ट

संपादक

प्रो. नवरतन साव

डॉ. अर्चना सिंह

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर

जिला– उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)

(नैक द्वारा मूल्यांकित, बी–ग्रेड)

उपत्यका

सत्र- 2021-22

मार्गदर्शक मंडल

प्रो. पी. एस. गौर, डॉ. व्ही. के. रामटेके, डॉ. लक्ष्मी लेकाम

डॉ. स्वामी राम बंजारे, डॉ. एल. आर. सिन्हा, डॉ. डी. एल. पटेल

डॉ. आर. के. एस. ठाकुर, प्रो. शरद ठाकुर, सुश्री आर. कुलदीप

प्रो. एस. के. सिन्हा, प्रो. विजय बेसरा

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./487/पीआरओ/रास/22
रायपुर, दिनांक 26 अप्रैल 2022

–: संदेश :–

मुझे जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर, छत्तीसगढ़ द्वारा वार्षिक पत्रिका **'उपत्यका'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकाएं विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में संकलित शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक लेख निश्चित रूप से विद्यार्थियों में निहित रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होंगे।

वार्षिक पत्रिका **"उपत्यका"** के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001
ई–मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in

Do.No. .....465..... Date : 11/05/2022

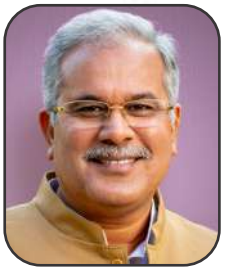

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका 'उपत्यका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

ऐसी पत्रिकाएं विद्यार्थियों की शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों एवं उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व तथा अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं। इस पत्रिका में संस्था के रचनाशील प्राध्यापकों तथा छात्र–छात्राओं की मौलिक रचनाएं प्राथमिकता से प्रकाशित की जानी चाहिए। पत्रिका से महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और विशेषताओं की जानकारियां भी लोगों तक पहुंचती हैं।

प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

(भूपेश बघेल)

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक- **M1-12**
महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर **492002** (छत्तीसगढ़)
फोन : **0771-2510316, 2221316**
नि. **D-1/2**, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : **0771-2881030**
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला-रायगढ़ कार्यालय: **7000477747**

क्रमांक 822/909 दिनांक 14/07/2022

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर, ज़िला – उत्तर बस्तर कांकेर द्वारा वार्षिक पत्रिका **"उपत्यका"** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में शिक्षा से जुड़े समसामयिक मुद्दों का समावेश किया गया है।

आशा है कि यह पत्रिका छात्र–छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक और उपयोगी साबित होगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(उमेश पटेल)

मोहन मण्डावी
संसद सदस्य
कांकेर लोकसभा (छत्तीसगढ़)

सदस्य :
• कृषि सम्बंधी स्थायी समिति
• कोल एवं माईन्स मंत्रालय संबंधी सलाहकार समिति

सत्यमेव जयते

निवास :
'मानस भवन' विश्वमित्र नगर, गोविन्दपुर,
कांकेर, जिला – उत्तर बस्तर कांकेर – 494 334
मोबाईल : 9425590879, 9013997092

दिल्ली निवास :
187, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली - 110001
E-mail : mandaviml16@gmail.com
mohan.mandavi@sansad.nic.in

क्रमांक: 2003

दिनांक: 30.4.22

संदेश

दण्डकारण्य के प्रवेश द्वार एवं साहित्यिक धानी कांकेर में उच्च शिक्षा के लिए सबसे पुरानी व ख्याति संस्था भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर से लगातार दूसरा वर्ष ''उपत्यका'' पत्रिका का प्रकाशन होना एक अच्छा प्रयास है, जिसके लिए महाविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है ।

बधाई के पात्र वे विद्यार्थी भी है जिनकी रचनाएँ प्रकाशित हो रही है । उम्मीद है ये विद्यार्थी आगे चलकर समाज को एक नई दिशा देने का कार्य करेंगे साथ ही कांकेर की साहित्यिक विरासत को आगे बढ़ाने में समर्थ भी होंगे ।

पुनश्च, पूरे महाविद्यालय परिवार को बधाई.....

(मोहन मण्डावी)

शिशुपाल शोरी
आई.ए.एस.(से.नि.)
संसदीय सचिव
छत्तीसगढ़ शासन
परिवहन, आवास एवं पर्यावरण,
वन, विधि एवं विधायी कार्य

निवास : ई-2, 42 सेक्टर-17, नया रायपुर
अटल नगर (छ.ग.)-492002
निवास : सी-2/2, सिविल लाईन, कांकेर,
जिला: उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)
पिन- 494334
मो.नं. : 95255-15022, 70001-59724
ई-मेल : ap.shori@gmail.com

''जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।'' **– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि, भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर (छत्तीसगढ़) में महाविद्यालयीन पत्रिका **''उपत्यका''** का प्रकाशन किया जा रहा है । निश्चित ही यह आप सभी के द्वारा साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। **''उपत्यका''** इसी तरह हिन्दी साहित्य को नई ऊंचाईं देती रहे, इस प्रलेख में शामिल समस्त साहित्यकारों को सादर बधाई।

''वास्तव में, जीवन साहित्य का आधार है– चाहे वह व्यक्ति–विशेष का हो, परिवार का हो, समाज का हो, राज्य का हो, राष्ट्र का हो अथवा सम्पूर्ण विश्व का। जीवन के बिना साहित्य की कल्पना भी असंभव है और साहित्य की समृद्धि के बिना जीवन एवं समाज का सम्यक् विकास संभव नहीं हैं।''

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आज के आपा–धापी पूर्ण जीवन को अनन्त तक पहुंचाने में यह महाविद्यालयीन पत्रिका (उपत्यका) कालजयी साबित होगी। उपत्यका पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

(शिशुपाल शोरी)

जितेन्द्र सिंह ठाकुर
अध्यक्ष
महाविद्यालय जनभागीदारी, समिति
भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)

निवास :
कचहरी के पास
कांकेर (छ.ग.)

दिनांक : 26/6/2022

-: संदेश :-

पत्रिका ''उपत्यका'' के प्रकाशन पर संपादक मण्डल, सभी लेखकों एवं सृजनशील व्यक्तियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं...

आशा है कि महाविद्यालय पत्रिका ''उपत्यका'' का यह अंक विद्यार्थियों सहित साहित्य प्रेमियों के लिए संग्रहणीय होगा और युवाजनों को प्रेरणा भी देगा।

शुभकामनाओं सहित.....

जितेन्द्र सिंह ठाकुर
अध्यक्ष

Shaheed Mahendra Karma Vishwavidyalaya, Bastar
Jagdalpur, District-Bastar, (Chhattisgarh, India) 494001

Dr. Shailendra Kumar Singh
Vice-Chancellor
(M.A., M.Phil., Ph.D. Statistics &
Ex Vice-Chancellor, MATS Uni. Raipur (C.G.))

क्रमांक 3002 / V.C. / नि.स. / 2022 जगदलपुर, दिनांक 29.04.2022

–: संदेश :–

अत्यंत हर्ष का विषय है कि छत्तीसगढ़ प्रदेश के उत्तर बस्तर कांकेर जिले के अग्रणी महाविद्यालय, भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका **"उपत्यका"** का प्रकाशन करने जा रहा है। इस प्रकार का प्रकाशन किसी भी शैक्षणिक संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों को जनमानस तक पहुंचाने का एक अच्छा माध्यम है। साथ ही विद्यार्थियों के चिंतन, सृजनात्मक क्षमताओं एवं प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति का एक शसक्त माध्यम भी है। इस कारण महाविद्यालया द्वारा किया जा रहा प्रयास सराहनीय है।

वार्षिक पत्रिका **"उपत्यका"** के प्रकाशन के साथ–साथ इसके उद्देश्यपरक होने के लिये मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

प्रोफे. (डॉ.) शैलेन्द्र कुमार सिंह
कुलपति

दूरभाष – 07868–241222 (का.) 222288 (नि.)
फैक्स – 07868–241801 (का.) 222960 (नि.)
कार्यालय कलेक्टर एवं जिलादण्डाधिकारी,
जिला उत्तर बस्तर कांकेर, छत्तीसगढ़.
E-mail - kanker.cg@nic.in

अर्द्ध शासकीय पत्र क्रमांक – 864
कांकेर, दिनांक – 24.06.2022

चंदन कुमार
भा.प्र.से.
कलेक्टर

❖ शुभकामना संदेश ❖

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर द्वारा महाविद्यालयीन प्रत्रिका "उपत्यका" 2022 का प्रकाशन किया जा रहा है ।

पत्रिका का प्रकाशन विद्यार्थियों के लिए एक सुअवसर है, जिससे वे अपने रचनात्मक क्षमता का विस्तार एवं साहित्य के विविध विधाओं के माध्यम से अपने सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त कर सकेंगे । यह पत्रिका महाविद्यालय में उनकी स्मृतियों को बनाए रखेगी और उन्हें व्यक्तिगत रूप से गौरवान्वित भी करेगी ।

"उपत्यका" के समस्त रचनाकारों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं एवं महाविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ ।

(चंदन कुमार)
कलेक्टर,
जिला उत्तर बस्तर कांकेर

A Message full of Good Wishes

Principal Dr. Sarla Atram, Faculty, Staff and Students of Bhanu Pratap Deo Government P. G. College, Kanker

I am privileged to be writing this message for you and am grateful to Dr. Atram and the Faculty editor of Upatyaka for inviting me to do so. This has been a year of renewing my association with your college, which was founded by my grandfather Maharajadhiraj Bhanu Pratap Deo of Kanker, the last ruling chief of the princely state of Kanker (regnal years 1925-47, deceased 1969); and this is one more step in that direction.

| was pleasantly surprised and honored to be invited to the college in December 2021 to deliver an online lecture on the 'The Life and Public Service of Maharajadhiraj Bhanu Pratap Deo of Kanker' as part of 'Personality Development and Career Guidance Value-added Course', by Dr. Archana Singh. | also found myself thinking about the college during my conversations with Mrs. Jahanvee Sinha, our dear former student from Delhi University, who has also joined to teach in the college this year. Though my grandfather's visionary efforts had led to the founding of the college, and my siblings and | have been working in the field of education for a long time, this was the first time that | had associated with the college.

Even though there is regret at all the years of lost opportunities where my family's interaction with the college would have been mutually beneficial, there is also happiness at being able to finally connect and the possibilities of contributing to the college's potential in the future.

Being historically a pioneering and premier institution of higher learning in central India, it has held its own against other institutions in more advanced regions of Raipur to the north and Bastar to the south. This college of the region of Kanker, which was built on the philosophy of knowledge for all, fearless and open learning, and education for service to society, must constantly nurture these roots.

On behalf of the royal family of Kanker, would like to offer my best wishes for the continued growth and well-being of the college and its denizens; and once again call upon the college community to dedicate itself with renewed fervour to the making of humane citizens of the world at a time when much is broken all around us.

You are all also invited to visit us at Kanker Palace, in whose compound the college was first started, and where perhaps we might yet be able to reconnect you with a few more aspects of the college's history and vision.

Maharajadhiraj Dr. Aditya Pratap Deo
(Ph. D., Emory University, Atlanta, USA)
Department of History, St Stephen's College, University of Delhi, Delhi-7
Former Fellow, Indian Institute of Advanced Study, Shimla
E-mail : adityakanker@gmail.com

आभार , स्वीकृति एवं समर्पण....

''उपत्यका'' का यह अंक आपके हाथों सौंपते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है, महाविद्यालय के इतिहास में संभवत: यह पहला अवसर है जब लगातार दूसरे वर्ष महाविद्यालयीन पत्रिका ''उपत्यका'' का प्रकाशन हो रहा है । इसके पीछे महत्वपूर्ण भूमिका रही है, प्राचार्य डॉ. सरला आत्राम के सकारात्मक सोच एवं उनके क्रियाशील व्यक्तित्व का जिसके कारण ही हमें इस कठिन कार्य को पूर्ण करने में सफलता मिली है ।

इसके अलावा महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकों का मार्गदर्शन, कर्मचारियों के सहयोग एवं साहित्यिक अभिरूचि वाले विद्यार्थियों के रचनात्मक सहभागिता के कारण ही हमें इस महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम देने में सफलता मिली है ।

अंत में हम उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग से ही इस पत्रिका ''उपत्यका'' का प्रकाशन संभव हो पाया.....

– संपादक मण्डल

प्राचार्य की कलम से...

भानुप्रताप देव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर छ.ग. बस्तर संभाग में महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र के रूप में स्थापित हो रहा है। वर्तमान सत्र में लगभग 3500 विद्यार्थी विज्ञान, कला, वाणिज्य एवं विधि संकायों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विज्ञान एवं कला संकाय के मुख्य विषयों के अतिरिक्त सूक्ष्म जीवविज्ञान, मानव विज्ञान जैसे विषय इस महाविद्यालय में संचालित हैं इसके अतिरिक्त महाविद्यालय स्नातक स्तर पर अन्य विषयों सहित व्यवसायिक विषयों एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान एवं कला के शेष विषयों को प्रारंभ किये जाने का प्रयास कर रहा है। शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, जगदलपुर, बस्तर द्वारा इस महाविद्यालय को 05 विषयों में शोध केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। महाविद्यालय में अकादमिक संसाधन पर्याप्त हैं किन्तु महाविद्यालय के उन्नयन के लिये और अधिक मानव संसाधन एवं अधोसंसाधनों की आवश्यकता है जिसके लिये शासन स्तर पर और महाविद्यालयीन जनभागीदारी समिति के सहयोग से उपलब्ध कराये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

आगामी सत्र में महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यानन परिषद बैगलूरू से द्वितीय चक्र का मूल्यांकन कराया जाना है। इस हेतु महाविद्यालय परिवार बड़े लगन से प्रयास कर रहा है। यह महाविद्यालय का अकादमिक मूल्यॉकन तथा विद्यार्थियों को महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध सुविधाओं का विवेचन कर मूल्यांकन होगा जो महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को आत्मावलोकन करने को प्रेरित करेगा साथ ही समाज के प्रति हमारे दायित्व को रेखांकित भी करेगा।

मानव हमेशा सृजनशील रहा है उसकी सृजनशीलता किसी भी विधा में हो सकती है वह कला में, कविता में, लेखों में, रंग में, गायन में, वादन आदि आदि किसी में भी हो सकती है। यह विधा हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों में भी है। उसे उचित स्थान प्रदान करने के लिये महाविद्यालय द्वारा **''उपत्यका''** का प्रकाशन किया जा रहा है; जिसमें हमारे विद्यार्थियों द्वारा अपनी अभिरूचि के अनुरूप सांस्कृतिक, साहित्यिक, लोक–रंग, लोक–कला, लोक–साहित्य एवं महाविद्यालय की गतिविधियों आदि का संकलन महाविद्यालय की पत्रिका **''उपत्यका''** के रूप में प्रस्तुत है। यह अंक विद्यार्थियों के प्रयासों का परिणाम है जो आप जैसे सुधिजन पाठकों के हाथ में है।

महर्षि कंक की तपोभूमि कांकेर नगर अनेक साहित्य मनीषीयों की भूमि रही है और आज भी साहित्य की सेवा करने वाले अनेक विद्वान भी हैं। भूआकृतिक रूप से यह नगर अपने चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है **''उपत्यका''** नाम भी यह सार्थक करता है इस पत्रिका के माध्यम द्वारा।

अंत में, समस्त विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिये हार्दिक शुभकामनाएं वे उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर मानवता की सेवा करें और महाविद्यालय का, समाज का, प्रदेश का और राष्ट्र को गौरवांन्वित करें। जिन सृजनशील विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग दिया वे सभी बधाई के पात्र हैं। संपादक मंडल द्वारा अथक प्रयास जिससे यह संस्करण हम आप के समक्ष है उन्हें बहुत बहुत बधाई और साधुवाद..

डॉ. सरला आत्राम
प्राचार्य

महाविद्यालय के सम्माननीय जनभागीदारी सदस्यों की सूची

श्री जितेन्द्र सिंह ठाकुर
अध्यक्ष
9425259059

श्री चंदन कुमार I.A.S.
कलेक्टर, कांकेर
पदेन उपाध्यक्ष

दिनेश यादव
मुख्य नगर पालिका अधिकारी कांकेर
सदस्य

श्री योगेश कुमार साहू
(सांसद प्रतिनिधि)
सदस्य
9691903355

श्री सुनील गोस्वामी
(विधायक प्रतिनिधि)
सदस्य
9424274258

श्री राजकुमार पंजाबी
सदस्य
9425262051

श्री सोमेश सोनी,
एल्डरमेन
सदस्य
9893800787

श्री ध्यानचंद
केवलरमानी
सदस्य
9425259221

श्री याशिन कराणी
सदस्य
9425262168

श्री हृदय राम शोरी
सदस्य
8839791078

श्री रमेश गौतम
सदस्य
9425262167

श्रीमती सोनल वर्मा
सदस्य
8889042698

श्री संजीव (संजू)
अहिरवार, पूर्व पार्षद
सदस्य
9755631700

श्री कुमान राम
गजबल्ला
सदस्य
7677209288

श्रीमती पदमा
चन्द्राकर
सदस्य
9424274628

शास. कन्या उ.मा.वि.कांकेर
प्राचार्य,
सदस्य

श्री कौशल किशोर
उके, प्राचार्य
सदस्य
9826195307

श्री आर. पी. एस.
ठाकुर, प्राचार्य
सदस्य
9424294747

श्रीमती मीरा आर्ची
चौहान
सदस्य
9406108146

प्रो. पी. एस. गौर,
विभागाध्यक्ष भूगर्भ शास्त्र,
सदस्य
7694979525

प्रो. शरद ठाकुर,
विभागाध्यक्ष इतिहास,
सदस्य
9407031333

डॉ. सरला आत्राम
प्राचार्य
पदेन सचिव
9826369585

सम्पादकीय

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार,
चकित रहता शिशु सा नादान,
X X X X
न जाने नक्षत्रो से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन ।।

हिंदी साहित्य के आधार स्तंभ एवं सुप्रसिद्ध प्रकृति के सुमधुर गायक कवि गुसांई दत्त उर्फ सुमित्रानंदन पंत की उक्त पंक्तियां बहुतों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होती है, जो कहीं न कहीं सर्जनात्मकता की ओर पहला कदम बढ़ाने में हमें प्रेरित भी करती है । लेकिन महर्षि कंक की तपोभूमि एवं प्राचीन दंडक अरण्य के नाम से ख्याति प्राप्त बस्तर संभाग के प्रवेश द्वार एवं साहित्यिकता से लवरेज कांकेर नगरी अपने अतीत से ही किसी परिचय का मोहताज नहीं रही है ।

प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण एवं साल वनों से अच्छादित सुरम्य एवं शांत वातावरण सभी व्यक्तियों को अपने आप से बतियाने को प्रेरित करते रहा है । साल सहित विभिन्न प्रजाति के असमान को गले लगाते प्रतीत होते ऊंचे ऊंचे वृक्ष, हरियाली का चादर ओढ़े वसुंधरा का मनोहारी रूप एवं टेढ़े मेढ़े सर्पिलाकार घाटी साहित्यिक प्रेमियों को बरबस ही अपनी और खींचते रहते हैं । संभवतः यही वे मूल कारण हैं जिनकी बदौलत कांकेर नगरी की साहित्यिक थाती कभी रीति नहीं रही है । साथ ही साथ मां शारदे की असीम कृपा भी बरसती है ।

इस पत्रिका "**उपत्यका**" का उद्देश्य भी साहित्य साधकों की एक ऐसा श्रृंखला तैयार करना है, जो भविष्य में साहित्य की सुगंध को समाज में बिखेरने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन पूरे दम–खम के साथ कर सकें । इसके अलावा यह पत्रिका साहित्यकारों की नई पौधें भी तैयार करने के लिए उन्हें मंच प्रदान करना भी है, जिससे उनकी कल्पनाओं को एक "उड़ान" मिल सके और उनकी रचनाएं भी परिभाषित होती जाएं । इसके अलावा हम अपने आसपास के गुमनाम ऐतिहासिक एवं नैसर्गिव स्थलों को सामने लाकर समाज से उनका परिचय कराना भी है । जिससे हमारी आगे आने वाली पीढ़ी अपनी गौरवशाली धरोहरों से परिचित होकर उनके संरक्षण संवर्धन हेतु सार्थक प्रयास कर सके ।

अगर हम अपने इस छोटे–छोटे गिलहरी प्रयास में सफल हो जाते हैं तो निश्चित जानिए कांकेर के साहित्यिक जगत में यह महत्वपूर्ण कदम साबित होगा, जिससे भविष्य की दिशा और दशा ही तय नहीं होगी वरन् यहां के एक रचना धर्मिता की परंपरा को अक्षुण बनाए रखने में सहायक सिद्ध होंगे ।

अंत में उन नई साहित्यिक पौधों को बधाई एवं शुभकामनाएं जिनकी रचनाएं प्रकाशित हो रही है....

–संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ क्र.
1.	पर्यावरण और हमारा जीवन	डॉ. स्वामी राम बंजारे 'सरल'	01
2.	कांकेर महाविद्यालय का इतिहास	स्व. (प्रो.) डी.के.एस.ठाकुर	03
3.	विरासत	डॉ. बसंत नाग	05
4.	The Voice	Dr. Archana Singh	06
5	गोदना की परम्परा	डॉ. बसंत नाग/प्रो. नवरतन साव	07
6	आयी दीवाली	संतराम अहरवाल	09
7	भारत का स्वर्णिम अतीत	डॉ. पूनम साहू	10
8	Be Like A Bird	Prof. Patras Kindo	12
9	मन की बात	डॉ. सीमा परिहार	13
10	जीवन आधार-गौमाता	डॉ. आभा श्रीवास्तव	15
11	Happiness is free	Mrs. Priyanka Jaiswal	16
12	Teaching English as a 'Skill' Rather than a 'Subject'	Dr. Nidhi Bhatt	17
13	कोरोना की दूसरी लहर	प्रताप चौधरी	18
14	विधि : संभावनाएं	प्रो. विजय बेसरा	19
15	अमर शहीदों का चारण	टिकेश्वर कुमार कोरेटी	20
16	स्वामी विवेकानन्द	वैशाली बघेल	21
17	बाल-विवाह	अंजली जैन	22
18	बच्चा था तो सच्चा था	नागेश कुमार यादव	23
19	ऐतिहासिक धरोहर :गढ़िया पहाड़	टीकम औरसा	24
20	हम सब जिम्मेदार हैं	गायत्री नागवंशी	26
21	ग्राम-बेवरती का बालाजी मंदिर	युवराज सिंह भारद्वाज	26
22	नई सदी में स्त्री सुरक्षा के प्रश्न	कविता जैन	27
23	खजुराहो मंदिर	मीनाक्षी साहू	29
24	एक कविता हर माँ के नाम	कु. सतवन्तीन नरेटी	31
25	मैं मजदूर हूँ	कु. पूर्णिमा कोरेटी	31
26	कोविड-19 में विद्यार्थी जीवन	विनीता तेता	32
27	प्रेरणा गीत	अंजली जैन	33
28	My Journey:Psychology and Music	Ms. Garima Sharma	34
29	Hide's Abide	Jiya Mahavish Ali	36
30	My College	Devendra Prakash Nishad	37
31	My Best Friends	Kriti Sonwani	38
32	मेरे सपनों का छत्तीसगढ़	कु. ओमेश्वरी सोनवानी	39
33	आओ पर्यावरण बचाएं	कु. रितेश्वरी नेताम	41
34	स्वतंत्रता की लड़ाई	कु. रेणुका गावडे	42
35	जीवन की सांस प्रदूषण मुक्त पर्यावरण (ग्लोबल वार्मिंग पर विशेष)	कु. प्रियंका जैन	43

अनुक्रमणिका.....

क्रमांक	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ क्र.
36	मंजिल	अभिषेक कुमार टेकाम	44
37	हमारी पृथ्वी	कु. गनेश्वरी सलाम	45
38	कापसी का ऐतिहासिक मंदिर	लक्ष्मीकांत साहू	46
39	महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार कारण एवं निवारण	सोनम शर्मा	47
40	रिसेवाड़ा का मंदिर	संजीव कुमार	48
41	कोरोना वायरस	राकेश कुमार	49
42	लॉक डाउन	कु. आरती जैन	50
43	गौठान योजना	लोमेन्द्र यादव	51
44	ग्लोबल वार्मिंग	वैशाली बघेल	52
45	संघर्ष से सफलता की कहानी	प्रवीण कोरेटी	53
46	छत्तीसगढ़ महतारी	कु. गनेश्वरी सलाम	54
47	विवाह संस्कार	कु. रमिला सलाम	55
48	निराला बगीचा	कु. वैशाली बघेल	56
49	गीत (राष्ट्रीय एकता शिविर के अनुभव पर आधारित)	कु. विनिता तेता	57
प्रतिवेदन :			
50	समाजशास्त्र विभाग	डॉ. व्ही.के. रामटेके	58
51	राजनीति शास्त्र विभाग	डॉ. लक्ष्मी लेकाम	60
52	हिंदी विभाग	डॉ. एस. आर. बंजारे	61
53	अर्थशास्त्र विभाग	डॉ. एल. आर. सिन्हा	63
54	भूगोल विभाग	डॉ. डी. एल. पटेल	64
55	इतिहास विभाग	प्रो. शरद ठाकुर	66
56	Department of English	Dr. Archana Singh	67
57	विधि विभाग	प्रो. विजय बेसरा	69
58	वाणिज्य विभाग	डॉ. आर. के. एस. ठाकुर	70
59	भूविज्ञान विभाग	प्रो. पी. एस. गौर	71
60	वनस्पति शास्त्र विभाग	प्रो. आर. कुलदीप	74
61	रसायन शास्त्र विभाग	प्रो. एस. के. सिन्हा	75
62	Department of Zoology	Pro. Sumita Pandey	77
63	Department of Microbiology	Dr. Nelson Xess	78
64	क्रीड़ा विभाग	श्री सुधीर सोवानी	79
65	राष्ट्रीय सेवा योजना (पुरूष इकाई)	प्रो. बी. एस. कंवर	80
66	राष्ट्रीय सेवा योजना (महिला इकाई)	प्रो. अलका केरकेट्टा	82
67	महाविद्यालय के रक्तदाता विद्यार्थियों की सूची		83
70	महाविद्यालय परिवार के सदस्यों की सूची	महाविद्यालयीन कार्यालय	84

पर्यावरण और हमारा जीवन

– डॉ. स्वामी राम बंजारे' सरल'
विभागाध्यक्ष (हिंदी)

"पर्यावरण" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परि+आवरण । ' परि' अर्थात अर्थात चारों ओर और ' आवरण' का अर्थ है घिरे हुए अर्थात हमारे चारों ओर फैले आवरण को ही पर्यावरण कहते हैं । इसमें हवा, पानी ,मिट्टी ,पेड़ ,पहाड़ ,झरने, नदी ,नाले आदि सभी आते हैं । मानव, वनस्पति, पशु , पक्षी सहित सभी जैविक और अजैविक घटकों के समूह को पर्यावरण कहते हैं।

मनुष्य जीवन में पर्यावरण का विशेष महत्व है । हमारे देश में पर्वत, नदी, पहाड़, वायु,आग ,ग्रह ,नक्षत्र ,पेड़ पौधे यह सभी कहीं न कहीं मानव जीवन से जुड़े हुए हैं । मनुष्य एक पल भी इसके बगैर नहीं रह सकता। यह हरे– भरे पेड़ – पौधे हमारे जीवन का अभिन्न अंग है । प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है । जल ,थल ,वायु ,अग्नि ,आकाश इन्हीं पांच तत्वों से ही मनुष्य का जीवन है और जीवन समाप्त होने पर इन्हीं में विलीन हो जाता है।

प्राचीन काल में मनुष्य अपने चारों ओर की सुंदर प्रकृति को सहेज कर रखता था ।मनुष्य का जीवन बहुत सीधा–साधा और सरल था ।वह अपनी पूरी मेहनत और लगन से काम करता था और साथ ही अपने आसपास के पेड़ पौधों को संभाल कर ,सहेज कर रखता था ,पूरी लगन से उनकी देखभाल करता था । इस कारण उसके चारों ओर एक सुंदर और स्वस्थ वातावरण रहता था। धीरे – धीरे मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आया। कठिन परिश्रम से मनुष्य ने अपने जीवन में बहुत प्रगति की, धीरे–धीरे समय बदला और मनुष्य ने अपने जीवन में नित नए आविष्कारों से ना जाने कितनी उपलब्धियां हासिल कर ली । बड़ी–बड़ी गगनचुंबी इमारतें, बड़ी–बड़ी फैक्ट्रियां, कल–कारखानें, मिलें खड़ी कर ली । इन सब उपलब्धियों के साथ जाने अनजाने वह प्रकृति के साथ छेड़छाड़ भी करते गया और हमारी प्रकृति को, पर्यावरण को नुकसान पहुंचा जिसका उसे अहसास तक नहीं है। इसका हानिकारक प्रभाव मानव जीवन पर पड़ रहा है जिससे वह अनभिज्ञ है या फिर समझना नहीं चाहता । फैक्ट्री एवं कल– कारखानों से जो धुआं निकल रहा है और उसके खराब रासायनिक तत्व जो नदी, नालों, जलाशयों में डाल दिए जाते हैं उसे जल प्रदूषण और धुंए से निकलने वाली विषैली गैस हवा को प्रदूषित कर रहे हैं। इसी प्रकार यातायात के साधनों से जो वायु प्रदूषण फैल रहा है वह एक चिंता का विषय बन चुका है । लोगों के स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा है , लोग स्वास्थ्य संबंधी और अन्य बीमारी के शिकार हो रहे हैं यह स्थिति अत्यंत घातक है।

आज कल धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है इसे ' ग्लोबल वार्मिंग' कहा जाता है। मनुष्य को इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। वैज्ञानिक गतिविधियों के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है ,कभी औद्योगीकरण के नाम पर तो कभी शहरीकरण के नाम पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हुई है । बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण संकट गहराया है ।

आज मानव ने प्रकृति पर विजय पा ली है ,यह विकास की दृष्टि से तो ठीक है परंतु ऐसा करके मानव ने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। विज्ञान की मदद से मानव चाँद पर पहुँच गया है लेकिन आधुनिकता के नाम पर उसने प्रकृति से छेड़छाड़ की है उसका खामियाजा तो हम मानवों को ही भोगना पड़ेगा, अगर समय रहते नहीं चेते और पर्यावरण को बचाने के बारे में नहीं सोचा तो इसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं। पूरे सौरमंडल में केवल हमारी पृथ्वी पर ही जीवन संभव है हमें समय रहते पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त करके सुरक्षित कर लेना है। प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए हम अपने आसपास जहां संभव हो वृक्षारोपण करें । हमें अपने बच्चों को भी जागरूक करना चाहिए। हम अपने बच्चों के जन्मदिन पर उनके हाथों से एक छोटा सा पौधा लगवा सकते हैं और अपनी प्रकृति की महत्ता को समझा सकते हैं ।अपने हाथों से एक पौधा लगाकर बच्चे को बहुत खुशी होगी, धीरे – धीरे पेड़ पौधों का हमारे जीवन में क्या महत्व है वह भी समझेगा।

पर्यावरण को बचाने के लिए हमें अपने आस – पास की साफ–सफाई का भी खास ध्यान रखना चाहिए। आसपास के गंदगी से अनेक बीमारियां फैलती हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। प्लास्टिक की थैली आदि से जो गंदगी और प्रदूषण फैल रहा है वह एक चिंता का विषय बन चुका है इससे हमारे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंच रहा है। इस ओर प्रत्येक नागरिक को सजग रहना चाहिए। देश में चलाए जा रहे स्वच्छता अभियान ने इस दिशा में एक क्रांति ला दी है, यह सतत जारी रहना चाहिए। प्रत्येक नागरिक का फर्ज बनता है कि वह इस अभियान से जुड़े तभी यह संभव है कि हम एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में रह पाएंगे।

आज की इस आधुनिकता में प्रदूषण के कारण पृथ्वी प्रदूषित हो रही है इसके परिणाम स्वरूप एक समय ऐसा आएगा जब पृथ्वी पर मानव जीवन असंभव हो जाएगा। प्रकृति को बचाना हम सब की सामूहिक जवाबदारी है, आइए इसे हरा–भरा बनाने का संकल्प लें और

01. घर की खाली जमीन, बालकनी और छत पर पौधे लगाएं।
02. ऑर्गेनिक खाद ,गोबर खाद ,जैविक खाद का उपयोग करें।
03. कपड़े के बने झोले, थैले लेकर निकलें, पॉलीथिन, प्लास्टिक का उपयोग ना करें।
04. खिड़की से पर्दा हटाएं, दिन में सूरज की रोशनी से काम चलाएं।
05. बिजली, पानी की खपत कम करें।
06. नई कृषि पद्धतियों ' ड्रिप सिस्टम' का उपयोग करें।
07. हम अनावश्यक (बिना जरूरत के)पेड़ पौधों को ना काटें और ना दूसरों को काटने दें।

यदि हमारी प्रकृति हरी– भरी रहेगी तो हमारी वायु भी स्वच्छ रहेगी और लोगों को सांस लेने के लिए शुद्ध ताजी हवा उपलब्ध हो सकेगी। पेड़ – पौधे कार्बन डाई ऑक्साइड का अवशोषण कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। इसी प्राणवायु पर हमारा जीवन टिका है। मानव जीवन अमूल्य है और इस पर खुशियों का रंग भरने वाली यह प्रकृति की सुंदरता अमूल्य निधि है ,इसके बिना मानव जीवन बेरंग और सूखे मरुस्थल से अधिक कुछ नहीं है। आईए इन नारों के साथ कदमताल करें –

01. पर्यावरण का रखें हम ध्यान, तभी बनेगा देश महान।
02. हम सब का एक ही नारा, स्वच्छ सुंदर हो विश्व हमारा।
03. आने वाली पीढ़ी है बुद्धिमान और प्यारी,
    पर्यावरण की रक्षा है हम सबकी जिम्मेदारी।
04. पेड़–पौधों को ना करो नष्ट, वरना सांस लेने में होगा कष्ट।
05. वृक्ष, पानी और स्वच्छ हवा, यह तीनों जीवन की अनमोल दवा।

सुविचार

आप अपनी तुलना दूसरों से ना करें क्योंकि सूरज और चन्द्रमा दोनों ही चमकते हैं, लेकिन अपने–अपने समय पर।

गुरू और समुद्र दोनों ही गहरे हैं पर दोनों में एक ही फर्क है समुद्र की गहराई में इंसान डूब जाता है और गुरू की गहराई में तर जाता है।

कांकेर महाविद्यालय का इतिहास

स्व. (प्रो.) डी.के.एस. ठाकुर
पूर्व विभागाध्यक्ष अंग्रेजी

आदिवासी बहुल बस्तर जिला के उत्तरी अंचल में स्थित कांकेर नगर इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जनश्रुति व लोक मान्यता के आधार पर कंक ऋषि की तपस्या भूमि होने के कारण इसका नाम कांकेर पड़ा। वाल्मीकि रामायण में गोदावरी अंचल पर्यन्त सम्पूर्ण क्षेत्र को 'महाकान्तार' नाम से अभिहित किया गया है। दण्ड नामक राक्षस शासक का राज्य इस क्षेत्र में था अतः इसे 'दण्डकवन' अथवा दण्डकारण्य भी कहा गया । पौराणिक सन्दर्भ के साक्ष्य से पहले यहॉ समृद्ध राज्य था किन्तु इस राज्य के शासक दण्ड के निरंकुश आचरण से क्रुद्ध होकर अगस्त्य ऋषि ने इस भू–भाग को घोर जंगल में बदल जाने का श्राप दिया था। उनके श्राप के प्रभाव से ही यह क्षेत्र निबिड़ वन में परिवर्तित हो गया। विष्णु पुराण में जिस 'नंन्दिराज' पर्वत का उल्लेख है उसे ही बैलाडीला कहा जाता है। कांकेर से पूर्व दिशा की ओर 56 कि.मी. की दूरी पर स्थित सिहावा के पास ही ऋषि ऋष्यश्रृंग (श्रृंगी ऋषि) का आश्रम प्रसिद्ध है। पौराणिक साक्ष्य के अनुसार इसी ऋषि ने महाराज दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का जन्म हुआ। दूसरी मान्यता यह भी है कि कांकेर के समीपस्थ पहाड़ों की तलहटी में कॉकेय नामक जड़ी, जिसके काढ़े का उपयोग प्रसव के उपरान्त जच्चा एवं पारिवारिक जन करते थे, बहुलतायत से उत्पन्न होती थी और कांकेर नामकरण का एक आधार यह भी है। इन मान्यताओं का आधार जो भी हो कांकेर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि युक्त नगर है तथा भारतीय संघ में विलय के पूर्व तक इसे देशी रियासत का दर्जा प्राप्त था।

उच्चशिक्षा के प्रसार प्रचार की दिशा में एक उल्लेखनीय योगदान तब प्राप्त हुआ जब वर्षों पूर्व 4 जुलाई 1962 में यहॉ उपाधि महाविद्यालय की स्थापना हुई। बस्तर शिक्षा समिति द्वारा स्थापित यह महाविद्यालय बस्तर जिले में दूसरा महाविद्यालय है जिसकी स्थापना का संपूर्ण एवं एकमात्र श्रेय कांकेर रियासत के भूतपूर्व शासक एवं तत्कालीन विधायक महाराजाधिराज भानुप्रतापदेव को है, जिन्होंने अपने राजमहल का पार्श्व प्रकोष्ठ महाविद्यालय को उपलब्ध कराया। यही नहीं अपितु अपने निजी ग्रंथागार से अमूल्य ग्रंथ उन्होंने महाविद्यालय पुस्तकालय को भेंट स्वरूप प्रदान किया। इतिहास एवं अंग्रेजी साहित्य के इन अमूल्य ग्रंथों ने महाविद्यालयीन पुस्तकालय को एक गौरवपूर्ण स्थान दिया है।

सन् 1962 में सम्पूर्ण बस्तर जिला में मात्र दो महाविद्यालय थे। कांकेर के अशासकीय महाविद्यालय के अतिरिक्त दूसरा शासकीय महाविद्यालय बस्तर जिला के मुख्यालय जगदलपुर में था जो कांकेर से दक्षिण की ओर 156 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कांकेर से उत्तर की ओर रायपुर 139 किमी. की दूरी पर स्थित है।

महाविद्यालय के संस्थापक प्राचार्य श्री बसंत लाल झा एवं महाविद्यालय संचालन समिति के सचिव श्री कृष्ण कुमार झा ने एक विशेष परिकल्पना के तहत् इस महाविद्यालय का नाम

''ग्राम्य भारती महाविद्यालय'' रखा था। शिक्षा समिति की योजना थी कि ग्राम्य भारती महाविद्यालय को 'रूरल इन्स्टीट्यूट' का स्वरूप कालान्तर में दिया जाए।

उन दिनों शासकीय महाविद्यालय जगदलपुर में भूगोल एवं समाजशास्त्र विषयों में अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था नहीं थी। ग्राम्य भारती महाविद्यालय कांकेर ने इस कमी को पूरा करके स्तुत्य योगदान दिया। कांकेर के नागरिकों की मांग और इच्छा को मद्देनजर रखते हुए महाविद्यालय के स्थापना वर्ष में ही कॉलेज में वाणिज्य निकाय प्रारंभ किया गया। कांकेर के ऐसे छात्रों को जिन्होने इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापना वर्ष में ही बी.ए. पूर्व की परीक्षा प्रारंभ की गई। सागर विश्वविद्यालय, सागर के तत्कालीन उपकुलपति श्री जी.पी. भट्ट ने अपने विशेष प्राधिकारों का प्रयोग करते हुए प्रथम वर्ष में ही महाविद्यालय को दो कक्षाएँ प्रारंभ करने की अनुमति प्रदान की क्योंकि आदिवासी बहुल क्षेत्र में स्थित कांकेर जैसे छोटे नगर में महाविद्यालय की स्थापना से वे बहुत प्रभावित हुए। उन दिनों कांकेर के 150 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के अन्तर्गत कोई अन्य महाविद्यालय नहीं था। सन् 1962 में ही एन.सी.सी. यूनिट प्रारंभ करने की अनुमति महाविद्यालय को प्राप्त हो गई जबकि जगदलपुर स्थित शासकीय महाविद्यालय में एन.सी.सी. नहीं था।

स्थापना वर्ष 1962 में ही 54 विद्यार्थियों की दर्ज संख्या उत्साहवर्धक थी। प्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली द्वारा छात्र–संघ का गठन किया गया। इस छात्र–संघ का उद्घाटन विवेकानन्द आश्रम के प्रणेता तथा गणित के उद्भट् विद्वान स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा किया गया। 2 जुलाई 1962 रथयात्रा पर्व के पुनीत अवसर पर महाविद्यालय की स्थापना का समाचार कांकेर निवासियों के लिए एक रोमांचक समाचार था। उसी दिन तत्कालीन 5000 की जनसंख्या वाले इस छोटे से नगर में ज्ञान और शिक्षा की शुभ यात्रा प्रारंभ हुई और प्रारंभिक वित्तीय संकटों तथा प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद प्रगति का यह क्रम अव्याहत रहा। कालान्तर में छात्र संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही।

एक नवीन शिक्षण संस्था की स्थापना का शुभ संदेश देते हुए तथा सहयोग संरक्षण का आव्हान् करते हुए कांकेर के भूतपूर्व शासक महाराजाधिराज भानुप्रतापदेव प्रातःकाल से सायंकाल तक, जब अस्तांचलगामी भानु की किरणे पश्चिमी क्षितिज को आलोकित कर रही थी, नगर की सड़कों पर अपना वाहन स्वयं चलाते हुए घूमते रहे। उनके अनुरोध एवं उद्यम का शुभ प्रभाव तत्काल दृष्टिगत हुआ तथा अविलम्ब बड़ी राशि महाविद्यालय के लिए एकत्रित कर ली गई। इसी क्रम में दानवीरों ने भूदान तथा सम्पत्तिदान की घोषणाएं भी सार्वजनिक रूप से की।

इस संबंध में उल्लेखनीय तथ्य है कि जब कांकेर में महाविद्यालय स्थापित हुआ तब रायपुर, राजनांदगॉव, जॉजगीर और बिलासपुर में ही निजी महाविद्यालय संचालित किए जा रहे थे। कांकेर में महाविद्यालय की स्थापना के प्रेरक समाचार से प्रभावित होकर बाद में धमतरी, बालोदाबाजार, भाटापारा, राजिम, अम्बागढ़ चौकी, डोंगरगढ़, महासमुन्द, बागबाहरा आदि स्थानों

में अशासकीय महाविद्यालय खोले गए। सम्प्रति इसमें से अधिकांश कांकेर की भॉति शासनाधीन हो गए हैं।

कांकेर का ग्राम्य भारती महाविद्यालय 1 जनवरी 1975 को शासनाधीन हो गया। इसके शासनाधीन होने में महाविद्यालयीन प्रशासिका समिति के अध्यक्ष, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री विष्णु प्रसाद शर्मा तथा तत्कालीन केन्द्रीय उच्च शिक्षा मंत्री माननीय अरविन्द नेताम (सम्प्रति केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री) की सराहनीय भूमिका रही। इनके सद्भावनापूर्ण प्रयास के कारण ही महाविद्यालय के शासनाधीन होने में नियम और प्रक्रिया संम्बंधी कोई बाधा आड़ें नहीं आई।

(टीप– उक्त आलेख कार्यालयीन सहयोगी श्री एस.आर. अहरवाल के सहयोग से प्राप्त हुआ)

विरासत

– डॉ. बसंत नाग
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

बचपन की वो स्वप्निल दुनियाँ कितनी अच्छी लगती थी,
चाँद, सितारे, खुला आसमान,
प्रकृति के खुबसूरत नजारे कितनी अपनी सी लगती थी ।
जब हम बड़े हुए तब दुनियाँ का असली रंग समझ में आया,
जब हम उन लोगों से मिले हजारों मुखौटों में छिपे तथा कथित इंसानों से,
तब लगा यहाँ तो खौफ़नाक, बदसूरत, आडम्बर, विरान खंडहरों से हमारा पाला पड़ा है।
हाँ इतिहास इस बात का साक्षी है कि खंडहर हमारी विरासत है
और हमारी धरोहर हमारी पूर्वजों की थाती है ।
जो हमें याद दिलाती है हमारी गौरवशाली संस्कृति, नैतिक जीवन मूल्यों एवं मर्यादा की ।
आज समाज एवं हमें जरूरत है उनकी सुरक्षा की जो अब खंडहर में तब्दील हो चुके हैं ।
खंडहर विरासत की पहचान है जो समृद्धशाली संस्कृति की सुरक्षा करती है।
मान, मर्यादा, प्राचीन समृद्ध गौरवशाली परम्परा को संरक्षित करने की
जो इंसानियत को शर्मशार करती हुई दफन हो चुकी है।
जरूरत है उन्हें पुनर्जीवित करने की इस दुनियां को खुबसूरत रंगों से भरने की ।

The Voice

- Dr. Archana Singh
H.O.D.(English)

The placid place
Where to struggle a lot
To keep myself upright
When everything is in chaos
Who is that unknown power
Helps me to be strong
The voice that guides me
Not to deviate from the right path
I don't know I just wake up
I tie my laces
And stretch my back
And follow the voice unknown
To go to a place
To where I am supposed to go.
I always wonder
From where I get this inner strength?
Once I gathered all the courage
And asked the Voice
Who are you?
Why are you guiding me?
"I am your Soul"
He replied, "Your ever-waking part
Never stop listening to me
I am your guiding force
Be there for you when nobody is
Just keep listening to me
And I will never let you down"
His words filled me with confidence
And I moved on to accomplish the task……

गोदना की परम्परा

डॉ. बसंत नाग
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

– प्रो. नवरतन साव
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

प्राचीन भारतीय ग्रामीण समाज में नारी की स्वाभाविक सौन्दर्य वृद्धि की लालसा को विभिन्न रूपों में प्रदर्शित किया गया है। महिलाओं की यह स्वाभाविक वृत्ति उनकी भौतिक सुविधाओं, सांस्कृतिक विकास, आध्यात्मिक चेतना एवं पर्यावरण पर निर्भर करता है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां की अधिकतम जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। प्राचीन काल में महिलाएं अपने सौंदर्य में अभिवृद्धि करने की उत्कृष्ठ अभिवृत्ति ने "जहां चाह– वहां राह" की युक्ति को चरितार्थ किया है। शरीर के विशिन्न अंगों में गोदना गुदवाना, सोने–चांदी के आभूषणों को न पाने की असमर्थता, आध्यात्मिकता की भावना, शरीर को अंलकृत करने की इच्छा ने गोदना की परम्परा का प्रादुर्भाव किया।

गोदना की कला का उद्गम पोलिने को माना जाता है। सत्या गुप्ता ने इस संदर्भ में लिखा है कि प्राचीन समय में बिना गुदा शरीर महिलाओं के लिए लज्जा का विषय था। जिस समुदाय में सोने के गहने पहनने की परम्परा नहीं थी,वहां पर गोदने की परम्परा थी। टोना–टोटका के रूप में गोदना का प्रचलन बढ़ा। गोदना के कई नाम हैं। कही–कहीं पर"गासो" कही जाती है। गोदना गोदवाने में प्राकृतिक चिन्हों, टोटम (गण चिन्ह) का प्रयोग किया जाता है। कहीं सूर्य, चंद्र, तारे, देवी देवताओं का रूपायन किया जाता हैं तो कहीं पर सूर्य, चंद्र को अराध्य देवों के रुप में भी दर्शाया जाता है। उनके प्रति अपनी आस्था प्रदर्शित करने के लिए गोदना के रुप में रेखांकन किया जाता रहा है।

अतः. आध्यात्मिक मान्यताओं से प्ररित होकर अपने गण चिन्हों (टोटम) को शरीर में उकेरा जाता है। गुहा चित्रों के विषेषज्ञों की मान्यता है कि यह वस्तुतः सांकेतिक चित्रलिपि है, जिनके द्वारा विविध संदेशों को सम्प्रेषित किया जा सकता है। **गोदना को स्थायी आभूषण भी माना जाता है।** मनुष्य खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है। आभूषण और साज–सज्जा के सभी लौकिक साधन व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात यहीं रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में गोदना अलग ही आभूषण है जो मृत्यु के पश्चात व्यक्ति के साथ जाता है।

गोदना के विषय में बैरियर एल्विन ने अपनी कृति "मिथ्स ऑफ इंडिया" में मिथक लिखा है कि एक बार भगवान शिव जी ने समस्त देवी –देवताओं को भोज पर आमंत्रित किया, जिनमें गोंड जाति के देवता भी सम्मिलित हुए। भोजन के पश्चात् जब सभी देवता अपने–अपने घर जाने लगे तब गोंड़ों के देवता भी अपनी पत्नी को लेने पहुंचे। परंतु देवियों की भीड़ में वे अपनी पत्नी को पहचान नहीं सके। भ्रमवश वे माता पार्वती के कंधे पर हाथ रख दिए और अपने साथ चलने को कहा। इस बात पर माता पार्वती नाराज हो गई। उन्हें क्रोध में देखकर देवों के देव महादेव ने समझाने का प्रयास किया, परंतु उनका क्रोध शांत नहीं हुआ।

सच्चाई जानने पर उनका उपहास किया गया। तब उन्होंने सोचा कि वे ऐसा कोई उपाय अवश्य करेगी जिससे अगली बार इस प्रकार की भूल न हो। फलतः इस दुविधा को हमेशा के लिए खत्म करने का उपाय भी सोच लिया। इस तरह प्रत्येक जाति को पृथक पहचान दिलाने के लिये कुछ आकृतियां एवं रूपायन निर्धारित कर देवियों के अंगों पर रूपांकित किया गया। इसके द्वारा उन्हें पृथक – पृथक पहचान मिल गई। यही गुदना का प्रथम एवं मूल स्वरूप है।

गोदना के बारे में उदयशंकर भट्ट ने धर्म युग में लिखा है कि नागपुर के आस–पास गोदना लोकप्रिय है । ब्रज संस्कृति में भी गोदना का विशेष महत्व है । जिसका चित्रण लोकगीतों में भी मिलता है –

बन गये कृष्ण सिल्हार,
कि लीला खुदवाय ले ओ प्यारी ।।

सत्येन्द्र कुश कृष्णा बैराही ने लिखा है कि कुमाउं की लोककला, संस्कृति और परम्पराओं में भी किसी नुकीले औजार या कांटे से विविध प्रकार की आकृतियां उभारी जाती थी । श्री पी. एन. चोपड़ा ने सोसाइटी एंड कुल्जर डयूरिंग में गोदना का विवरण दिया है । वन्दना अग्रवाल ने रामायण में नारी सौंदर्य में गोदना कला का उल्लेख किया है। उदयशंकर जी ने बैगा बैसाखित में गोदना का वर्णन किया है । बैरियर एल्विन ने ट्राइब्स मिथ्स ऑफ उड़ीसा में स्त्री पुरूष में अंतर करने का माध्यम गोदना को बतलाया है ।

अतः स्पष्ट है कि गोदना की प्रथा प्राचीन काल से विद्यमान है । शिक्षा के विकास और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में गोदना की प्रथा "टैटू" के नाम से फैशन के रूप में आज भी विद्यमान है । युवा वर्गों में इसका क्रेज अधिक है । गोदना की परम्परा भारत में ही नहीं वरन विदेशों में भी प्रचलित है । अफ्रीका व आस्ट्रेलिया जैसे कई देशों में गोदना को साहस का प्रतीक माना जाता है । गोदना का संबंध स्वास्थ्य से भी है, जो लोग चलने–फिरने में असमर्थ होते हैं उनके जांघ के आस–पास सुई के द्वारा गोदना गोदा जाता है तो वह एक्यूपंचर का काम करता है, जिससे कई बीमारियों से निजात पाया जा सकता है ।

पहले बालोर का रस, बबूल के कांटे में डुबोकर गोदा जाता था । अब आधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जाता है । पूर्व में देवार, भाट एव ओझा जाति की महिलाओं के द्वारा यह कार्य किया जाता था । छत्तीसगढ़ में रामनामी समूदाय जिनकी संख्या 5 लाख से अधिक है जो अपने चेहरे सहित पूरे शरीर में राम नाम का गोदना गुदवा लेते हैं । ऐसा वे भक्ति और राम नाम के प्रति आस्था के कारण करते हैं । गोदना किसी व्यक्ति विशेष के प्रति प्रेम, स्वास्थ्य, आध्यात्मिकता तथा परम्परा का संवर्धन व संरक्षण का कार्य करती है । इसमें प्राचीन संस्कृति के हस्तांतरण एवं आधुनिकीकरण की प्रकिया का समिश्रण के तत्व सन्निहित हैं ।

गोदना जन–जन सें व्याप्त एक ऐसी लोककला है जो पारम्परिक और आधुनिक संस्कृति को जोड़ती है । गोदना की कला संवहन की ऐसी कड़ी है जो धर्म व आस्था से तो जुड़ा ही है, साथ ही साथ आधुनिकीकरण एवं परिवर्तित स्वरूप में मित्रता व्यक्तित्व एवं मनोभावों को प्रदर्षित करने के लिए युवा वर्ग गोदना कला को अपनाए हुए है । अतः हम कह सकते हैं कि गोदना न केवल सौंदर्य बोध का परिचायक है बल्कि आत्म–अवलोकन व पारलौकिक रहस्य से परिपूर्ण अनुभूति का परिचायक भी है ।

यदि आप सकारात्मक हैं तो आपको बाधाओं की जगह अवसर दिखाई देंगे ।

आयी दीवाली

– संतराम अहरवाल
प्र.शा.तकनीशियन

1. हर साल की भांति,
अब फिर आयी दीवाली।
फिर वही साज–सज्जा,
वही सब कुछ
जो कुछ–अपना सा,
कुछ सपना सा।

2. वही रंग–बिरंगी रंगोली,
वही बेबस आंगन।
जो कुछ–पूरा सा,
कुछ अधूरा सा।

3. वही तेल और बाती,
वही बे–दिल दीप।
जो कुछ–जलता सा,
कुछ बुझता सा।

4. वही लक्ष्मी की प्रतिमा,
वही होम–धूप।
जो कुछ जला सा,
कुछ–बुझा सा।

5. वही फटाखों की आवाज,
वहीं बे–सिर पैर का शोर।
जो कुछ नया सा,
कुछ–पुराना सा।

6. वही चलता–फिरता मानव,
वही बस बे–बस पेट।
जो कुछ भरा सा,
कुछ खाली सा।

भारत का स्वर्णिम अतीत

– डॉ.पूनम साहू

अतिथि व्याख्याता (इतिहास)

☞ मैकाले (02 फरवरी 1835 बिटेल की संसद में)– भारत में मैने अपने प्रवास के दौरान यह देखा कि भारतवासी सोने के सिक्कों को गिनकर नहीं, बल्कि तौलकर लेते –देते थे।

☞ विलियम डिग्वी (17वी शताब्दी)– अंग्रेजों से पहले का भारत विश्व में व्यापार, उद्योग एवं कृषि के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ था। भारत एक निर्यात प्रधान देश था। इस तरह विश्व के सभी देशों का सोना–चांदी भारत की ओर प्रवाहित होता था।

☞ मार्टिन (स्कॉटिश इतिहासकार)– भारतवासियों ने दुनिया को कपड़ा बनाना व पहनना सिखाया। भारतीय कपड़ों को रोमन साम्राज्य के राजा –रानियां भी पहनते थे।

☞ ब्रिटेन की संसद में (1813–35–40)– भारत का उत्पादन वैश्विक रूप में था। भारत का व्यापार (निर्यात) वैश्विक रूप में 33 प्रतिशत था, भारत का कुल आय वैश्विक रूप में 27 प्रतिशत था।

☞ केम्बेल, अग्रेज अधिकारी (1842)– भारत विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्टील बनाता है।

☞ ले कर्नल एवं वॉकर अंग्रेज अधिकारी– भारत में पानी जहाज बनाने की कला सबसे पहले विकसित हुई। भारत में समुद्री तटों पर लगभग 2,00,000 गांव बसते हैं, जिससे यह धंधा विकसित हुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी के जितने भी जहाज हैं वे भारत के स्टील से बने हुए हैं। इसका कारण यह है कि भारत में बने हुए स्टील में जंग नहीं लगता। भारत में विज्ञान बीस शाखाओं में है जिनमें धातु विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान, भवन–निर्माण विज्ञान आदि शामिल है।

☞ आर्यभभट्ट ने 999 ईस्वी. में दुनिया को बता दिया था कि धरती गोल है। धरती की चाल के बारे में भी बताया, आर्यभट्ट ने कॉपरनिकस से 1000 वर्ष पहले ही पृथ्वी से सूर्य की दूरी बता दी थी।

☞ दशमलव का ज्ञान भारत ने दुनिया को 100 B.C. में दिया था।

☞ भास्कराचार्य ने पांचवी शताब्दी में ही बता दिया था कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाने में 365.287 दिन लगाती हैं।

☞ पॉजीटिव व निगेटिव नंबरों और उसकी गणनाओं की व्याख्या सबसे पहले ब्रम्ह्गुप्त ने अपनी पुस्तक "ब्रम्ह्गुप्त" में की थी।

☞ दुनिया की पहली विश्वविद्यालय तक्षशिला में 700 B.C. में बनी थी जहां दुनियाभर के छात्रों को 60 विषय पढ़ाये जाते थे। चौथी शताब्दी में नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत की शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि है।

☞ सबसे पहला दवाओं का स्कूल आयुर्वेद है। इसके नाम आचार्य चरक हैं। जिन्होंने इसकी शुरूआत 2500 वर्ष पहले की थी।

☞ महर्षि सुश्रुत सर्जरी के पिता है, जिन्होंने इसकी शुरूआत 2500 वर्ष पहले की थी।

☞ सर आईजैन न्यूटन के द्वारा गुरूत्वाकर्षण के बारे में बताने से 400 वर्ष पहले ही भास्कराचार्य द्वितीय ने पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण के बारे में व्याख्या की थी।

☞ आर्यभट्ट ने दिन व महीने की गणना की और बताया कि एक दिन में कितने घंटे, दिन–रात के होंगे। एक सप्ताह में कितने दिन होंगे, एक माह में कितनें दिन होंगे बताया। अंग्रेज खगोल शास्त्री और नक्षत्र शास्त्र इस बात को स्वीकार करते हैं कि इतना कुछ हमने भारत से उधार लिया ओर उसका पुनर्निर्माण किया।

☞ डेनियल डिप्फो (1708, ब्रिटेन संसद में)– भारतीय खगोल विज्ञानी चंद्रग्रहण सूर्यग्रहण का पूर्वानुमान लगा लेते थे।

विदेशी विद्वानों ने भी माना भारतीय ज्ञान का लोहा

"जब मैंने भागवत गीता पढ़ी तो मुझे पता चला कि ईश्वर ने कैसे यूनिवर्स को बनाया। अब सब चीजें सतही लगती हैं। हम भारतीयों के बेहद कर्जदार है, जिन्होंने हमें गितनी सिखाई। इसके बना कोई भी वैज्ञानिक खोज नामुमकिन थी। "

– अल्बर्ट आईस्टीन

"भारत सभी मानवजाति की मातृभूमि है और संस्कृत यूरोप की सभी भाषाओं की जननी है। यह हमारे दर्शनशास्त्र व गणित की भी मातृभूमि है। " **– विल डुरांट**

"पूरी दुनिया में कोई भी अध्ययन उतना लाभकारी नहीं है जितना उपनिषद् है, यह मेरे जीवन और मौत की संतुष्टि है। "

– आर्थर शोपंनडाएर

"यदि मुझसे पूछा जाए कि पूरी दुनिया में सबसे विकसित दिमाग वाले इसान कहाँ है, जिन्होंने जीवन से जुड़ी समस्याओं के समाधान निकाले हैं और जिन्होंने प्लेटों को पढ़ा है तो मेरा जवाब होगा वह देश है भारत" **– मैक्स मूलर**

"हर इंसान का सवाल है कि वह कौन है, कहाँ से आया? यहाँ क्या कर रहा है उसे कहाँ जाना है ? मेरे लिए यह जानना सबसे अधिक जरूरी है और बाकी चीजें बाद में, भारत में लोगों की अनुभूति अलग है। वे अध्यात्म की ओर जा रहे है। " **– जॉर्ज हैरिसन**

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था –

लिटनेप व थामस मुनरो (1822)– भारत की आबादी लगभग 20 करोड़ है जो भारत के लगभग 7,32,000 गाँवों में बसती है। प्रत्येक गांव में कम से कम एक गुरूकूल है, जहां विद्यार्थी को 18 विषयों की शिक्षा जाती है इन गुरुकुलों में विद्याथियों को प्रवेश 5 वर्ष 5 महिने 5 दिन होने पर दिया जाता है। इसक बाद वे अपनी 14 सेवाएं देने लगते हैं इन गुरूकूलों में विद्यार्थी सुर्योदय से सूर्यास्त तक अध्ययन करते थे।

Be Like A Bird.....

- Prof. Patras Kindo
Assistant Professor
Department of English

Be like a bird...
For it hast no boundaries fenced
No! Restriction to go anywhere
No! Partiality but all equality
No! Lack of provisions nor anxieties
All free in every matter
Flies in the sky singing in full mood
And expresses its ecstatic joys
I'm rather selfish...
Fenced everything; non windows open
Even fresh air can't enter
I'm the boss of artificial property
How the selfishness has dominated!
The mud! Boasting of nothingness
Not aware of returning to it.
O! Bird what the peace thou hast!
Could you share thy joy.....?
The feelings of the breeze
The openness of thy estate
The mid-groves of the woods
Could you tell thy experiences?
How happy thou art!
Thou art the vivid example of joy
Please! Make me like thee
Let me understand Him who hast sent thee
And provide thy peace...
So that I may spread it flying in the sky

NOTE : Mid- groves symbolizes - peace and joys..

कहानी

मन की बात

– डॉ. सीमा परिहार
अतिथि व्याख्याता (हिन्दी)

लोग किस्से कहानियों में अपनी कल्पनाओं के सारे रंग उड़ेल देते हैं पर कहानियां सिर्फ कल्पनाओं से नहीं बनती उनमें जीवन का अनुभव भी छुपा होता है। मित्रों मैं भी आज आपसे अपने मन की वह बात बांटना चाहता हूं जो मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश है, और ना सिर्फ मेरे जीवन का शायद आपके जीवन का भी अंत हो सकता है क्योंकि समय और परिवेश का चक्र किसी एक को प्रभावित नहीं करता समूचा विश्व ही इसकी चपेट में होता है।

मैं अपने माता–पिता की इकलौती संतान रहा हूं। मेरे माता–पिता मिट्टी के घड़े बनाया करते थे पिता घड़े, सुराही और गमलों को तरह–तरह के आकार दिया करते थे और माँ उन्हें सुंदर चित्र और रंगों से सजाया करती थी। मैं पिता के साथ उन्हें बेचने बाजार जाया करता था। सप्ताह में प्रत्येक बुधवार को हम शहर भी जाया करते थे। वहां बिक्री अधिक होती थी। शहर में हम जिस स्थान पर बैठकर घड़े बेचा करते थे उसके ठीक सामने अंग्रेजी स्कूल था । स्कूल में सुंदर और एक सी पोशाकों में बच्चे आया करते थे। तरह–तरह की गाड़ियों में उनके माता–पिता अथवा ड्राइवर उन्हें छोड़ने व लेने आया करते थे। मैं पिता के साथ बैठा एकटक वहां की सारी गतिविधियां देखा करता था और पिता ग्राहकों में व्यस्त रहकर भी कनखियों से मुझे देखा करते थे जैसे मेरे मन के भावों को ताड़ना चाहते हों। मेरे लिए यह केवल एक मनोरंजन था पर मेरे पिता ने जैसे कोई निश्चय कर लिया था और एक दिन अकस्मात ही वे मेरा हाथ पकड़े उस स्कूल के भीतर दाखिल हो गए। वहां के प्राचार्य से कुछ बातें की तथा बार–बार विनती की। बातों का तुक मैं समझ नहीं पाया क्योंकि मेरा ध्यान सुंदर बगीचे में तरह तरह के झूलों में अटका था। पर घर आकर उन्होंने मां को स्पष्ट किया कि मेरा दाखिला स्कूल में हो गया हैं और अब मुझे वही हॉस्टल में रहना होगा। मैं तब 8 वर्ष का था और एक दिन के लिए भी माता–पिता से दूर नहीं रहा था दो–चार दिनों में ही मुझे कपड़े बिस्तर और पठन सामग्री के साथ ही स्कूल में छोड़ दिया गया मैं बहुत रोया घर से जाते वक्त माँ से लिपट गया, माँ भी बहुत रोई। पिता को भी मुंह फेर कर आंसू पोछते हुए मैंने देखा था न जाने क्यों वे इतने कठोर हो गए थे बार बार मुझसे बस एक ही बात कहे जा रहे थे, "मैं अपने बाबू को भी डॉक्टर बना लूंगा। तुझे घड़े बेचने के लिए मजबूर नहीं करूंगा। बेटा तेरा भविष्य उज्ज्वल होगा" मेरा बाल मन बहुत रोया दो दिन तक मैंने हॉस्टल में कुछ खाया भी नहीं मैं अपने पिता को नहीं समझा पाया कि मैं डॉक्टर बनना नहीं चाहता। मैं अपने मां और बाबा के साथ ही रहना चाहता हूं, दोनों के हाथों में हाथ डाल कर सोना चाहता हूं। मां के हाथ की मीठी रोटी खाना चाहता हूं।

हॉस्टल में मैं रात को चादर ओढ़ना भूल जाया करता। सर्दी का मौसम था मुझे तेज जुकाम हो गया, बुखार की वजह से कुछ खाया भी नहीं जाता था, कोई मनाकर खिलाता भी नहीं था। मां रोज रात को सपने में आती थी फिर धीरे–धीरे यह सपना आना भी कम हो गया। महीने में एक बार माता–पिता मुझसे मिलने आते थे। हॉस्टल वार्डन साथ में होती थी न वे कुछ कह पाते थे और न मैं कुछ कह पाता था। मां मीठी रोटी भी नहीं ला सकती थी क्योंकि लाने की अनुमति नहीं थी। हालाकि स्कूल में ही सब सुविधाएं थी। स्कूल प्रशासन अच्छे से अच्छा भोजन देता था पर मुझे उसमें जरा भी स्वाद नहीं आता था तेल मसाला बहुत तेज लगता था। इस तरह धीरे–धीरे में 12वीं कक्षा में पहुंच गया। माँ अब कम आया करती थी बाबा भी दो–तीन महीने में एक बार आया करते थे पहले से बहुत कमजोर हो गए थे ऐसा लगता था मानो मेरी पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए उन्होंने अपनी रात की नींद भी कुर्बान कर दी थी। आंखें धंस गई थी और कमर झुक गई थी। आज भी मैं उनसे कहना चाहता था कि बाबा मैं घड़े बेचना चाहता हूँ, मैं आपके और माँ के साथ रहना चाहता हूं पर जिस सपने को उन्होंने मेरा सपना समझा था उसे उनका सपना मान कर मैं चुप हो जाता था और पूरी लगन से उसे पूरा करने में जुट गया था।

12वीं के बाद पी.एम.टी. की परीक्षा बिना किसी कोचिंग के ही पास कर ली और मेरे अंक इतने अच्छे थे कि आगे की पढ़ाई के लिए मुझे सरकार की ओर से स्कॉलरशिप भी मिली। अंततः मैं डॉक्टर बन ही गया मैं हार्ट स्पेशलिस्ट था। मेरी पहली पोस्टिंग दिल्ली में हुई। मां–बाबा बहुत खुश थे क्योंकि आज उनका सपना और मेहनत दोनों साकार हो गई थी। मैं उनसे भी ज्यादा खुश था कि क्योंकि

अब मैं सभी बन्धनों से आज़ाद होकर माँ–बाबा के साथ रह सकता था। मैंने दिल्ली में बहुत सुंदर सा बंगला खरीदा और मां बाबा को गांव से अपने साथ ले आया। साल दो साल हमने अपनी जिंदगी को भरपूर जिया फिर अचानक मेरा तबादला लंदन हो गया। जिस क्षेत्र में मैं था उसके लिए बड़ा ऑफर था। मैं दुविधा में था पर माँ–बाबा की जिद से मुझे साल भर के लिए जाना पड़ा। वैसे तो हमारे सभी पड़ोसी सज्जन थे और सुशिक्षित थे पर फिर भी मुझे मां बाबा की चिंता लगी रहती थी। दुर्भाग्य से मुझे गए कुछ महीने ही हुए होंगे कि मेरी मां दमें की मरीज थी वे चल बसी। बाबा ने उनकी की मृत्यु की सूचना मुझे नहीं दी। उन्हें डर था कि कहीं मैं लौट न आऊँ। अकेले ही पड़ोसियों की मदद से मां का दाह संस्कार कर आए। मां की मृत्यु के पश्चात् जैसे वे किसी गहरी सोच में डूब गए शायद उन्हें यह चिंता खाए जा रही थी कि उनकी मृत्यु अकस्मात हो जाए तब क्या होगा ? मैं तो बहुत दूर होऊंगा, समय से पहुंच भी नहीं पाऊंगा ऐसी स्थिति में क्या हल होगा ? कोई सगा–संबंधी भी तो पास नहीं। इसकी चर्चा उन्होंने शायद मिस्टर जार्ज से की थी जो रिटायर्ड कर्नल थे। उन्होंने बाबा को मार्चुरी सेवा का रास्ता सुझाया। जिसमें रजिस्ट्रेशन करवाने पर मार्चुरी सेवा वाले स्वयं व्यक्ति की लाश को आकर ले जाया करते हैं और क्षण भर में बिजली की मशीन की दराज में शरीर को अंदर डाल दूसरे ही क्षण राख को मटके में पैक कर सुरक्षित रख देते हैं अथवा दिए गए संबंधी को पार्सल कर देते हैं। वाह रे दुर्भाग्य ! मेरे बाबा मार्चुरी सेवा में अपना नाम लिखा आए टेलीफोन नम्बर व पता नोट करा आए।

इसके बाद बाबा मुझसे फोन पर कम ही बात करते थे उन्हें डर था। कि यदि मैंने मां के बारे में पूछ लिया या उनसे बात करवाने कह दिया तो वह क्या करेंगे ? जब भी बात होती मां कभी पड़ोसी के यहां है तो कभी रसोई में है अथवा सो गई है यही उत्तर मिलता। परंतु उनकी आवाज की हर आहट मुझे चिंता में डाल रही थी। मैं जल्दी वापस लौट आना चाहता था कोई अनहोनी की आशंका मेरे मन मस्तिष्क को निरंतर कुरेद रही थी। मैं मन ही मन यह भी निश्चय कर चुका था कि अब जल्द से जल्द वैवाहिक जीवन में भी प्रवेश कर जाना है मैं एक ऐसी लड़की की तलाश में था जो अपनी महत्वाकांक्षा और परिवारिक जिम्मेदारियों के बीच तालमेल बैठाना जानती हो। विदेशी लड़कियों में यह गुण कम ही होता है। अतः मैं भारतीय लड़की से ही विवाह करना चाहता था। परिचितों और रिश्तेदारों ने कुछ रिश्ते सुझाए थे उनमें से किसी एक को अब जीवन संगिनी स्वीकार करना है। भारत लौटते ही पहला कार्य यही करूंगा मेरा निश्चय था।

समय बीतता गया और मैं भारत वापस आया। मेरे आने की सूचना पिता को थी अतः वह द्वार के पास ही कुर्सी लगाए मेरा इंतजार कर रहे थे। उनके साथ ही कर्नल साहब भी बैठे थे। मुझे देखते ही बाबा की आंखें पल भर को खुशी से चमक उठी और फिर तुरंत ही किसी गहरी उदासी में खो गई। मैंने देखा बाबा पहले से दुर्बल हो गए थे। चेहरे की झुर्रियां और घनी हो गई थी। सब से मिलकर मेरी आंखें मां को तलाशती हुई भीतर की ओर आतुरता से निहार रही थी। पर उनको सामने कहीं ना देखने मां पुकारते हुए रसोई घर की ओर बढ़ने लगा। अंदर कर्नल की बेटी थी जो हमारे लिए चाय नाश्ता का प्रबंध कर रही थी दिल्ली आने के बाद मेरी मां के हृदय के सबसे पास भी वही थी। मेरी हम उम्र थी और कार्टूनिस्ट भी थी।

कर्नल की पत्नी नहीं थी और मां को पुत्री का सुख नहीं मिला था। इसलिए इन दोनों के बीच पड़ोसी होते हुए भी ममत्त्व का एक गहरा रिश्ता बन गया था। उसने ही मुझे माँ की मृत्यु की सूचना दी। बाबा से पता चला कि माँ की मृत्यु के पश्चात परिष्कृति (कर्नल की बेटी) ने ही उनका पूरा ध्यान रखा है। मेरा मन परिष्कृति के प्रति आभार से उठा और समय देखकर मैंने उनसे पूछ लिया कि जो जिम्मेदारी तुमने मेरी अनुपस्थिति में निभाई है क्या मेरी जीवन संगिनी बनकर हमेशा के लिए उठा पाओगी। उनसे एक संकोच परंतु हर्ष मिश्रित के साथ हामी में सिर हिला दिया। आज जीवन में पहली बार महसूस हुआ कि मेरे मन की बात पूरी हो गई है।

जीवन आधार–गौमाता

– डॉ. आभा श्रीवास्तव
अतिथि व्याख्याता (हिन्दी)

भारतीय जीवन पद्धति में जिन संस्कारों और संस्कृति की आहट आती है, उसकी मूल चेतना **"सत्यम शिवम् सुंदरम्"** की देन है। भारतीय मनुष्य का ही यह चमत्कार है कि हमारी जीवन शैली में आज भी हम हमारी संस्कृति–संस्कार द्वारा रचे गये पथ का अनुसरण करते हैं इसलिए हम आज भी अपने संस्कारों में अग्रगामी है।

स्वास्थ्य के लिये देशी गाय का दूध और आत्मोन्नति के लिये गीता का ज्ञान मानव के जीवन के सर्वोपरि शिखर तक पहुँचा सकता है।

"गाय सदा ही पूजनीय जो सेवा कर लेय । घास के बदले सहज में सुधा सरिस पय देय"

गौ माता और गीता विश्व को ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य निधि है। इन दोनों का आश्रय लेकर मनुष्य स्वस्थ्य, सुखी व सम्मानित जीवन प्राप्त कर सकता है। गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है।

भारत देश के निवासी सुनें – गाय कटकर, मरकर, खपकर भी अमर है, गंगा दूषित होकर भी पवित्र है,गीता झूठी कसमों से संतप्त होकर भी संदेश देती है। यही है भारत की सच्ची तासीर और सच्ची तस्वीर।

भारत में प्रारंभ से ही गौ वंश का अत्यधिक समादर होता चला आ रहा है। वेदों में गाय की अपार महिमा निर्दिष्ट है। गाय सात्विकता, पवित्रता, मंगलमयता, शक्ति और सुख–समृद्धि का प्रतिनिधि है (प्राप्तः काल गाय का दर्शन अभ्युदय का सूचक माना जाता है। "हमारे वेदों और पुराणों में उल्लेख है कि गाय के शरीर में समस्त देवता तथा तीर्थ भी अधिष्ठित होते हैं " और उसके रोम – रोम में तैंतीस करोंड़ देवताओं का वास रहता है। गाय के शरीर को पवित्रता की सीमा माना गया है। गौ शरीर का निकृष्ट द्रव्य मल तक महान पवित्र और लक्ष्मी की निवास भूमि और उसका संवर्धन माना जाता है।

उसके द्वारा उपलिप्त होने पर समस्त कर्मकाण्ड यज्ञ पूजा आदि की भूमि शुद्ध पवित्र, सिद्धि प्रदायिनी बन जाती है। गाय की सेवा से मनुष्य को दुर्लभ सिद्धियाँ प्राप्त होती है–

" कृष्ण चंद्र गौ सेवा करके, जग में योगीराज बने
गोर्वधन गिरिराज उठाकर, गिरधारी बृजराज बने
गोर्वधन की कथा बताती, परम पुनीता गौ – माता "

कामधेनु हमारी कामनाओं की पूर्ति करने वाली प्राणी जगत की एक प्रतिनिधि है – इसी को हम गाय कहते हैं। आर्थिक विकास की होड़ में हमने कई संकट खड़े कर लिए हैं। कामधेनु और कल्पवृक्ष के साथ हमारे जीवन के विकास का अंतरंग सन्बध है हमें समझना होगा। जब हम अपनी भूमि की रक्षा का संकल्प लेते हैं जो "गौ" के बिना हमारी भूमि को 'सुजलाम–सुफलाम्' बनायें रखना संभव नहीं यह जानकारी भी हमें होनी चाहिए। कृषि के यंत्रीकरण की सीमा, रसायानिक खादों के प्रयोग की सीमा यदि तय नहीं करेंगे तो हमारी कृषि परावलम्बी हो जायेगी। हम आधुनिकता के विरोधी नहीं है पर उस प्रवृत्ति के विरोधी है जिसके कारण मूलभूत पंचतत्व, जिनकी वजह से ये पृथ्वी खड़ी है वह समाप्त न हो।

आज पूरी दुनिया को भारत से यह अपेक्षा है कि भारत के वैज्ञानिक भारत के नीति–निर्धारक और भारत के जन सामान्य एक बार अपनी उस आधारभूत श्रेष्ठ परंपराओं को ध्यान में रखकर कार्य करें। गाय तो एक चलता–फिरता चिकित्सालय है। जैविक अन्न, सब्जियाँ, फल स्वस्थ जीवन की सुरक्षा कवच है। गौ आधारित कृषि देश की उन्नति का आधार है इसे हम विश्व के समक्ष रखें।

"गौ सेवा का पावन व्रत लें गौमाता का मान करें, ग्राम – ग्राम गौ ग्राम बनाकर, भारत देश महान करें"

Happiness is free

- Mrs. Priyanka Jaiswal
Assistant Professor
Department of English

If happiness is free, why people can't find higher level of happiness? What if I tell you today that everything you know about happiness is wrong? What if I tell you that your brain is not designed to be happy?

Our ancestors survived and other creatures couldn't. It just happened because of our mind. Our biggest weapon was not a stone or a stick but our brain. We were neither the biggest animal nor the strongest one but we are the smartest one. The mental ability that helps us to survive has kept us unhappy and stressed for a long time.

Happiness depends on us. We are responsible for it. Our happiness is our responsibility not anybody else. We should choose to be happy in every situation and every moment of our life. When we start depending on others for this we will be disappointed when other will not reciprocate according to our expectations.

Everything in life constantly keeps changing. people can change. Our socio-economic status keeps changing. Our body changes. Our physical and mental health change. The climate changes. "Everything is changing in the world". Just be happy regardless of whatever happens externally. Love your life because nobody's life is easier. We are only responsible for our happiness. Free other from the burden of taking responsibility of your happiness.

Don't wait for the destination but start finding happiness while you are in the journey. Don't think that I will be happy only when this or that will happen to me. No, today we may have the greatest challenge that doesn't mean we should postpone our satisfaction. HAPPINESS IS A JOURNEY NOT A DESTINATION. It is totally our responsibility and surely we should prefer this choice every moment. Never give the control of your happiness to anyone or anything else.

Teaching English as a '*Skill*' Rather than a *'Subject'*

- Dr. Nidhi Bhatt
Assistant Professor
Department of English

In our country English language is widely used due to which it has become very popular. Now it is the contact language in our own country with different states from North to South and from East to West. Even it is dominating the Hindi language. The English language is taught in our country as the first language in Public schools or English medium schools and also as second language in the state schools or aided schools. English cannot be taught like other subjects that are content or knowledge based as it is skill based. In teaching English as a second language, a good English teacher should follow the skills approach. The teacher should help the students to acquire the four language skills namely *Listening, Speaking, Reading* and *Writing* (LSRW). These four language skills are classified into four categories, Productive and Receptive Skills, Aural-Oral and GraphicMotor skills. While engaged in a conversation we have to listen and speak at the same time. Teaching can be made effective if there is organization and effective presentation of the material. It means that if the matter is properly organized it can be retained easily by the students and they will not forget it easily. If the material is full of purpose or goal, learner will learn it more effectively. While teaching, a teacher should avoid ambiguity, verbosity and long windedness in speech and writing. When the teaching method is to be implicated, a teacher should keep in mind about the type of material and students' abilities. For an effective teaching, fatigue, boredom and monotony should be avoided. Thereafter, the confusing material should be repeated with greater clarifications. The goal of a teacher should be to attack from the simple to complex, from familiar to unfamiliar, from the concrete to the abstract, from easy to difficult and from recent to remote etc.

The effectiveness of teaching strategy is evaluated in terms of achieving objectives by managing standard test. The teaching methods are evaluated in terms of mastery over the subject matter by using achievement test. The teaching method aims at the effective presentation of subject matter to have the mastery over it. The concept of teacher's effectiveness and teaching effectiveness concern with the both aspect of teaching *Arts* and *Science*. Teaching is more than a science, because it also involves artistic judgment and aesthetic sense about the best ways of teaching. Teaching is to be analysed in scientific and artistic ways by the following components:

1. Teaching situation or interaction.
2. Teaching process.
3. Teaching activities and actions.
4. Teaching tricks and trades.
5. Teaching skills.
6. Face to face encounter in teaching and
7. Teaching means for generating situation and condition.

As to quote **Pt. Jawaharlal Nehru,** "*If you push out English, does Hindi fully take its place? I hope it will. I am sure it will. But I wish to avoid the danger of one unifying factor being pushed out without another unifying factor fully taking its place. In that event there will be a gap, a hiatus or gap must be avoided at all costs. It is very vital to do so in the interest of the unity of the country. It is this that leads me to the conclusion that English is likely to have an important place in the foreseeable future".*

कोरोना की दूसरी लहर

– प्रताप चौधरी
सहा. प्राध्यापक (इतिहास)

देश में अभी स्थिति ठीक नहीं है। कोरोना की दूसरी लहर अपनी रौद्र रूप दिखा रही है। इसका प्रभाव देश में गांव और शहर सभी जगह है। जो कुछ भी घटित हो रहा है, उसे समझने वाला कोई भी उम्र का व्यक्ति देश में नहीं है, जो बाकि लोगों को समझा सके। समाज में इस प्रकार की परिस्थिति का अनुभव किसी के पास नहीं है। कुछ ऐसा देख रहा हूँ कि अभी प्रदेश में लॉकड़ाउन लगा है। सुबह से लेकर शाम तक किसी परिचित की मृत्यु की खबर मिल रही है। सोशल मीडिया खोलता हूँ तो वहाँ भी ऐसी ही खबरें और सूचनाएं भरी पड़ी है। इस घटना से पहले मैं सोशल मीडिया में अपना ज्यादा समय न्यूज़ सर्च में लगाता था, लेकिन कुछ दिनों से मैंने न्यूज़ सर्च बंद कर दिया है। व्हाट्स ऐप्प ग्रूप में भी रोज श्रद्धांजलि की मैसेज सेंड हो रहे हैं।

मैं कांकेर और सरिया कॉलेज का ऑनलाइन क्लास नवम्बर से साथ में ही ले रहा हूँ। नियमित क्लास अटेंड करने वाले मेरे स्टूडेण्ट दो–तीन दिन तक क्लास अटेंड न करें तो मन में तरह–तरह के विचार आने लगते हैं। लेकिन बच्चे आशावादी हैं, अपने भविष्य को लेकर उत्साहित भी हैं। कईयों ने कोरोना से लड़ाई जीती भी है। मई का महीना चल रहा है तो बच्चों का सबसे ज्यादा पूछे जाने वाला प्रश्न यही है कि – सर परीक्षा कब होगी ? परीक्षा ऑनलाइन होगी कि ऑफलाइन ?

मन में बहुत कुछ चल रहा है। इतिहास का विद्यार्थी और अध्यापक होने के कारण मैंने अतीत की कई युद्धों के बारे में पढ़ा है, मनुष्य का प्रकृति से युद्ध पढ़ा है। महाभारत में भी युद्ध का उल्लेख है। युद्ध केवल परिणाम नहीं होते हैं, युद्ध भावनाओं का समंदर हैं। संवेदनाओं का ज्वार हैं। एक सैनिक इसमें अपने साथी, अपने संबंधी को खोने के बाद भी अगले पल युद्ध मैदान में होता है।

इस आपदा की विनाश–लीला भी किसी युद्ध से कम नहीं है। इसने हमारे देश की सारी कमियों को उजागर कर दिया है। स्वास्थ्य, शिक्षा और कानून व्यवस्था की विषमता इसने धरातल पर ला दिया है। स्वास्थ्य सुविधाओं का स्तर देश में, शहरों में अलग– अलग है। हॉस्पिटल में बेड नहीं, ऑक्सिजन की आपूर्ति नहीं है। स्वास्थ्य सुविधाओं की समाज के सभी वर्गों तक पहुँच नहीं है। अभी के समय में हम सभी स्वास्थ्य संस्थान से एकसमान श्रेष्ठ स्वास्थ्य स्तर की अपेक्षा कर रहे हैं। शिक्षा और कानून की विषमता तो विदित ही है हमें। विडम्बना है की हमें दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहलाना अच्छा लगता है लेकिन समानता से रहना हमें नहीं आ रहा है, सभी जगह विशेषाधिकार पसंद लोग हैं। देश में इसी प्रकार की संस्थाएं हैं..

फूलों की सुगंध केवल वायु की दिशा में फैलती है
लेकिन व्यक्ति की अच्छाइयाँ हर दिशा में फैलती है ।

विधि : संभावनाएं

– प्रो. विजय बेसरा
विभागाध्यक्ष (विधि)

विधि क्या है ?

विधि वह माध्यम है जिससे राज्य, जनता के आचरणों और व्यवहारों को विनियमित करते हुए समाज में शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखता है ।
विधि किसी संदर्भ में बनायी गयी नियम संहिता को कहते हैं । समाज के सुचारू रूप से संचालन के लिए विधि आवश्यक है । विधि राज्य द्वारा स्वीकृत तथा लागू किये जाते हैं, जिनका पालन अनिवार्य होता है । पालन न करने पर न्यायपालिका दण्ड देती है ।

विधि शब्द अपने आप में ही विधाता से जुड़ा हुआ है। प्रकृति का कानून, जीव जगत का कानून, समाज का कानून । राज्य निर्मित कानून से आज पूरी दुनियां प्रभावित हो रही है, क्योंकि समाज का प्रत्येक जीव, विधि द्वारा संचालित और नियंत्रित हो रहे हैं ।

विधि क्यों पढ़ना चाहिए ?

प्रत्येक व्यक्ति को विधि के ज्ञान के लिये विधि पढ़ना चाहिए क्योंकि विधि की पढ़ाई करने वाले को ही अपने अधिकारों की जानकारी होती है तथा अधिकारों के साथ–साथ अपने कर्तव्यों का भी निर्वहन करता है । जिन व्यक्तियों को विधि का ज्ञान नहीं होता वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों की अनभिज्ञता के कारण अपराध कर बैठते हैं। विधि विशेषज्ञ विधि से संबंधित समस्याओं का समाधान करता है । विधि के जानकार व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्थान प्राप्त होता है । विधि डिग्रीधारकों के पास रोजगार के अवसर बढ़ जाते हैं ।

विधि के क्षेत्र में क्या संभावना है ?

विधि के क्षेत्र में रोजगार के अवसर सबसे ज्यादा है । दूसरे विषय की पढ़ाई करने वालों के पास विकल्प कम होते हैं, जबकि विधि की पढ़ाई करने वालों के पास रोजगार के विकल्प ज्यादा होते हैं ।

1. *अधिकारों की जानकारी*
2. *Career Opportunity*
3. *Jobs Opportunity*
4. *Academic*
5. *Defence*
6. *सम्माननीय नागरिक के रूप में समाज में जीनें का अवसर प्राप्त होता है ।*

Judicial Services, Govt. Advocate, Legal Department of Private Company, Legal Firms & Bank, Political, Practice in Court/ Advocacy, Higher Education etc.

अमर शहीदों का चारण

– टिकेश्वर कुमार कोरेटी
बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ ।
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है, मैं उसे चुकाया करता हूँ ।
यह सच है, याद शहीदों की
हम लोगों ने दफनाई है,
यह सच है उनकी लाशों पर
चलकर आजादी आई है ।

उन गाथाओं से सर्द खून को, मैं गरमाया करता हूँ ।
मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ ।
गिरता है उनका रक्त जहां
वे ठौर तीर्थ कहलाते हैं,
वे रक्तबीच अपने जैसों को
नई फसल दे जाते हैं ।
यह धर्म, कर्म यह मर्म सभी को, मैं समझाया करता हूँ ।
मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ ।

वे अगर न होते तो, भारत
मुर्दों का देश कहा जाता,
जीवन ऐसा बोझा होता
जो हमसे नहीं सहा जाता ।
इस पीढ़ी में उस पीढ़ी के मैं भाव जगाया करता हूँ ।
मैं अमर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ ।

पूजे न गए शहीद तो फिर
वह बीज कहां से आएगा ?
धरती को माँ कहकर मिट्टी
माथे से कौन लगाएगा ?
मैं चौराहे–चौराहे पर ये प्रश्न उठाया करता हूँ ।
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है, मैं उसे चुकाया करता हूँ ।

स्वामी विवेकानन्द

– वैशाली बघेल
बी. ए. प्रथम वर्ष

युवाओं के प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ । इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त और माता का नाम भुनेश्वरी देवी था । स्वामी विवेकानंद का वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था । वे वेदांत के विख्यात और प्रभावशाली अध्यात्मिक गुरु थे । उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागों में सन 1893 में आयोजित विश्व धर्म सम्मलेन में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधि किया था ।

स्वामी विवेकानंद की जब बात होती है तो अमेरिका के शिकागो की धर्म संसद में साल 1893 में दिए गए भाषण की चर्चा जरुर होती है । ये वो भाषण है जिसने पूरे दुनिया के सामने भारत को एक मजबूत छवि के साथ पेश किया –

"मेरे अमेरिकी भाई और बहनों " – आपने जिस स्नेह के साथ मेरा स्वागत किया है उससे मेरा दिल भर आया है । मैं दुनिया की सबसे पुरानी सनातन परंपरा और सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूँ, सभी जातियों और सम्प्रदायों के लाखों करोडों हिन्दुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूँ ।

मैं इस मंच पर बोलने वाले सभी वक्ताओं का भी धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने यह जाहिर किया की दुनिया में सहिष्णुता का विचार पूरब के देशों से फैला है । मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूँ जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढाया है । हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते बल्कि हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते है ।

मुझे गर्व है की मैं उस देश से हूँ जिसने सभी धर्मों और सभी देशों से सताए गए लोगों को अपने यहाँ शरण दी । मुझे गर्व है कि हमने अपने दिलों में इसराईल की वो पवित्र यादें संजो रखी है । जिनमें उनके धर्मस्थलों को रोमन हमलावरों ने तहस नहस कर दिया था और फिर उन्होने दक्षिण भारत में शरण ली । मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ जिसने पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और लगातार अब भी उनकी मदद कर रहा है ।

मैं इस मौके पर वह श्लोक सुनाना चाहता हूँ जो मैंने बचपन से याद किया है और जिसे रोज करोड़ों लोग दोहराते हैं जिस तरह अलग अलग जगहों से निकली नदियां, अलग अलग रास्तों से होकर अखिरकार समुद्र में मिल जाती है, ठीक उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा से अलग अलग रास्ते चुनता है । ये रास्ते देखने में भले ही अलग अलग लगते हैं लेकिन ये सब ईश्वर तक ही जाते हैं ।

मौजूदा सम्मलेन जो कि आज तक सबसे पवित्र सभाओं में से है वह अपने आप में गीता कहे गए उपदेश इसका प्रमाण हैं जो भी मुझ तक आता है, चाहे कैसा भी हो मैं उस तक पहुंचता हूँ । लोग अलग अलग रास्ते चुनते हैं, परेशानियां झेलते हैं, लेकिन आखिर में मुझ तक पहुँचते हैं ।

साम्प्रदायिकता/कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने लम्बे समय से इस खुबसूरत धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है । न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुई और कितने देश मिटा दिए गए ।

यदि ये खौफनाक राक्षस नहीं होते तो मानव समाज कहीं ज्यादा बेहतर होता जितना कि अभी है । लेकिन उनका वक्त अब पूरा हो चुका है । मुझे उम्मीद है कि आज इस सम्मलेन का शखनांद सभी हठ धर्मिताओं हर तरह के क्लेश चाहे वो तलवार से हो या

कलम से, सभी मनुष्यों के बीच की दुर्भावनाओं का विनाश करेगा।

इस भाषण की शुरुवात में कहे गए शब्द "मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों...." ने उस सभा में उपस्थित सभी लोगों का दिल जीत लिया। उनका जन कल्याण व राष्ट्र के विकास में योगदान अविस्मरणीय है। स्वामी विवेकानंद जी को प्रेरणास्रोत के रूप में जाना जाता है। इसलिए उनके जन्मदिवस 12 जनवरी को युवा दिवस घोषित किया है। जिसे मनाने का उद्देश्य राष्ट्र के युवा वर्ग को उनकी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें निभाने के लिए प्रेरणा देना है।

उठो, जागो और तब तक मत रुको
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाये।

बाल-विवाह

– अंजली जैन
बी.ए. प्रथम वर्ष

विवाह संस्कार व भूमिका :– हिन्दू संस्कृति में एक व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक सोलह तरह के पर्व उत्सव होते हैं, जिन्हें संस्कारों का नाम दिया जाता हैं जिनमें विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार माना गया है।प्रत्येक दौर में विवाह को दो पवित्र भावनाओं के बंधन के रूप में स्वीकृति दी गई जो अगले सात जन्मों तक एक दूसरे का साथ निभाएँ ।बदलते वक्त के साथ विवाह संस्कार में कई तरह की बुराइयाँ सम्मिलित हो गई और इन कुरीतियों के चलते विवाह व्यवस्था विकृति का शिकार हो गई ।जिसका एक स्वरूप हम बाल विवाह अथवा अनमेल विवाह के रूप में देखते हैं। यह भारतीय समाज के लिए अभिशाप साबित हो रहा है ।

बाल विवाह एक कुप्रथा :– ऐसा नहीं है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में बाल विवाहों का शुरू से प्रचलन रहा। वैदिक काल में इस तरह का कोई संकेत नहीं मिलता है मध्यकाल के आते आते जब भारत बाहरी आक्रमणों को झेल रहा था तब बेटियों से विदेशी शासक सम्बन्ध बना लेते थे इसी दौर में रोटी बेटी की कुप्रथा का प्रचलन हो गया ।गरीब तथा निम्न वर्ग के कमजोर तबके के लोगों के लिए अपनी बेटी को घर में रखना दुष्कर कार्य हो गया था। अतः उन्होंने बचपन में ही बेटियों का विवाह करना शुरू कर दिया ।दहेज प्रथा के कारण आज भी भारतीय समाज में बाल विवाह धड़ल्ले से हो रहे हैं ।

मध्यकाल में एक दौर ऐसा भी आया जब बेटी के जन्म को अशुभ माना जाने लगा शिक्षा के अभाव तथा स्वतंत्रता न होने के कारण लड़कियाँ इसका विरोध भी नहीं कर पाती थी ।छोटी उम्र में विवाह हो जाने के कारण दहेज भी कम देना पड़ता था ।इस कारण से मध्यम तथा निम्न वर्गीय परिवारों में बाल विवाह की प्रथा ने अपनी जड़ें गहरी जमा ली ।

बच्चा था तो सच्चा था

– नागेश कुमार यादव
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बच्चा था तो सच्चा था
ना किसी का ज्ञान था
क्या होती है जात–पात
ये ना मालूम था
बच्चा था तो सच्चा था

मैं सब के साथ खेला करता
मन में कोई भेद–भाव नहीं होता
क्या होती है मुझे क्या मालूम था
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई
मैं सब के साथ खेला करता
बच्चा था तो सच्चा था ।

लोग जात–पात के बारे में न
बताते तो मैं आज भी सच्चा होता
सब को एक आँख से देखता
ना जाने मैं क्यों बड़ा हुआ
बच्चा था तो सच्चा था ।

ना जाने मानव जात–पात के नाम पर
क्यों लड़ा करता है?
जब लोग एक लहू एक मांस
तो क्यों इनके नाम अनेक?
जात–पात का नामोनिशान नहीं होता
तो आज हम नवसमाज
(एकता का समाज) में जी रहे होते ।
बच्चा था तो सच्चा था ।

ना जाने ये जात–पात का
भ्रम लोगों के दिमाग से कब हटेगा ?
इससे तो अच्छा था मैं बच्चा ही रहता
बच्चा था तो सच्चा था ।

ऐतिहासिक धरोहर : गढ़िया पहाड़

– टीकम औरसा
एम.ए. चतुर्थ सेमे.(इतिहास)

कंक ऋषि के तपोभूमि होने के कारण इसका नामकरण कांकेर पड़ा। यह 1800 ई. से ही कांकेर व कंकैर्य नाम से प्रसिद्ध हो गया था। सन 1998 में एक जिले का दर्जा प्राप्त हुआ। सन 2003 में संभागीय पहचान के लिए इसका नाम उत्तर बस्तर कांकेर रखा गया।

कांकेर छत्तीसगढ़ को विशेष पहचान देने के साथ–साथ कई दर्शनिक व ऐतिहासिक रूपों में समाहित हैं। इसके दर्शनिक व ऐतिहासिक पहचान में गढ़िया पहाड़ का भी विशेष योगदान हैं। पहाड़ के बाएं भाग में लगभग 45 फीट ऊंची मलांजकुडूम नामक झरना आच्छादित है, मानो ऐसा प्रतीत हो रहा हो कि पहाड़ के पैरों को स्पर्श करती हुई 16 किलोमीटर लंबी फैली प्रसिद्ध दूध नदी जो अपनी शीतल धारा से गढ़िया देव के चरणों को धोकर नमन करती प्रतीत हो रही है।

विशेषता – मां भारती के गोद में व छत्तीसगढ़ महतारी के करधनी भाग में स्थित कांकेर नगर व गढ़पिछवाड़ी के मध्य में लगभग 660 फीट ऊंची गढ़िया पहाड़ है। इस पहाड़ का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। पहाड़ की विशेषता चौदहवीं शताब्दी में लगभग 800 साल पहले बस्तर के विख्यात राजा शौर्य–शक्ति का प्रतीक महाराजा अनंम देव के आक्रमण के बाद धर्मदेव कंड्रा राजा अपनी राजपाट व इष्ट देवी देवताओं के साथ आकर गढ़िया पहाड़ को सिंहद्वार व धर्मद्वार के साथ एक मजबूत किले में तब्दील किया। तब से अब तक गढ़िया किले के रूप में विख्यात हो गया है। यही नहीं यहां विराजमान मां शीतला व मां कांकेश्वरी देवी तथा भगवान शिव जी की विशेष कृपा के लिए भी जाने जाते हैं। यहां कोई पर्यटक प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने, तो कोई श्रद्धालु मंगल कामना की पूर्ति हेतु पहुंचते हैं।

गढ़िया पहाड़ पर स्थित कुछ ऐतिहासिक स्थान

इस पहाड़ी पर कई ऐसे स्थान हैं जो अपने आप में किले को अलग पहचान देती है –

सिंह द्वार – धर्मदेव कंड्रा राजा जब किले का निर्माण किए तभी से शिवलिंग के आकार में कुछ विशेष पत्थरों से बनवाया था। बताया जाता है जो राजा से मिलने आते तो उसे इसी प्रवेश द्वार से प्रवेश दिया जाता था। यह भी माना जाता है कि इस द्वार में पहरेदार के अलावा सिंह (शेर) को भी पहरेदारी के लिए रखा जाता था। इसी कारण इस द्वार को सिंह द्वार के नाम से जाना जाता है।

धर्म द्वार – यह द्वार गढ़पिछवाड़ी की ओर स्थित मार्ग है जिसका उपयोग राजा और सैनिकों के प्रवेश के लिए होता था। यह किले के पीछे का रास्ता है।

सोनई–रूपई तालाब – गढ़िया पहाड़ जमीन तल से लगभग 660 फीट ऊंचाई पर स्थित है। जहां एक अद्भुत तालाब है जिसका पानी कभी नहीं सूखता है। इस तालाब की खासियत यह भी है कि सुबह और शाम के वक्त इसका आधा पानी सोने और आधा चांदी की तरह चमकता है। धर्मदेव कंड्रा राजा की सोनई–रूपई नाम की दो बेटियां थी, वे दोनों इसी तालाब के आसपास खेला करती थी, एक दिन दोनों तालाब में डूब गई। तब से यह माना जाता है कि सोनई–रुपई की आत्माएं इस तालाब की रक्षा करती हैं इसलिए इसका पानी कभी नहीं सूखता है। पानी का सोने–चांदी की तरह चमकना सोनई–रुपई के यहां मौजूद होने का निशानी के रूप में देखा जाता है।

शिव मंदिर – सोनाई–रुपई तालाब के एक छोर में प्राचीन शिव मंदिर है जिनका इतिहास 1000 वर्ष पुराना बताया जाता है। यह मंदिर किला बनने से भी पहले से इसी स्थान पर है। इस मंदिर में सूर्य आदि देवों की प्राचीन प्रतिमाएं भी हैं। प्रतिवर्ष शिव भगवान की पूजा के लिए महाशिवरात्रि में मेले का आयोजन भी इस पहाड़ी पर किया जाता है। कुछ मूर्तियां मराठा शासन के भी बताए जाते हैं ।

कांकेश्वरी मंदिर – कांकेरवासियों ने श्री श्री योगमाया कांकेश्वरी देवी ट्रस्ट का गठन करके पहाड़ी पर मंदिर का निर्माण कराया और 2 जुलाई 2002 को विधिवत पूजा अर्चना करके माँ योगमाया दुर्गा की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा शहर के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में की गई । कांकेर की आराध्य देवी होने से इसका नामकरण माँ योगमाया कांकेश्वरी देवी किया गया। जिसका आशय है कांकेर की देवी माँ योगमाया ।

शीतला मंदिर – तालाब के किनारे प्राचीन समय में राजा धर्मदेव ने शीतला देवी का मंदिर बनवाया था। उस मंदिर में देवी पिण्ड के रूप में थी जो अब दिखाई नहीं देता। लगभग 10–11 वर्ष पूर्व इस मंदिर के पुजारी ने वहां माँ दुर्गा की प्रतिमा स्थापित किए हैं ।

छुरी पगार गुफा – सोनई–रुपई तालाब के पास ही एक गुफा है जिसमें जाने का मार्ग एकदम सकरा है लेकिन उस गुफा में प्रवेश करने के बाद विशाल स्थान हैं, जहां लगभग 500 लोग बैठ सकते हैं । गुफा के मार्ग में छुरी नुमा पत्थर लटकते दिखाई पड़ते हैं इस कारण इसे छुरी पगार गुफा कहते हैं । कहते हैं कि किले में दुश्मनों के द्वारा हमले होने पर राजा अपने सैनिकों के साथ इसी गुफा में छुप जाते थे ।

जोगी गुफा – इस गुफा में सप्त ऋषियों में से एक ऋषि कंक ऋषि इसी गुफा में रहकर तपस्या करते थे जिसके कारण इस गुफा को जोगी गुफा के नाम से भी जाना जाता है। इस गुफा का अंतिम छोर बस्तर में निकलना बताया जाता है जो कि कई वर्षों से बंद होने के कारण यह बंद हो गया है। इस गुफा पर कंक ऋषि के खड़ाऊ आज भी मौजूद हैं। बताया जाता है कि वनवास काल के दौरान श्री रामचंद्र भी दंडकारण्य से होते हुए कंक ऋषि व भगवान शिव की दर्शन के लिए गढ़िया पहाड़ पर आए थे।

झंडा शिखर – गढ़िया पहाड़ को दूर से देखने में जो सबसे आकर्षित करता है वह है गढ़िया पहाड़ का मुकुट झंडा शिखर । इस स्थान पर राजा का राज ध्वज फहराया जाता था। जिस लकड़ी के खंभे में झंडा फहराया जाता था उसके अवशेष वहां आज भी मौजूद हैं । कहा जाता है कि जब राजा किले में रहते थे तो झंडा शिखर पर ध्वज लहराता रहता था एवं राज्य के दौरे में रहने पर ध्वज को उतार लिया जाता था। ध्वज के कारण प्रजा को मालूम हो जाता था कि राजा किले में है या नहीं ।

फांसी भाठा – राजशाही के जमाने में फांसी भाठा पर अपराधियों को मृत्युदंड दिया जाता था । अपराधियों को ऊंचाई से नीचे फेंक दिया जाता था । एक बार कैदी ने अपने साथ सिपाही को भी खींच लिया । इसके बाद से अपराधियों के हाथ बांधकर उन्हें दूर से बांस के सहारे धकेला जाने लगा । जिसको भी राजा "सजा–ए–मौत" का फरमान देते थे उन्हें यहीं लाकर मौत दिया जाता था ।

होलिका दहन स्थल – झंडा शिखर के समीप ही होलिका दहन स्थल है। कांकेर का पहला होलिका दहन आज भी यहीं होता है यहीं से अग्नि ले जाकर कांकेर के मोहल्लों में होलिका दहन किया जाता है ।

हम सब जिम्मेदार हैं

– गायत्री नागवंशी
बी.ए. प्रथम वर्ष

हम सब जिम्मेदार हम सब जिम्मेदार हैं
कोरोना का आज धरा पर
होता कड़ा प्रहार है, गली–गली में लगा हुआ
अब लाशों का अंबार है ।

अपनों से अपनों की दूरी
कोरोना में मदद गार हैं
जंगल पेड़ सभी कटवाए
हम सब जिम्मेदार हैं ।

कोरोना का तांडव हे शिव बंद करो
अपनी संतानों पर हे प्रभु दया करो
हे त्रिशूलधारी कोरोना नाश करो
मानवता की रक्षा करो विकास करो ।

ग्राम–बेवरती का बालाजी मंदिर

– युवराज सिंह भारद्धाज
बी.ए. प्रथम वर्ष

आज से लगभग 80–70 साल पहले एक महिला बालाजी पहाड़ पर कंदमूल खोद रही थी तभी कंद खोदते समय उसने जिससे बालाजी भगवान के नाक को खोद डाली जिससे नाक से खून बहने लगा । वह महिला गांव तरफ आ कर लोगों को यह बात बताई, फिर गांव के सभी लोग जाकर देखें तो पता चला कि यह भगवान का अवतार है । जिसके लिए उन्होंने छोटा सा झोपड़ी जैसा मंदिर बना दिए । फिर यह बात कुछ महीने बाद कांकेर के राजा को पता चला और तब उस राजा ने एक रात उस मूर्ति को उठाकर अपने घर ले गया, जो आज कांकेर के राजापारा में बालाजी मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित है ।

आज वर्तमान में छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री मा. डॉ. रमन सिंह और गांव वालों के सहयोग से बेवरती में मंदिर बनाया गया है । जहां प्रत्येक नवरात्र में यहां ज्योत प्रज्वलित होता है। लोग दूर–दूर से इसके दर्शन करने आते हैं । यहां मंदिर के समीप ही एक गुफा भी है इस प्रकार यह स्थल धार्मिक एवं पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है ।

नई सदी में स्त्री सुरक्षा के प्रश्न

– कविता जैन
एम.ए.द्वितीय सेमे. (इतिहास)

पिछली सदी में इंदिरा गांधी की मृत्यु के पश्चात् राजनैतिक पटल पर जब राजीव गांधी का अवतरण हुआ, पहली बार देश ने युवा नेतृत्व का स्वाद चखा ।स्वाद निःसंदेह फीका न था ।राजीव युवा थे ।उनकी दृष्टि युवा थी तो स्वप्न भी थे एकदम इन्द्रधनुषी ।'' हम देखेंगे'' जैसे तकिया कलाम के मध्य इक्कीसवीं सदी का विकासवादी चेहरा वे बार–बार देशवाशियों के समक्ष रखते हैं, नई सदी में जाना है ।नये समय में बहुत कुछ कर दिखाना ।भारत प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करेगा, औद्योगिक, व्यवसायिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक समस्त क्षेत्रों में यह शीर्ष पर जायेगा ।

हमें अपने प्रश्नों के समुचित उत्तर मिलेंगें ।एक नया क्षितिज होगा ।नई सदी ने दस्तक दी । ऐतिहासिक क्षणों का स्वागत देश–दुनिया ने बेहद उमंग के साथ किया, नवीनता का पुल कुछ दे न दे आशाएं तो जगा ही देता है और स्वप्नों का क्या हुआ ? क्या उन्हें यथार्थ की धरती मिली? या वे हवा हुए ?

अपने देश के स्तर पर देखें तो पिछली सदी से इस सदी का अंतर दिखता अवश्य है ।सन्देह नहीं कि काफी कुछ बदला है ।बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही देश की तरक्की दिखने लगी थी ।अभी नई सदी में पैर धरे बमुश्किल एक दशक बीते किंतु देश ने पूरी सशक्तता से अपनी उपस्थिति का अहसास दुनिया को करा दिया है, भारत की प्रगतिशीलता देख विकसित देश भी भौंचक्क हैं ।आर्थिक मंदी ने जब शक्ति संपन्न देश अमेरिका को हिलाकर रख दिया ।भारत में संकट पर बादल उमड़ भी न सके । कहां तो भारत के ब्रेन–ड्रेन की चिन्ता थी ।उल्टे ओबामा भारत से नौकरी की भीख मांगते दिखाई दिये ।जनसंख्या की दृष्टि से भारत तो यों भी चीन को टक्कर दे रहा है, ऐसे में गणनीय संख्या में कुछ भारतीय श्रेष्ठ मस्तिष्क के बल पर नासा, आंतरिक अथवा विदेशी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर कब्जा जमाते हैं तो हर्ज क्या है ? जरा सकारात्मक नजरिये ये देखिये ।कभी हम उपनिवेशवाद के शिकार थे ।आज हमारा अपना 'निवेशवाद' है ।भारतीय कहां नहीं है ।अपनी गुणवत्ता, श्रेष्ठता, महत्ता के साथ हम ' वसुधैव कुटुम्बकम् ' को प्रतिफलित नहीं कर रहे क्या?

तो हम खुश हो लें, बदलते समय में हमारे देश ने भी अपना चोला बदला है ।प्रगति का रसपान किये हुए देश के डग बड़ी तेजी से उपलब्धियों के सोपान तय करते लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं ।देश ने कई मोर्चो पर सफलता पाई है ।पिछली सदी में कई प्रश्न थे ।बहुत से प्रश्नों का हल तो पा लिया है, किन्तु कई अंग ऐसे है, जिसके लिए दिल्ली अभी बहुत दूर है ।हद यह कि दूरी जाने कैसे आश्चर्यजनक ढंग से कम होने के बजाए ज्यादा हो गई ।

लक्ष्य सामने की हो और देखते ही देखते धुंध से भर जाए तो कैसा लगेगा? मानों राजमार्ग में अनचाहा 'डायसर्वन' आ गया थे ।इक्कीसवीं सदी ने अपनी पोटली में कुछ छोटे–बड़े प्रश्न पिछली सदी से मांग कर रख ही लिये थे ।आतंकवाद, नक्सलवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, कदाचार, जल, जंगल, जमीन से लेकर पड़ोसी देशों की खटपट तक ।ज्यों ज्यों मानव समाज ने प्रगति की, अपराध भी साथ–साथ चला ।स्त्री पुरूष दोनों ने असामजिकता की ऐसी पीड़ाओं को एक साथ झेला ।किंतु यदि इक्कीसवीं सदी को 'स्त्री' के चश्में से देखों तो उसमें लिए यह नया समय क्या मायने रखता है । स्त्री–पुरूष दोनों के लिए नई सदी एक–सी सुखद है ? भारतीय

स्त्री ने क्या नए आकाश को विरभ्र, स्वच्छ पाया ?

बातें जब अच्छी भी हो और बुरी भी, तो ग़ालिब की तर्ज पर अच्छी बातें पहले कर का ख्याल अच्छा है ।यदि स्त्री की दशा–दिशा पर चिन्ता करें – इस बात से तो कतई इंकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय स्त्रियों की बदलते दौर के साथ जबरदस्त परिर्वतन ले आया है ।पराधीन भारत में या उससे भी पहले मुगलकाल से ही सुरक्षा के चक्कर में परदे के भीतर ढकेली गई स्त्रियां चहारदीवारी में चूल्हे के धुएं में घुटते दम के साथ जीने के लिये विवश थी ।

भारत देश एक परंपराओं का देश है, जो अपनी परंपरा और संस्कृति को लेकर प्रसिद्ध है । जहां नारी को देवी का रूप मानकर उनका सम्मान किया जाता है ।उसे लक्ष्मी का रूप माना गया है ।फिर भी आज की नारी सुरक्षा को लेकर सवाल उठाए गए है, आज भी ऐसा लगता है की नारी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है, जो आज के विकसित भारत की समस्या के रूप में बन गई है ।

भारत के बदलते युग के साथ–साथ नारी को लेकर सोच को भी काफी हद तक बदल गई है । आज की नारी हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ चलकर काम कर रही है ।शिक्षित होकर अपने जीवन ऊँचाइयों को पा रही है ।फिर भी वह अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित है, आज के युग में नारी सुरक्षा एक बड़ी समस्या बन चुका है, नारी सुरक्षा के कानून और कायदे होते हैं, उस पे अत्याचार होते रहते हैं, वह अत्याचार घरेलू हिंसा, समाजिक संस्थानों पर नारी शोषण, दहेज को लेकर कई प्रकार से परेशान किया जाता है ।नन्हीं उम्र में पुत्र को मर्यादा का पाठ पढ़ाया जाए तो पुत्रियों को भी उच्छृंखलता से बचना ।स्त्री वर्ग यदि अपनी भलाई चाहता है, तो कुछ नियम उसे भी अवश्य बनाने होंगे अपने लिए ।

तात्पर्य यह है कि वर्तमान समय समाज के लिए चिंतनीय है ।हालात सुधरेंगें परंतु सबसे ज्यादा सावधानी फिलहाल स्वयं स्त्री को ही रखनी होगी ।जब बलात्कार साल भर की बच्ची से लेकर सत्तर साल की वृद्धा के साथ हो, क्या उपाय किये जाएँ ?

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने ।
पुत्रो रक्षति वार्धक्ये, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ।।

अर्थात '' पिता स्त्री की कौमार्यवस्था में पति युवावस्था में तथा पुत्र वृद्धावस्था में रक्षा करते हैं ।स्त्री को स्वतंत्र नहीं रहना चाहिए ।इस प्रश्न के साथ कि क्या महाभारत– कालीन इस सूचिता को हम नितांत प्रगतिशील समय में, एक बार फिर लागू करने की दशा में पहुंच रहे हैं ।हम सोचें हमने कहां गलती की? हम क्यों भटक रहे है? क्या सही है? क्या गलत ? किसी दूसरे को दोष देना आसान है, छिद्रान्वेषक सभी होते हैं ।'स्व' का स्वयं विश्लेषण करना प्रारंभ करें, सूरत वहीं से बदलेगी, अन्यथा ?

खजुराहो मंदिर

– मीनाक्षी साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

खजुराहो भारत के मध्य प्रदेश प्रांत में स्थित एक प्रमुख शहर है जो अपने प्राचीन एवं मध्यकालीन मंदिरों के लिए विश्व विख्यात है। यह मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है। खजुराहो को प्राचीन काल में 'खजुरापुरा' और 'खजूर वाहिका' के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ बहुत बड़ी संख्या में प्राचीन हिंदू और जैन मंदिर है। मंदिरों का शहर खजुराहो पूरे विश्व में पत्थरों से निर्मित मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। खजुराहो को इसके मंदिरों की वजह से जाना जाता है जो कि देश के सर्वोत्कृष्ट मध्यकालीन स्मारक है।

खजुराहो चंदेल वंश की राजधानी

भारत के अलावा दुनिया भर के आगंतुक और पर्यटक प्रेम के इस अप्रतिम सौंदर्य के प्रतीक को देखने के लिए निरंतर आते रहते हैं। हिंदू कला और संस्कृति को शिल्पियों ने इस शहर की पत्थरों पर मध्यकाल में उत्कीर्ण किया था। विभिन्न कामक्रीड़ाओं को इन मंदिर में बेहद खूबसूरती के साथ उभारा गया है। खजुराहो का मंदिर एक सभ्य संदर्भ, जीवंत सांस्कृतिक संपत्ति और 1000 आवाजों जो सेरेब्रम से अलग हो रही है खजुराहो ग्रुप ऑफ मॉन्यूमेंट्स, समय और स्थान की अंतिम बिंदु की तरह, जो मानव संरचनाओं और संवेदनाओं को संयुक्त करती सामाजिक संरचनाओं की भरपाई करती है, जो हमारे पास है सब रोमांच में। यह मिट्टी से पैदा हुआ है एक कैनवास है, जो अपने शुद्धतम रूप में जीवन का चित्रण करने और जश्न मनाने वाले लकड़ी के ब्लॉकों पर फैला हुआ है।

चंदेल वंश द्वारा 950–1050 के बीच निर्मित खजुराहो मंदिर भारतीय कला की सबसे महत्वपूर्ण नमूनों में से एक है। हिंदू और जैन मंदिर के इन क्षेत्रों को आकार लेने में लगभग 100 साल लगे। मूल रूप से 85 मंदिरों का एक संग्रह संख्या 25 तक नीचे आ गई है। यूनेस्को विश्व विरासत स्थल, मंदिर परिसर को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी। पश्चिमी समूह में अधिकांश मंदिर हैं, पूर्वी में नक्काशीदार जैन मंदिर है। पूर्वी समूह के मंदिरों में जैन मंदिर चंदेल शासन के दौरान क्षेत्र में फलते फूलते जैन धर्म के लिए बनाए गए थे। पश्चिमी और दक्षिणी भाग के मंदिर विभिन्न हिंदू देवी–देवताओं को समर्पित है। इनमें से आठ मंदिर विष्णु को समर्पित है छह शिव मंदिर को, और एक गणेश और सूर्य को जबकि तीन जैन तीर्थंकरों को है। कदरिया महादेव मंदिर उन सभी मंदिरों में सबसे बड़ा है, जो बने हुए हैं।

खजुराहो का इतिहास

खजुराहों का इतिहास लगभग एक हजार साल पुराना है उनके उत्तराधिकारियों में मौर्य, सुंग, पद्मावती के नागा, वाकाटक वंश, गुप्त, पुष्यभूति राजवंश और गुर्जर प्रतिहार राजवंश शामिल थे। यह विशेष रूप से गुप्त काल के दौरान इस क्षेत्र में वस्तुकला और कला का विकास शुरू हुआ, हालांकि उसमें उत्तराधिकारियों ने कलात्मक परंपरा जारी रखी। खजुराहो शहर चंदेल साम्राज्य की प्रथम राजधानी थी। चंदेल वंश और खजुराहो के संस्थापक चंद्रवर्मन थे। चंद्रवर्मन मध्यकाल में बुंदेलखंड में शासन करने वाले राजपूत राजा थे वे अपने आप को चंद्रवंशी मानते थे। चंदेल राजाओं ने दसवीं से बारहवीं शताब्दी तक मध्य भारत में शासन किया।

खजुराहो के मंदिरों का निर्माण 950 ईसवी से 1050ईस्वी के बीच इन्हीं चंदेल राजाओं द्वारा किया गया। मंदिर के निर्माण के बाद चंदेलों ने अपनी राजधानी महोबा स्थानांतरित कर दी। लेकिन इसके बाद भी खजुराहो का महत्त्व बना रहा। मध्यकाल के दरबारी कवि चंदबरदाई पृथ्वीराज रासो के महोबा खंड में चंदेल की उत्पत्ति का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि कांशी के राज पंडित की पुत्री हेमवती अपूर्व सौंदर्य की स्वामिनी थी। एक दिन वह गर्मियों की रात में कमल–पुष्पों से भरे हुए तालाब में स्नान कर रही थी। उसकी सुंदरता देखकर भगवान चंद्र उन पर मोहित हो गए। वे मानव रूप धारण कर धरती पर आ गया और हेमवती का हरण कर लिया। दुर्भाग्य से हेमवती विधवा थी। वह एक बच्चे की मां थी। उन्होंने चंद्रदेव पर अपना जीवन नष्ट करने और चरित्र हनन का आरोप लगाया।

अपनी गलती के पश्चाताप के लिए चंद्रदेव ने हेमवती को वचन दिया कि वह एक वीर पुत्र की मां बनेगी। चंद्रदेव ने कहा कि वह अपने पुत्र को खजुराहो ले जाएगा। राजा बनने पर वह बाग और जिलों से घिरे हुए अनेक मंदिरों का निर्माण करवाएगा। चंद्रदेव ने युवती से कहा कि राजा बनने पर तुम्हारे सारे पाप धुल जाएंगे। चंद्र की निर्देशों का पालन कर हेमवती ने पुत्र को जन्म देने के लिए अपना घर छोड़ दिया और एक छोटे से गांव में पुत्र को जन्म दिया।

हेमवती का पुत्र चंद्रवर्मन अपने पिता के समान तेजस्वी बहादुर और शक्तिशाली था। 16 साल की उम्र में वह बिना हथियार के शेर या बाघ को मार सकता था। पुत्र की असाधारण वीरता को देखकर हेमवती ने चंद्रदेव की आराधना की चंद्रवर्मन को पारस पत्थर भेंट किया और खजुराहो का राजा बनाया। पारस पत्थर से लोहे को सोने में बदला जा सकता था।

चंद्रवर्मन ने लगातार कई युद्धों में शानदार विजय प्राप्त किया। उसने कालिंजर का विशाल किला बनवाया, मां के कहने पर चंद्रवर्मन ने तालाबों और उद्यानों से आच्छादित खजुराहो में 85 अद्वितीय मंदिरों का निर्माण करवाया और एक यज्ञ का आयोजन किया। जिसने हेमवती को पापमुक्त कर दिया।चंद्रवर्मन और उसके उत्तराधिकारियों ने खजुराहो में अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया।

इस दुनिया में शिक्षा से बड़ा कोई हथियार नहीं है और कलम से बड़ा कोई तलवार नहीं है।

कदम छोटे हों या बड़े रूकने नहीं चाहिए क्योंकि मंजिल पाने के लिए चलते रहना बहुत जरूरी है।

एक कविता हर माँ के नाम

– कु. सतवन्तीन नरेटी
बी.ए. प्रथम वर्ष

घुटनों से रेंगते–रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ ।
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
सीधा–साधा, भोला–भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ ।

मैं मजदूर हूँ

– कु. पूर्णिमा कोरेटी
बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं मेहनत कश मजदूर हूँ,
जीवन बद्धश्रम शक्ति इकाई की,
मैं पहाड़ काटा चट्टाने खोदकर,
तांबा में चाँदी निकाला,
जोताई करके फसल की हरियाली बनाई ।
मैंने बड़े–बड़े बिल्डींग कारखानें,
सड़क, इमारतें इत्यादि निर्माण किया,
मैं भूखा रहकर शहर गाँव,
कस्बों को खड़े किया ।
मेरे घर थे न द्वार, टाट फूस
टिन से बनी मेरी दुनियाँ
जिसमें हम सहपरिवार रहते ।
मैं मेहनत कश मजदूर हूँ ।

कोविड–19 में विद्यार्थी जीवन

– विनीता तेता
एम.ए. द्वितीय सेमे.(भूगोल)

कोविड–19 में कोरोना महामारी के वजह से बच्चों की पढ़ाई में बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है इसकी भरपाई करने में बहुत ज्यादा मुश्किल होगा। कोविड–19 "कोरोना महामारी" के वजह से देश भर में स्कूल कॉलेज बंद थे , जिससे विद्यार्थी की पढ़ाई अच्छे से नहीं हो पाई है। जिससे पूरे देश में पढ़ाई की स्थिति बहुत निम्न है।

कोरोना की इस दौर में शिक्षा के क्षेत्र में दो अलग–अलग तरह से प्रयास किए जा रहे हैं। एक है ऑनलाइन शिक्षा और दूसरी है मोहल्ला में खुले में कक्षाएं। लेकिन हकीकत है कि इनमें से कोई भी स्कूलों (बंद स्कूल) की भरपाई नहीं कर सका। अब यह पूरे देश में बहुत बड़ी चुनौती है।

1. ऑनलाइन स्कूल कितने असरदार :– ऑनलाइन शिक्षा मूलतः अप्रभावी रही है ऐसा इसलिए हुआ कि सभी बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षा के स्त्रोत नहीं है। यह ऑनलाइन शिक्षा की अक्षमता में जाने की जगह नहीं है। इस महामारी के दौरान जो ऑनलाइन शिक्षा को लेकर उत्साह पैदा हुआ है। वह तेजी से हवा हो गया है। इस अक्षमता ने घर के साथ ही स्कूली शिक्षा में शामिल सभी लोगों को प्रभावित किया है।

2. मोहल्ला कक्षा का प्रयास :– कई राज्यों ने बच्चों की शैक्षणिक व्यवस्था की महत्व को जारी रखने और ऑनलाइन कक्षाओं की सीमाओं को पहचाना है। इसे देखते हुए उन्होंने बच्चों के पड़ोस में ही कक्षा लगाने की व्यवस्था करने का प्रयास कर एक अच्छा काम किया है। बहुत सारे सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने अपने समर्पण से संभव किया। ऐसी मोहल्ला कक्षाएँ के बच्चों में किसी तरह के संक्रमण का जोखिम भी नहीं बढ़ रहा था, क्योंकि बच्चे केवल आस–पास वाले पड़ोस में ही मिलजुल रहे थे।

3. सफलता :– राज्य सरकारों और इन शिक्षकों के सर्वश्रेष्ठ प्रयासों और ऐसा करने के दौरान तमाम मुश्किलों के बाद भी सबसे अच्छे से आयोजित की गई। मोहल्ला कक्षाएं एक हफ्ते में 4–6 घंटे की होती थी। इन कक्षाओं ने स्कूलों की पढ़ाई 6–8 घंटे की होती है। इसकी भरपाई नहीं कर पाई, इन कक्षाओं ने शिक्षकों और छात्रों के बीच एक आवश्यक व्यवस्था रखने में सफलता पाई लेकिन शिक्षा के नजरिए से यह काफी नहीं थी।

4. इसका नतीजा :– यह सब का नतीजा यह रहा कि बहुत से भारतीय बच्चों उनमें से कम बच्चों के पास पर्याप्त साधन और घर से पूरा सहयोग नहीं था। साल भर सीखने से वंचित रहे। यह नुकसान दो तरह का था पहले यह कि सत्र 2020–21 में उन्हें क्या सीखना था दूसरा यह कि मार्च 2020 में स्कूल बंद हुए।उस समय तक जो जानते थे वह सब भूल गए। पहला नुकसान जाहिर है यदि चौथी कक्षा की छात्रा साल भर कक्षा नहीं गई हो तो वह कक्षा चौथी के लक्ष्य हासिल नहीं कर सकी होगी।

5. सबसे बड़ा नुकसान :– जिसे हम शैक्षणिक प्रतिगमन कह सकते हैं लेकिन ध्यान देने पर यह हैरान नहीं करता है। मिसाल के तौर पर इसी चौथी कक्षा की छात्रा को ही ले जो साल भर कक्षा नहीं जा सकी, वह सब कुछ याद नहीं रख सकी होगी जो भी उसने दूसरी कक्षा में सीखा था। इस तरह से सब सीखा हुआ भूल गया।

6. एक बहुत बड़ी चुनौती :– इसलिए अब जब हमारे स्कूल फिर से खुलने जा रहे हैं। हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है हमें इसकी पूर्ति भी करनी होगी जो बच्चे पिछली कक्षा कक्षाओं का पढ़ा भूल चुके हैं। 80% से ज्यादा बच्चों गणित की मूलभूत क्षमताये भूल गए थे 92% से ज्यादा बच्चों ने भाषाओं की मूल क्षमतायें खो दी थी।

7. तो क्या करना होगा :– यह बहुत जरूरी है कि हमारे पास इस शैक्षणिक प्रतिगमन और शिक्षा में हुए नुकसान से निपटने के लिए एक राष्ट्रव्यापी प्रतिक्रिया है। इसके लिए सबसे पहले हमें विशाल चुनौती को पहचान कर उसे स्वीकारना होगा, जो कोविड–19 के वजह से हुआ है। इसमें से किसी भी तरह की लापरवाही या कमजोरी की भूमिका नहीं है। कुछ राज्य इस मुद्दे पर खुले मन से आगे बढ़ रहे हैं।

8. इन कदमों की जरूरत :– इस गंभीर मुद्दे पर शिक्षकों को पढ़ाई में हुए नुकसान की भरपाई के लिए पर्याप्त समय देना होगा। इसके लिए वर्तमान सत्र को साल 2022 तक बढ़ाना होगा, गर्मी की छुट्टियां रद्द करनी होगी, पाठ्यक्रम फिर बनाना होगा। कम जरूरी कम जरूरी विषय वस्तु हटानी होगी, जबकि कुछ को अगले साल के सत्र में शामिल करना होगा। शिक्षकों और छात्रों से ही इससे निपटने की उम्मीद करना अव्यवहारिक ही होगा। अतिरिक्त समय में भी शिक्षकों और बच्चों को जरूरी सहायता और समर्थन की जरूरत होगी, जैसे कि शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और उपकरण, जिससे वे हर छात्र के शैक्षणिक प्रतिगमन के स्तर को जल्दी से समझ सके।

प्रेरणा गीत

– अंजली जैन
बी.ए. प्रथम वर्ष

जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो
आगे आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ।
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है ।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है ।
जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो ।

धरती चलती तारे चलते, चांद रात भर चलता है ।
किरणों का उपहार बांटने, सूरज रोज निकलता है ।
हवा चली तो महक बिखरे, तुम भी प्यारे मत बैठो ।
जीवन में कुछ करना हो तो, मन को मारे मत बैठो ।

My Journey: Psychology and Music

- Ms. Garima Sharma
B.A. First Year

My journey with psychology has been all about struggles, realizations, happiness, and music. I first came to know about psychologists through a web novel named “My house of horrors” written by “I Fix Air-Conditioner”. It has this character whose name is “Dr. Gao” who was a psychologist, a fun novel I must say but I'd suggest not to taking inspiration from this character because even though I admire his intellect, he is a dangerous one.

As a kid, I was put on this pedestal of a gifted kid who is good at everything but, as I grew up, this pedestal started feeling unstable and scary because it felt like I was good at everything but never good enough. A point came when my friends started dreaming and walking the paths they have chosen, and there was me who was still at the crossroad of options, unable to decide which path to choose. The destination which these paths led to were extremely fascinating, but the idea of walking that path going on that journey was not because it lacked that spark which lights the fire of passion in one's heart and so I did what every other person who gets above 80% in their 10th class does, took science and the things which I once liked started feeling like possibilities which are never going to be explored. Don't get me wrong, I really like Science especially Biology but I was never into it enough to pursue it in my higher studies, this made me feel like I was the only one in the dark when everyone else's lives were getting filled with the brightness of their passions.

In these dark times, while walking an aimless road. I found purple light. Out of curiosity, I approached it and found myself in the arms of music, more specifically speaking I became a BTS (a Korean boy group) fan who they lovingly call ARMY. I'd loved music before finding BTS too, but while listening to them, I started experiencing music differently; I started experiencing a lot of things differently. BTS is a group of 7 very inspiring and hardworking people. While getting to know them, I started getting to know myself. Because of them I understood that not having a dream is not bad, but not making an effort is. Most importantly, I found a path with that spark. I found myself getting interested in Psychology. Before I knew I started changing and growing. I started writing and doing everything that I was once praised for, everything that I once liked doing (dancing, singing, etc) but this time without looking at them as a source of income and with more feelings for the art, for people around me and myself.

Now you must be wonder how come I got into psychology through a boy group's music. So, it went like this: I came across their album, Map of the Soul: 7 which was released on February 21,

2020, by Big Hit Entertainment. It is the follow-up to their 2019 extended play Map of the Soul: Persona, with five of its songs appearing on the album. This album is highly inspired by Carl Jung, who was a Swiss psychiatrist and psychoanalyst, founded

Analytical Psychology and his map of the Jungian psyche which is basically about different aspects of personality and achievement of balance between them (individuation).

Apart from all of this, life happened; I started realizing the world is not all unicorns and rainbows. It's brutal out there. It's cold. I saw people suffering far from me, close to me, and at one point, I suffered from tons of emotional/mental strain too, but now I knew what people needed, they needed warmth, they needed help. But I was not in the best position to provide this help, at least not yet. So, I decided that I have to be qualified enough to help people, and here I am studying psychology aspiring to be a clinical psychologist one day.

Psychology is an amazing subject. Apart from giving you knowledge about human behavior and cognitive processes, it also gives you an insight into your own mind. As a student of Psychology myself, I encourage all and everyone to study Psychology, and if you don't want to study it as a subject, then to at least be aware of the importance of mental health.

"Success is to be measured not so much by the position that one has reached in life as by the obstacles which he has overcome while trying to succeed."
- Booker T. Washington

HIDE'S ABIDE...

- Jiya Mahvish Ali
B.Sc. First year

She looks at the stars hidden by sun,
To the patience of that pearl that lies deep in the ocean .
Just look at 1 beauty,
how lovingly have it cherished 1 beauty.
Isn't a good play of hide?
Does a poet exist in her soul?
No idea!
Yes, but her poetry is hidden in closed eyes.
Ever noticed?
She hides a hell full of pain
Yet, smiles like heaven full of love.
The ointment of all the wounds is hidden in her mother.
It would not be wrong to say "mum is the only ointment".
The day she knew the power of self-love,
Oh! Life twinkled with love at her.
The healing process she went through,
Made her soul more pure and shine bright.
Do you know?
Her musing is like-
Someone's poetry borne
From hidden agony,
And clenched fist
Made one to feel stony.
There's someone lives in humanity,
Far away from religious partiality.
The kindness of one is selfless,
Yes! Don't need a return.
Someone's day is made by her cheep
What should I reward to that bird?
And what's the account of time?
Where one holds silence yet
Sings a music that's deep.
WAIT WAIT!
Is her eye hiding a sea
OR a vowel with just two aligned line
is hidden in she..?

My College

- Devendra Prakash Nishad
B.A. First Year

I am now studying in BA Part 2 in Bhanupratapdeo Government PG College which is situated in kanker city. The glorious History of college is that it was established by our loving emperor of kanker valley Maharajadhiraj Bhanupratapdeo whose Intention was only to provide good quality education for the students especially who belong to rural areas.

It is far from city centre kanker among 3 or 4km and from Govindpur is maximum 3 km. Our College Campus Is So Beautiful. It is a very neat and clean as compared to other colleges where I have visited. Not only In the field of cleanliness but in teaching, college infrastructure, discipline, punctuality, and water availability, electricity, notice board maintenance, WiFi networks, big Play Ground, Library, so many Class Rooms and Laboratories are there, Big Auditorium, a small beautiful green Garden which is developed by our loving respected Dr. Archana Singh ma'am. Our college infrastructure has two floors, first floor and the second floor. There are NCC, NSS, Red Cross, where students can participate and work for their self development. There are many teachers for all the subjects. These are only some facilities but if we talk about the bonding between students and teachers, it cannot be expressed in words. I realized this first time when our beloved and respected teacher Dr. Jay Singh was leaving the college and going to Prayagraj University as an Associate Professor, selected because of his hard work and talent. We organized a farewell party for him to bid him "goodbye". Really that was a very emotional moment for me and I realized that how close we are to our teachers.

To quote Shakespeare, "No place is Hell our Heaven but our thinking makes it so"

Thankyou.

"Do not mind anything that anyone tells you about anyone else.
Judge everyone and everything for yourself."
- Henry James

My Best Friends

- Kriti Sonwani
B.A. First Year

You are my best friend
I never told you
But you are
I love you
More than my heart
Belongings of you
Preserved in my heart
I never told you
Importance of you in
My life….
Because
I can't express my feelings for you
In words or sentences
My each and every bites of heart
Tell “Maa”
It's my destiny
You both are in my life
And make it more beautiful and enthusiastic
Thanks to give me a pleasant life
Your blessings are like nectar for me
Even the thinking of
Separation from you
Like breaking of heart and mind
Please……
Always be with me
Love you Mamma-Papa

"Strive not to be a success, but rather to be of value."
- Albert Einstein

मेरे सपनों का छत्तीसगढ़

– कु. ओमेश्वरी सोनवानी
एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर (इतिहास)

1 नवम्बर 2000 में भारत के 26 वां राज्य के रूप में गठन के साथ अंचल के लोगों का सपना साकार हुआ सभ्यताओं के इतिहास में छत्तीसगढ़ की अपनी अलग पहचान रही है ।पाँच हजार वर्ष प्राचीन सभ्यताओं में आज भी छत्तीसगढ़ अतीत और वर्तमान के बीच एक सशक्त कड़ी के रूप में विद्यमान है । **''धान का कटोरा**'' के नाम से परिचित छत्तीसगढ़ की संस्कृति और इतिहास ने वैदिककाल में भी अपना परिचय बनाया था ।जैसे इसे कौशल नाम से जाना जाता है क्योंकि भगवान श्री रामचन्द्र जी की माता कौशल्या यही की राजकुमारी थी ।यहाँ अनेक ऋषि मुनियों ने तपस्या की है ।

छत्तीसगढ़ के लिए मेरे सपने

हमारा प्रदेश छत्तीसगढ़ अनेक समुदाय जाति, धर्म आस्था के विविध पुष्पों से सुशोभित यह लुभावना उपवन आज भी मनमोहक सुगंध सर्वत्र फैला रहा है ।

1. शिक्षा का विकास :– हमारे छत्तीसगढ़ राज्य में गांव–गांव तक शिक्षा का प्रसार होना चाहिए ।हमारे राज्य में हर व्यक्ति पढ़ा लिखा होना चाहिए ।हर गांव के स्कूल में कम्प्यूटर की शिक्षा देनी चाहिये ।आज हर व्यक्ति का शिक्षित होना अति आवश्यक है ।अत: शिक्षा के स्तर को उन्नत बनाया जाये ।शिक्षा समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।शिक्षा ही हमारे ज्ञान का सृजन करती है।हमारे छत्तीसगढ़ में सभी को शिक्षित होना जरूरी है ।

2. कृषि संसाधनों का विकास :– हमारा छत्तीसगढ़ धान का कटोरा कहलाता है । यहां का मुख्य व्यवसाय कृषि है । यहाँ की अधिकांश जनता कृषक है ।इस स्थिति को देखते हुए सिंचाई के संसाधनों का विकास व उचित व्यवस्था करनी चाहिए ।धान इस क्षेत्र की प्रमुख फसल है ।अत: सिंचाई की दृष्टि से इस राज्य को प्रगतिशील होना चाहिए तभी कृषि का उत्पादन बढ़ेगा ।

3. पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखना :– हमारे छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यावरण को दूषित होने से बचाना होगा । वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण ही है ।पर्यावरण को स्वच्छ बताएं रखने के लिए अधिक से अधिक पेड़–पौधा लगाना होगा ।वन एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक साधन है ।सभी लोगों को चाहिए कि वे पर्यावरण को स्वच्छ बनाए तथा ऐसे कार्य न करें जिससे प्रदूषण की समस्या और अधिक न बढ़े और न ही वृक्षों की अंधाधुंध कटाई करें । जब तक लोग शिक्षित नहीं होगे तब तक मानव को अपनी जिम्मेदारी का एहसास नहीं होगा ।

4. सांस्कृतिक धरोहर को बचाए रखना :– हमारे राज्य की सांस्कृतिक एवं धरोहर को बचाए रखना होगा ।हमें अपनी संस्कृति के साथ–साथ दूसरे की संस्कृति का भी सम्मान करना होगा ।हमारे राज्य की जनता को ऊंच–नीच

के आपसी भेदभाव को भुलाकर सहिष्णुता एवं शांति भाव से रहना होगा ।क्योंकि –

मंदिर भी म से शुरू होता है,
मस्जिद भी म से शुरू होता है,
ये आदमी है दुपाया
जो आपस में अंतर का बीज बोता है ।

5 . खनिज संपदा :– हमारा छत्तीसगढ़ खनिज सम्पदा से परिपूर्ण है जिसका समुचित दोहन जरूरी है ।नहीं तो हमारे छत्तीसगढ़ राज्य का विकास सही ढंग से नहीं हो पायेगा ।अत: खनिज सम्पदा का समुचित दोहन जरूरी है ।

6 . छत्तीसगढ़ी बोली की महत्ता :– हमारे लिए यह गर्व बात है कि हमारी यह बोली हमारे राज्य के नाम पर बनी है । अत: इस राज्य के प्रत्येक निवासियों के लिए आवश्यक है कि वे अपनी बोली मातृभाषा के रूप में इस स्वीकार करें । जैसे हिन्दी अंग्रेजी का महत्व है वैसे छत्तीसगढ़ी भाषा को भी महत्व दिया जाये ।

7 . संवेदनशील जनप्रतिनिधि :– छत्तीसगढ़ राज्य का जन प्रतिनिधि ईमानदार, निष्ठावान व कुशल प्रशासक होना चाहिए जिससे छत्तीसगढ़ की जनता खुशहाल रह सके ।यह सिर्फ मेरा ही नहीं पूरे राज्य के निवासियों का सपना है । इन सपनों में छत्तीसगढ़ का विकास झलकता है ।यहां की सभी समस्याओं का हल करते ही छत्तीसगढ़ एक समृद्धशाली व विकासशील राज्यों में गिना जायेगा ।जब छत्तीसगढ़ का यह सपना पूर्ण होगा तभी छत्तीसगढ़ का स्वरूप सार्थक माना जायेगा ।

छत्तीसगढ़ महतारी की जग में महिमा भारी ।
विनती यही हमारी तू जग में हो प्यारी ।।
तुने ओढ़ी है धानी चुनरिया, तू मां है वसुंधरा ।
तेरे आंचल में ढके हैं हीरे ।।
तेरे गुणगान गाये बरखा की घटा कारी ।
है छत्तीसगढ़ महतारी की जग में महिमा भारी ।।

हम छत्तीसगढ़ माई का जितना गुणगान करें कम ही है ।हम सब को छत्तीसगढ़ के वासी होने पर गर्व है ।हमें अपने राज्य व देश की गरिमा को बनायें रखना चाहिए ।छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परम्परा को बनाये रखना चाहिए । जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी भी छत्तीसगढ़िया होने पर गर्व करे और पूरा देश में छत्तीसगढ़ का नाम रोशन हो ।

आओ पर्यावरण बचाएं

– कु. रितेश्वरी नेताम
बी.ए. प्रथम वर्ष

बदलें हम तस्वीर जहां की,
सुन्दर सा दृश्य बनाए ।
संदेश ये हम सब तक फैलाएँ,
आओं पर्यावरण बचाएँ ।

फैल रहा है प्रदूषण, कट रहा जंगल
कमजोर पड़ रहा है सबका तन ।
मिलकर हम सब कोई कदम उठाएं
संदेश ये हम सब तक फैलाएं
आओ पर्यावरण बचाएं ।

प्रयोग न करें गाड़ी का, पैदल चलने पर जोर दें
थैले रखें पर कपड़े का ।
प्लास्टिक को रखना छोड़ दें,
अंहकार छोड़ बातें ये हम अब समझाएँ ।
संदेश ये हम सब तक फैलाएँ
आओ पर्यावरण बचाएँ ।

खुद को बनाने में इतना वक्त लगा दो कि दूसरों की बुराई करने का वक्त ही ना मिले ।

अपनी खुशियों से दुनिया बदल दीजिए दुनिया से अपनी खुशियाँ मत बदलिए ।

स्वतंत्रता की लड़ाई

– कु. रेणुका गावडे
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत की थी स्वतंत्रता लड़ाई
जिसमें लड़ी थी लक्ष्मी बाई
मरते दम तक आह न बोली
यह भारत की बेटी टोली

भारत की थी पहली महिला
अंतरिक्ष यान पर चढ़ गई
कल्पना चावला नाम है जिनका
सफलता है जिनकी बोली
ये भारत की बेटी.....

पद भी राष्ट्रपति का
प्रतिभा पाटिल नाम था जिनका
भारत की विरासत बोली
ये भारत की बेटी.....

हाथ में पहने ग्लब्स वो पूरा
मैरीकॉम तो नाम है जिनका
खुद की सुरक्षा, नारी की रक्षा
देश सुरक्षा करना काम
ये भारत की बेटी.....

भारत ही है एक ऐसा देश
जिसमें है एकता, प्रेम विशेष
नारी शक्ति स्वरूपा भोली
हरदम सारी दुनिया बोली
ये भारत की बेटी.....

जीवन की सांस प्रदूषण मुक्त पर्यावरण

ग्लोबल वार्मिंग पर विशेष

– कु. प्रियंका जैन
एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर (इतिहास)

पर्यावरण के समक्ष मौजूद खतरों की फेहरिस्त तो बहुत लम्बी है लेकिन वर्तमान समय में पर्यावरण के सामने सबसे बड़ी समस्या जनसंख्या विस्फोट है । यूनाईटेड स्टेट्स सेंसस ब्यूरो के अनुसार विगत 12 मार्च 2012 को पूरे विश्व की जनसंख्या 7 अरब की पार कर गई। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए खाद्यान्न, जल और ऊर्जा उपलब्ध कराना अपने आप में एक बड़ी चुनौती होगी । इसके चलते प्रकृति का जिस तरह अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है दरअसल यहां पर्यावरण के लिये सबसे बड़े खतरे के रूप में उभर रहा है ।

विकास शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के चलते प्रत्येक वर्ष पूरे विश्व में लगभग 13 मिलियन हेक्टेयर तक का वन क्षेत्र खत्म हो जाता है । लगातार वनों के कटाव, ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन और मृदा प्रदूषण के फलस्वरूप ही ''ग्लोबल वार्मिंग'' की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है । ओजोन छतरी में छिद्र की वजह से कैंसर की संभावना भी बढ़ने लगी है । वायु प्रदूषण की वजह से अम्ल वर्षा भी होती है । प्रदूषण किसी भी तरह का हो, उसके कुछ दुष्प्रभाव तो तुरंत दिखते हैं और कई घातक प्रभाव कई वर्षों के बाद गंभीर रूप में सामने आते हैं । हम जापान के हिरोशिमा और नागासाकी में दशकों पहले हुए परमाणु बस विस्फोट के भयावह परिणाम आज भी देख सकते हैं । इसी तरह ग्रीन हाऊस गैसों से होने वाली ग्लोबल वार्मिंग को भी समझा जा सकता हैं दरअसल कुछ हानिकारक गैसें जैसे कार्बन डाइऑक्साइड CO_2, मिथेन, क्लोरो–फ्लोरो कार्बन, र्काबन मोनो ऑक्साइड आदि पृथ्वी की ऊपरी सतह पर इकट्ठा हो जाती है । वे सूर्य की किरणों की पृथ्वी से टकराने के बाद वापस वायुमण्डल के ऊपरी सतह में वापस जाने के रोक देती है । इसके फलस्वरूप वायुमण्डल निचली सतह जिसे '' जीवमण्डल '' कहते हैं, में तापमान बढ़ जाता है । इसे ही ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है ।

पृथ्वी की सतह पर रहने वाले जीवधारियों को बढ़े हुए तापमान के अनुकूल सामंजस्य स्थापित करने में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है । इसके अलावा क्लोरो–फ्लोरो कार्बन, मिथेन और क्लोरिन आदि गैस पृथ्वी के वातावरण की ऊपरी सतह पर मौजूद जीवनरक्षक ओजोन परत के क्षरण के लिये भी उत्तरदायी हैं जिससे हानिकारक पराबैंगनी किरणें सीधें पृथ्वी पर पहुँच कर मानव और अन्य जीवधारियों पर दुष्प्रभाव डाल रही हैं । पराबैंगनी किरणों के सीधे संपर्क में आने से त्वचा के कैंसर आदि का खतरा बढ़ता जा रहा है ।

आईपीसीसी रिपोर्ट के अनुसार अगर शीघ्र जल, वायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारकों को रोका या कम नहीं किया गया तो ग्लोबल वार्मिंग की वजह से 2050 तक समुद्रतटीय इलाके जलमग्न हो जायेंगे। वायु और जल प्रदूषण की वजह से तमाम तरह के घातक रोगों की चपेट में आने की खतरा हम पर मंडराने लगेगा ।

हमें अपनी जिम्मेदारी समझते हुए इसमें अपनी सहभागिता निभानी होगी । तभी हमारा वातावरण बनेगा प्रदुषण मुक्त और हमारी धरती बनी रहेगी ।

कहानी

मंज़िल

– अभिषेक कुमार टेकाम

एक रामप्रसाद नाम का दुकानदार था । उसका व्यवसाय बहुत अच्छा चलता था । रामप्रसाद की पत्नी का नाम सुमित्रा थी । दोनों का कोई संतान नहीं था । दोनों इस बात से काफी दु:खी थे । दोनों कई बार संतान प्राप्ति के लिए पूजा पाठ करवा चुके थे । इसके बाद भी दोनों का भगवान पर विश्वास बना हुआ था । दोनों के शादी को लगभग 7 साल होने को थे। रामप्रसाद के माता–पिता भी थे । रामप्रसाद के माता–पिता अपने पोता या पोती को अपने हाथों से खिलाना चाहते थे । माता–पिता की इस ललक को रामप्रसाद भली भांति समझता था ।

एक दिन सुमित्रा बाजार से कुछ समान खरीद कर ला रही थी । तभी सुनसान रास्ते में उसे एक नन्हा बच्चे की रोने की आवाज सुनाई दी । सुमित्रा व्याकुल हो गई । इतने सुनसान रास्ते में बच्चे की आवाज कहां से आ रही है । वह सोची उसने अपनी नज़र बायीं ओर घुमाई तो उसने बच्चे को पेड़ के नीचे पाया । सुमित्रा तुरंत उस बच्चे के पास गई । सुमित्रा ने तुरंत बच्चे को अपने गोद में उठाया । सुमित्रा के गोद मे आते ही बच्चा शांत हो गया । सुमित्रा ने उसके माता–पिता को ढूंढने की कोशिश की लेकिन उसके माता–पिता नहीं मिले । बहुत देर तक इंतजार करने पर भी उसके माता–पिता नहीं मिले। सुमित्रा को लगा की यह बच्चा अनाथ है। सुमित्रा बच्चे की लेकर घर चली गई । सुमित्रा ने घर पहुंचकर सारी बात परिवार वालों को बताती है । सुमित्रा के परिवार वाले बच्चे को देखकर खुश हो गये । रामप्रसाद बोला की मैं पिता बन गया । परिवार वालों ने इस बच्चे का नाम आशीष रखा । आशीष धीरे–धीरे बड़ा होता गया ।

आशीष बचपन से ही बुद्धिमान था । आशीष अपने कक्षा में अव्वल आता था । आशीष ने अपने गांव में आठवीं तक पढ़ाई की उसे बाकी की पढ़ाई के लिए उसे शहर जाना था । इसी बीच आशीष के पिता की मृत्यु हो गई । आशिष को अपने पिता के मृत्यु पर बहुत दु:ख हुआ, क्योंकि वह अपने पिता के बहुत करीब था । उसकी मां ने बताया कि तुम्हारे पिता तुम्हे एक डॉक्टर बनते देखना चाहते थे । लेकिन उनकी यह ख्वाहिश पूरी न हो पाई । आशीष ने संकल्प लिया की वह अपने पिता के इस ख्वाहिश को पूरा करेगा । आशीष आगे की पढाई के लिए शहर चला गया । आशीष ने शहर जाकर खूब पढ़ाई की, आशीष अपने कक्षा में पहले की तरह अव्वल आता रहा । आशीष ने 12 वी तक की पहाई शहर में पूरी की, आशीष आगे की पढाई के लिए विदेश चला गया । इसी बीच उसके दादा –दादी की एक कार एक्सीडेंट में मौत हो गई । आशीष अदंर से काफी टूट गया । घर की आर्थिक स्थिति भी बिगड़ गई । उसकी मां दूसरों के घर काम करने लगी । आशीष जब भी अपने दोस्तों को देखता उसे अपने दोस्तों के साथ घूमने का मन करता था । लेकिन उसे अपने माता द्वारा बताई गई बात याद आ जाती थी ।

आशीष MBBS की तैयारी करने लगा । जब एक्जाम का दिन आया । वह पूरी तैयारी के साथ एक्जाम देने चला गया और कुछ दिनों बाद जब उसका रिजल्ट आया तो वह अपने कालेज में प्रथम स्थान पर था । उसकी आँखों से आंसू आने लगे । वह अपना देश वापस आ गया । उसे अपने मां को देखकर काफी खुशी हुई । वह बोला मां मैं अपने पिता जी के सपने को पूरा कर दिया । आज वह बहुत ही खुशी से रहता है । सीख – " परिस्थितियां कैसी भी हो हमें अपने लक्ष्य से नहीं भटकना चाहिए क्योंकि हमारे परिवार की आशा और उम्मीद हम पर है "।

हमारी पृथ्वी

– कु. गनेश्वरी सलाम
एम.ए. द्वितीय सेमे. (भूगोल)

पृथ्वी कहती जननी हूँ तुम्हारी
आँख बंद कर देख, सामने खड़ी हूँ मैं
कहती है हम सभी से, मैं आजीविका हूँ तुम्हारी
एक चट्टान से टूटकर, बनी हूँ मिट्टी तुम्हारी ।

आकर समेट ले मुझे, यूँ पड़ी हूँ, मैं बेचारी
वितरण की इस प्रक्रिया में, थक रही हैं पृथ्वी तुम्हारी
कहती नहीं कुछ तुमसे, करती दुआ तुम्हारी ।

मैं बेचारी नहीं, यहाँ निश्चित है संसाधन तुम्हारी
विश्व के उदासीन तत्व लिये हो तुम, प्रकृति गुणकारी है तुम्हारी
तुम कहते हो मानव हूँ मैं, मान है तुम्हारी ।

पर उस वाक्य को समझ, उसमें लिखा है मानता हूँ मैं तुम्हारी
प्रतिशोध की अग्नि में, मैं नहीं
तकनीक की दक्षता जुड़ी है मुझसे, तू कहता है विद्वता है तुम्हारी ।

प्रकृति से तू तुझसे ऊपजी है संस्कृति, मैं यदि पिछड़जाऊ
तो क्या क्षमता है तुम्हारी
माना, मैंने नियोजन है परिवार है, वर्तमान की संकल्पना तुम्हारी
पर कब तक योजना देगी, साथ तुम्हारी ।

ऊर्जा संतुष्टि से भरी थी मैं, खेला तुमने परमाणु, जहरीले ले
सबका अंत निश्चित हैं, अंत ही आरंभ है हमारी ।

समय ना लगाओ यह तय करने में कि आपको क्या करना है
वरना समय खुद तय कर लेगा कि आपका क्या करना है ।

कापसी का ऐतिहासिक मंदिर

– लक्ष्मीकांत साहू
बी.ए. प्रथम वर्ष

हमारे भारत देश में अनेकों मंदिर व धार्मिक स्थल हैं। जिसमें से कुछ रहस्यमयी है तो कुछ चमत्कारी। ये तमाम मंदिर अपने किसी ना किसी विशेषताओं के लिए जाने जाते हैं। उन्हीं में से एक जो देवों के देव महादेव को समर्पित है तथा अपने रहस्य के लिए जाना जाता है, के बारे में चर्चा करेंगे। इस मंदिर के पीछे एक अनोखी झरना निकलती है जिसे यहां के बुजुर्ग चरण वाली मां के नाम से जानते हैं। उस रहस्य को ना तो आज तक कोई सुलझा पाया न हीं इसे कोई गलत साबित कर पाया है। दरअसल हम बात करने जा रहे हैं छत्तीसगढ़ राज्य के कांकेर जिले में स्थित एक छोटा सा गांव कांकेर से करीब 25 किलोमीटर "ग्राम कापसी" (चिहरी पारा) में स्थित मंदिर के सन्दर्भ में।

झरनें वाली माँ की जलधारा का रहस्य–ग्राम वासियों का कहना है कि वह झरना कापसी में स्थित "मावली पहाड़" जिसके अंदर से बहते हुए जमीन के अंदर अंदर होते हुए कई किलोमीटर तय करती हुई वह शिव मंदिर के पास झरना के रूप में बहती हुई नजर आती है।

मावली पहाड़ का रहस्य – बुजुर्गों द्वारा मावली पहाड़ का भी जिक्र किया गया है। जिसके अंदर गुफाएं हैं। इस गुफा में पहले के ग्राम बुजुर्ग "महर्षि पंडितों" के माध्यम से इस गुफा में "बली एवं पूजा पाठ" देकर घुसने का प्रयास किए थे जहां उन्हें गुफा के अंदर एक तालाब नजर आया जिसका जल एकदम नीले रंग का था। बुजुर्गों का कहना है कि वहां का जल कभी नहीं सूखता है। उनका यह भी कहना है कि वहां पर देवी–देवताओं का वास है। हर वर्ष मेले में उस पहाड़ गुफा के बाहर ग्रामवासी पूजा पाठ किया करते हैं।

शिव भगवान की होती है पूजा – यहां मंदिर में शिव जी की प्रतिमा स्थापित की गई है। जहां पर प्रतिवर्ष नवरात्रि के त्योहार पर 9 दिनों तक जोत जलाई जाती है एवं नौ दिनों तक जस–गीतों का आयोजन किया जाता है। यहां पर शिवरात्रि मेला का भी आयोजन किया जाता है जहां अलग–अलग देवी–देवताओं का आगमन होता है। मेले के पश्चात बड़े धूमधाम से देवी–देवताओं का विसर्जन किया जाता है। जिसके दर्शनार्थ श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में भीड़ उमड़ती है। लोग दूर–दूर से पूजा करने के लिए यहां आते हैं इस अवसर पर यहां भंडारे का आयोजन भी किया जाता है।

विशेषताएं – इस झरना का जल सुबह के समय गर्म होती है तथा जैसे–जैसे सूरज ढलते जाता हैं वैसे–वैसे जल ठंडा होते जाता है। यहां 12 महीनों तक जल बहते रहता है तथा झरना से लगातार पानी बहता रहता है। यह झरना कई वर्षों से बहता आ रहा है जो आगे जाकर चिनार नदी में मिलता है। यहां शिव जी की मूर्ति है। उस मूर्ति को शिवरात्रि के दिन या गुरु पूर्णिमा के दिन भगवान शंकर जी के मुख में दूध का अभिषेक कराया जाता है तो वह दूध शिवजी के मुंह में प्रवेश करता जाता है। वह दूध कहां जाता है किसी को पता नहीं चलता है।

महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार कारण एवं निवारण

– सोनम शर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

स्त्रियों के संदर्भ में भारतीय समाज में दो प्रकार के दृष्टिकोण पाये जाते हैं ।एक दृष्टिकोण समाज में स्त्री को पुरूषों के समकक्ष सम्मान एवं प्रस्थिति दिलाने के पक्ष में हैं, तो दूसरा दृष्टिकोण उन्हें पुरूषों से निम्नदर्जे की भावना रखता है ।अतः उन्हें अनेक अधिकारों से वंचित करने के पक्ष में है ।प्रथम दृष्टिकोण वाले नारी को शक्ति, ज्ञान और सम्पत्ति का प्रतीक मानते हैं, उसे दुर्गा, सरस्वती एवं लक्ष्मी के रूप में पूज्य मानते हैं ।उनके अनुसार स्त्री पुरूष की अर्धांगिनी है ।वे यह भी मानते हैं कि –

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात – जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है । यदि वास्तव में समाज में नारी को यही स्थान प्राप्त है, तो नारी के प्रति किसी भी प्रकार का अपराध, अत्याचार एवं हिंसा नहीं होना चाहिए था ।नारी के प्रति दूसरा दृष्टिकोण नारी को समाज में पुरूषों के समान अधिकार दिलाने का विरोधी है ।इसी कारण से समाज में नारी को उत्पीड़ित किया जाता है, उसका शोषण एवं दमन होता है, उसके प्रति हिंसा बरती जाती है ।उसके साथ बलात्कार किया जाता है, उसे प्रताड़ित किया जाता है, जलाया जाता है, मारा–पीटा जाता है और उसकी हत्या तक कर दी जाती है ।

नारी के प्रति किये जाने वाले अपराधों एवं दुर्व्यवहारों को देख कर ''मैथिलीशरण गुप्त''ने कहा है–

''नारी जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आँखों में पानी''

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के प्रकार –

(1) जिस हिंसा का उद्देश्य धन प्राप्त करना होता है, जैसे दहेज के लिए पत्नी को मारना–पीटना एवं यातनाएँ देना ।
(2) जिस हिंसा का उद्देश्य कमजोर पर सत्ता कायम करना होता है ।
(3) जिस हिंसा का उद्देश्य यौन सुख प्राप्त करना होता है ।
(4) जिस हिंसा का कारण तनावपूर्ण पारिवारिक परिस्थितियाँ होती है ।
(5) जिस हिंसा अपराधकर्ता के व्यक्तित्व संबंधी विकृति के कारण की जाती है ।
(6) जो हिंसा पीड़ित महिला द्वारा प्रेरित होती है ।

महिलाओं के विरूद्ध हिंसा का वर्गीकरण –

1. आपराधिक हिंसा – बलात्कार एवं अपहरण आदि ।
2. घरेलू हिंसा – दहेज संबंधी मृत्यु, पत्नी को पीटना, लैंगिक दुर्व्यवहार आदि ।
3. सामाजिक हिंसा – पत्नी एवं पुत्र वधु को मादा भ्रुण की हत्या के लिए बाध्य करना, दहेज के लिए तंग करना, महिलाओं से छेड़छाड़ एवं स्त्री को सम्पत्ति में हिस्सा न देना आदि ।

महिलाओं के प्रति हिंसा के कारण :–

(1) **संचार माध्यमों द्वारा नारी की विकृत छवि प्रस्तुत करना** – स्त्रियों पर बढ़ते अपराधों का मुख्य कारण संचार माध्यमों विशेषकर फिल्म तथा विदेशी चैनलों द्वारा दिखाई जा रही नारी की छवि है।

(2) **सामाजिक कुप्रथाएँ** – भारत में अनेक कुप्रथाएँ प्रचलित है जिनमें बाल विवाह, परदा प्रथा, विधवा एवं पुनर्विवाह का अभाव आदि प्रमुख है। इन कुप्रथाओं का शिकार महिलाओं को ही होना पड़ता है।

महिलाओं पर बढ़ते अपराधों के रोकथाम हेतु उपाय :–

(1) नारियों पर होने वाले अपराधों के मुकदमों की सुनवाई शीघ्र होना चाहिए तथा पीड़ित स्त्री को न्याय मिलने में विलम्ब नहीं होना चाहिए।

(2) महिला थानों तथा परिवार अदालतों को अधिक संख्या में खोला जाना चाहिए ताकि महिलाएँ बेझिझक होकर अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरूद्ध न्याय की माँग कर सकें।

कांकेर की गुमनाम धरोहर

रिसेवाड़ा का मंदिर

– संजीव कुमार
एम.ए.प्रथम सेमे.(इतिहास)

बस्तर में किसी भी तरह की कोई भी खोज कभी खत्म ना होने वाली खोज होती है। यहाँ के जंगलों, पहाड़ों और बियाबानों में आज भी कई रहस्य मौजूद है, जो इंतजार में है लोगों के सामने आने के लिये। बस्तर के अनगिनत ऐतिहासिक महत्व की धरोहरें आज भी जंगलों में छुपी पड़ी है। ऐसी अनजानी बहुमूल्य ऐतिहासिक धरोहरों के मामले कांकेर जिला बस्तर में आज भी प्रसिद्धता से अछूता सा है। कांकेर में बारहवी सदी में सोमवंशी राजाओं का शासन हुआ करता था। इन राजाओं में सिंहराज, बाघराज, कर्णराज जैसे बेहद शक्तिशाली राजा हुए। इन राजाओं ने अपने प्राचीन कांकेर राज्य में कई भव्य देवालयओं का निर्माण कराया था। ये प्राचीन मंदिर सोमवंशियों के वैभवशाली शासन का प्रतीक है। सोमवंशियों का इतिहास आज बस्तर के लोगों के लिये बेहद ही नया विषय जान पड़ता है। उस युग के इतिहास को जानने समझने का महत्वपूर्ण स्त्रोत है उनके द्वारा बनवाये मंदिर और मूर्तियां।

कांकेर के रिसेवाड़ा ग्राम में ऐसा ही एक सोमवंश युगीन प्राचीन मंदिर स्थित है जिसकी जानकारी से आज भी लोग अनजान हैं। ग्राम से कुछ दूरी पर खेतों को पार कर पहाड़ के नीचे वीराने में भगवान शिव का प्राचीन मंदिर स्थित है। यह मंदिर तालाब के पास स्थित है। मंदिर में सिर्फ गर्भगृह ही शेष है जिसमें उमा महेश्वर,गणेश, चामुंडा की दुर्लभ प्रतिमा स्थापित है। मंदिर आकार में भले ही मध्यम हो परन्तु सोमवंशियों के बनाये हुए मंदिरों का सुंदर उदाहरण है। मंदिर अनदेखी के चलते आज टूट फूट गया है। मंदिर का जल्द से जल्द संरक्षण कर इसे इसका मूलस्वरूप दिया जाना चाहिए। कांकेर जिले के रिसेवाड़ा ग्राम में किसी ग्रामीण के मदद से प्राचीन मंदिर का अवलोकन किया जा सकता है।

कोरोना वायरस

– राकेश कुमार
बी.एस–सी. प्रथम वर्ष

चीन से निकला कोरोना रोग
विश्व भर में दिखाया अपना प्रकोप,
लोगों में भी बढ़ा आक्रोश
बरतने लगे सावधानी हर–रोज
आए दिन मरने लगे लोग
खबरों में भी आने लगा रोग,
भारत में बढ़ने लगी दहशत
लोग भी होने लगे हैरत
बढ़ते कोरोना में लोगों का निकलना हुआ बंद
जीवन भी होने लगा मंद,
भारतीय अर्थव्यवस्था भी होने लगी ठप्प
पूरे भारत को कोरोना ने लिया अपने गिरफ्त
शिक्षा स्तर में होने लगी गिरावट
छात्रों में बढ़ने लगी शिकायत,
मास्क, सैनिटाइजर का हुआ उपयोग
कोरोना को भगाने में किया सहयोग
सरकार ने किया टीकाकरण का आयोजन,
लोगों में हुआ उत्साह का समायोजन
दुनिया फिर भी होने लगी बेहाल
फिर कोरोना ने दिया अपना नया चाल,
ओमीक्रॉन बढ़ाने लगा कदम
भारत फिर घिरने लगा हरदम,
लोग अपनाने लगे बड़ी सावधानियाँ,
तब कुछ कम होने लगी कोरोना की कहानियां ।।

लॉक डाउन

– कु. आरती जैन
बी. ए. प्रथम वर्ष

परिचय :– लॉकडाउन अर्थात बंद, चाहे वह भारत हो या चीन ऐसी स्थिति में जब पूरा देश बंद हो उसे लॉकडाउन कहते हैं। भारत में ऐसी स्थिति पहली बार देखी गई कि जब पूरा देश बंद था। लोग तो थे पर सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहता था, नुक्कड़ पर भी भीड़ नहीं लगती थी और चाय की दुकानों पर लोग गप्पे नहीं मारने आते थे। अगर कुछ था तो सन्नाटा और सन्नाटे को चीरती हुई पुलिस की गाड़ियों के सायरन। कुछ ऐसा आलम था लॉकडाउन में भारत का यह एक प्रकार की आपातकालीन थी जिसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर देखने को मिला।

क्यों किया गया लॉकडाउन :– भारत के साथ–साथ दुनिया के कई देशों में लॉकडाउन अपनाया गया। यह इसलिए ताकि देश की जनता को कोरोना वायरस महामारी से बचाया जा सके। आलम ऐसा था कि चारों तरफ लोग मर रहे थे और इसका संक्रमण भी बहुत तेजी से फैलता जा रहा था। केवल भारत ही नहीं पूरी दुनिया में लोग परेशान थे। इटली और स्पेन जैसे देश जिनकी मेडिकल की स्थिति दुनिया में बेहतरीन मानी जाती है, ऐसे देशों ने अपने हाथ खड़े कर दिए तो भारत की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। वहां जैसी स्थिति में ना आएं इसलिए भारत सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की। लॉकडाउन की स्थिति में सभी प्रकार के परिवहन (वायु, जल और स्थल) बंद कर दिए गए थे। सभी दुकानें फैक्ट्रियां कंपनियां आदि सब बंद थी। लॉकडाउन को कई चरणों में चलाया गया।

लॉकडाउन के विभिन्न चरण :– भारत में लॉकडाउन कुल चार चरणों में लागू किया गया था प्रत्येक चरण में कुछ न कुछ छूट दिए गए थे।

लॉक डाउन का पहला चरण :–पहले चरण का लॉकडाउन कुल 21 दिनों का था जो की 25 मार्च से शुरू होकर 14 अप्रैल तक चला। इसे संपूर्ण लॉकडाउन कहा गया, जिसमें केवल राशन–पानी की दुकानों को छोड़कर बाकी सभी प्रकार की दुकानें बंद थी। सभी प्रकार के यातायात के साधन एवं सार्वजनिक स्थानों पर जाना पूर्ण रूप से वर्जित था।

लॉकडाउन का दूसरा चरण :– दूसरा चरण 15 अप्रैल से लेकर 3 मई तक चला जो कि कुल 19 दिनों का था और बाकी सारे नियम वैसे ही थे।

लॉकडाउन का तीसरा चरण :– तीसरा चरण 4 मई से लेकर 17 मई तक प्रभावी रहा। इस चरण में अधिक संक्रमित और सबसे कम स्थानों को चिन्हित कर उन्हें रेड जोन व ग्रीन जोन में विभाजित किया गया और कम संक्रमित क्षेत्रों में कुछ ढ़ीलाई दी गई। तीसरे चरण में प्रवासी मजदूरों के लिए खास ट्रेन भी चलाई गई और विदेशों में फंसे भारतीयों को भी वापस लाया गया जिसे ऑपरेशन समुद्र सेतु नाम दिया गया।

निष्कर्ष :– लॉकडाउन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव देखने को मिले हैं। परंतु उद्देश्य कोरोना से लड़ना और उसे हराना ही है। कई देशों ने इनका समाधान ढूंढ लिया है। हमें देश की अर्थव्यवस्था के बारे में सोचना चाहिए और नए अवसरों की तलाश करनी चाहिए, जिससे हम जल्दी भरपाई कर सके परंतु साथ ही साथ हमें अच्छा भोजन करते रहना चाहिए, हाथों को समय–समय पर साबुन से धोते रहें, मास्क पहनना न भूले और दो–गज की दूरी जरूर बनाएं।

गौठान योजना

– लोमेन्द्र यादव
एम.ए. चतुर्थ सेमे. (समाजशास्त्र)

वर्तमान छत्तीसगढ़ शासन की कई जनोपयोगी योजनाओं में ''गौठान'' एक महत्वपूर्ण योजना है । गौठान योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि के स्तर को बढ़ावा देना है तथा घुमन्तु पशुओं को गौठान में रखकर उसकी उचित देखरेख करना है । गौठान योजना को 20 जुलाई 2020 को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आरंभ किया गया । इस योजना के माध्यम से पशुपालकों से उचित दाम पर गोबर की खरीद की जाती है एवं उस गोबर का गौठान में वर्मी कंपोस्ट का निर्माण किया जाता है ।भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के समान ही छत्तीसगढ़ अब जैविक राज्य बनने की ओर अग्रसर है ।

राज्य सरकार ने इस दिशा में मजबूती से कदम बढ़ा दिये है । ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को तेजी से मजबूत करने के लिए राज्य सरकार हरेली त्योहार से 'गोधन न्याय योजना' शुरू की है । 'गोधन न्याय योजना' के माध्यम से छत्तीसगढ़ की ग्रामीण परंपराओं के अनुरूप गांवों में एक ऐसी स्वचालित प्रणाली विकसित करने के प्रयास किये जा रहे हैं, जिसमें गांवों के सभी लोगों की भागीदारी होगी ।

किसान दूसरी फसल भी आसानी से ले सकेंगे ।कमजोर किसानों के पशुओं के लिए भी चारे की व्यवस्था और पशुओं की अच्छी देखभाल हो सकेगी ।गरूवा किसानों और पशुपालकों के लिए अब गरू (बोझ) नहीं बनेंगें, डेयरी के व्यवसाय और जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा तथा गांव का पर्यावरण भी सुधरेगा । कृषक परिवार से जुड़े छत्तीसगढ़ शासन ने छत्तीसगढ़ अर्थव्यवस्था की जमीनी हकीकत पर केन्द्रित 'सुराजी गांव योजना' की परिकल्पना की है ।जिस पर तेजी से अमल किया जा रहा है ।

शासन–प्रशासन के निर्देशन में किसानों से धान खरीदी, उनकी कर्जमाफी, राजीव गांधी किसान न्याय योजना और गोधन न्याय योजना जैसी अभिनव योजनाओं से प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी ।छत्तीसगढ़ राज्य के समाजिक आर्थिक ताने–बाने की स्थिति कुछ ऐसी है कि यहाँ छोटे और मध्यम किसानों की संख्या ज्यादा है, जिसके कारण कृषि प्रबंधन में कई जटिलताएं आती है ।पशुओं की खुले में चराई से फसल को नुकसान, पशुपालन की बढ़ती लागत, चारे की कमी, चरवाहों की अनुपलब्धता, रासायनिक खादों के बढ़ते प्रयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति पर पड़ने वाले विपरित प्रभाव जैसी इन जटिल समस्याओं के समाधान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए शुरू की गई सुराजी गांव योजना में पशुप्रबंधन के लिए गौठानों की व्यवस्था की गई है ।इन गौठानों को आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है ।

वे हाथ सदा पवित्र होते हैं जो प्रार्थना से ज्यादा सेवा और सहायता के लिए उठते हैं ।

ग्लोबल वार्मिंग

– वैशाली बघेल
बी.ए. प्रथम वर्ष

ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ :– हमारी पृथ्वी लगातार गर्म हो रही है ।सन् 1880 से लेकर अभी तक हमारी पृथ्वी के जमीनी हिस्से और महासागरीय भागों के तापमान में वृद्धि होती जा रही है और इनकी गति भी बढ़ती जा रही है । पृथ्वी की गर्म होने की प्रक्रिया को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं ।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण :– ग्लोबल वार्मिंग या पृथ्वी के तापमान में वृद्धि के लिए कार्बन–डाइऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रस आक्साइड और क्लोरो–फ्लोरो जैसी हानिकारक गैसें उत्तरदायी है और इन गैसों की उत्पत्ति के लिए हम मनुष्य और हमारी मानवीय क्रियाएँ जिम्मेदार हैं क्योंकि ये वाहन, रेफ्रिजरेटर और ए.सी. जैसी भौतिक सुख–सुविधाओं वाले साधनों जिनका हम अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते है, उन्ही से ये गैसें निकलती है ।इसके अन्य कारण जैसे वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग भी है ।

ग्लोबल वार्मिंग के दुष्परिणाम :– (1) रेगिस्तानों की संख्या में वृद्धि हो रही है।
(2) प्रवासी पक्षियों के स्थान परिवर्तन के समय में बदलाव आने लगा है ।
(3) पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले करीब 70 प्रजातियाँ लुप्त हो गयी है ।
(4) विश्व में समुद्र के किनारे बसे शहर जलमग्न हो रहे हैं ।
(5) पर्यावरण में बदलाव के कारण वर्षा की मात्रा में कमी, बाढ़, सूखे की स्थिति एवं स्वच्छ जल की कमी हुई है जिससे खाद्यान्नों की विश्वव्यापी समस्या उत्पन्न हुई है ।
(6) ग्लोबल वार्मिंग न केवल मनुष्य बल्कि सम्पूर्ण प्राणी जगत के लिए विनाशकारी है ।

ग्लोबल वार्मिंग रोकने के उपाय :– (1) कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट लाईट बल्ब का उपयोग ।
(2) कचरे का सही निपटारा ।
(3) इस्तेमाल न होने पर बिजली के उपकरण बंद रखें ।
(4) पेड़ लगायें और बचायें ।
(5) टपकते नल और पानी का बचाव ।
(6) बारिश के पानी का भण्डारण ।
(7) अपनी आवश्यकता सीमित रखें ।

निष्कर्ष – आज वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग तक विश्वव्यापी समस्या का रूप धारण कर चुका है जिसके लिए सभी देश अपने–अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं । वैसे तो ग्लोबल वार्मिंग रोकने के अनेक उपाय हैं किन्तु अग्रलिखित दो उपायों को हम अपने दैनिक जीवन में आसानी से अपनाकर ग्लोबल वार्मिंग रोकने में अपना योगदान दे सकते है, एक तो यह कि वृक्षारोपण करें और दूसरा यह कि जहाँ पर आवश्यकता ना हो वहाँ पर धुएँ निकलने वाले वाहनों का प्रयोग ना करें ।उसकी जगह सायकल का प्रयोग करें या पैदल चले जाएं ।यदि समय रहते इस पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो यह भविष्य के लिये विनाशकारी होगा ।

यदि ग्लोबल वार्मिंग को रोका नहीं जाएगा,
तो इस पृथ्वी पर कोई जीव बच नहीं पाएगा ।

संघर्ष से सफलता की कहानी

– प्रवीण कोरेटी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जब तक जीवन है तब तक संघर्ष है ।लाईफ हमेशा आसानी से नहीं गुजरती ।हर दिन कोई न कोई चुनौती, कोई न कोई संघर्ष लाइफ में आता है और आता रहेगा ।ऐसा कोई नहीं है जिसकी लाइफ में चुनौनियाँ न हो, दुख न हो, कठिनाई न हो, रूकावटें न हो, कोई अपनी नौकरी बचाने के लिये संघर्ष कर रहा है और कोई नौकरी ढूंढ़ने के लिए ।

सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।जीवन में इन दोनों का खासा महत्व है । असफलता से अधिकतर लोग घबराकर अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं, ऐसे में हमें बड़ों के संघर्ष से प्रेरणा मिलती है। जिसके सहारे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते हैं। महात्मा गांधी से लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, लाल बहादुर शास्त्री और राजेन्द्र प्रसाद जैसे बहुत से महापुरूष हुए हैं, जिनके जीवन से प्रेरणा ली जा सकती है। ये लोग भी कई बार बचपन से लेकर पढ़ाई और बाकि जीवन में असफल हुए पर हार न मानी।

बड़े लोगों की आत्मकथा या उनके संघर्ष के बारे में जान कर पता चलता है कि सफलता मेहनत के बाद ही मिलती है। इन बड़े लोगों की कहानी से हमें प्रेरणा मिलती है, उनकी राह में चलकर हम भी सफल हो सकते हैं।

युवावस्था में कैरियर से लेकर निजी संबंधों तक कई बार असफलता हाथ लगती है। काफी मेहनत के बाद भी काम्पीटिसन में सफलता नहीं मिलती। खेल, ऐक्टिंग, डांस और सिंगिंग जैसे कैरियर में भी असफलता ज्यादा और सफलता कम मिलती है। ऐसे में हम जब बड़े लोगों के संघर्ष को देखते हैं तो मन मजबूत हो जाता है। हम नये सिरे से मेहनत करने लग जाते हैं। इसके बाद हम दोहरी मेहनत से सफलता के लिए जुट जाते हैं ।सभी दिशा में किए गए प्रयास से सफलता मिलनी तय है।

असफलता में ही सफलता छिपी होती है। जरूरत इस बात की है कि हम अवश्य देखें की किन कारणों से असफलता मिली है। अगर हम सभी मायने में विचार करें तो साफ पता चल जाता है कि हम क्यों असफल हुए? कई बार सफलता के लिए हम खुद को जिम्मेदार ना मानकर दूसरे पर दोषारोपण करते हैं, जो सही नहीं है। जब तक हम खुद का सही तरह से आत्मविवेचन नहीं करेंगे तब तक हमें असफलता के कारण का पता ही नहीं चलेगा और उसे दूर कर हम सफलता की राह में आगे नहीं बढ़ सकते ।ऐसे में जरूरी है कि हम खुद अपना आत्मविवेचन करें ।

आमतौर पर युवाओं को लगता है कि हम पहली बार में ही सफल क्यों नहीं हो गए। यह सोच ठीक नहीं होती। यही हमें डिप्रेशन का शिकार बना देती है। बी. पॉजिटिव छोटा शब्द है, पर इसका असर गहरा है यह आगे बढ़ने की राह दिखाती है।

जीवन में सफलता संघर्ष के बाद ही मिलती है। संघर्ष के दौर में जो बातें निराशाजनक होती है। सफलता मिलने के बाद वही सब अच्छा लगने लगता है। उसकी यादें सुखद हो जाती है। हम जब तमाम फिल्म स्टारों की चकाचौंध भरी जिंदगी देखते हैं तो सोचते हैं कि इन लोगों का रहन–सहन कितना अच्छा है, लेकिन हमें उस समय यह पता नहीं होता की यह सफलता उन्हें कितने संघर्ष के बाद मिली है। ये लोग जब अपने बारे में बताते हैं तो

पता चलता है कि इनका जीवन भी संघर्ष भरा था। वे सड़क पर खड़े होकर खाना खाते थे, एक छोटे से घर में रहते थे, बस और ट्रेन में सफर करते थे। कई लोगो ने तो यहाँ तक बताया की वे संघर्ष के दिनों में कई–कई दिनों भूखे रहे। संघर्ष के जरिए ही सफलता का ताला खुलता है। बड़े लोगों के स्मरण हमें आगे बढ़ने के साथ–साथ निराशा भरे जीवन से बाहर निकलने काम भी करते हैं।

बड़े लोगों का जीवन परिचय सदा हमारी शिक्षा व्यवस्था का अंग रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह थी कि इससे बच्चों को पता चल जाता था कि महान लोग कैसे सफल हुए। पहले लोगों के पास अवसर कम और साधन सीमित होते थे। ऐसे में सफलता बड़ी मुश्किल से मिलती थी। प्रेरक प्रसंग, जीवनी और मार्गदर्शन कहानियों का जीवन में काफी महत्व होता है। इन्हें पढ़ने के बाद उत्साह का संचार होता है और निराशा का भाव खत्म हो जाता है।

छत्तीसगढ़ महतारी

– कु. गनेश्वरी सलाम
एम.ए. द्वितीय सेमे.(भूगोल)

घोड़े की नाल सी बनी, खड़ी हो तुम माँ छत्तीसगढ़ ।
हरे आँचल में हो लिपटी, मैंना जैसी बोली है तेरी ।
हसदेव नदी करती स्नान तेरी, कोरिया, कैमुर पहाड़ी से है निकली ।
करती बीच सुन्दर श्रृंगार, महानदी बेसिन है तेरी ।
उच्चाबच मूरत है तेरी, निहारती इसे तू केशकाल दर्पण पर ।
दिखा रूप जो तेरा सुंदर, तू खो गई बस्तर के दंडकारण्य पर ।
माँ तुम निकली शबरी नदी बनकर, भारतमाता की चरण स्पर्श करने ।
इसी बीच तुम्हारी, स्थानिक भिन्नता का विश्लेषण कर ।

विवाह संस्कार

– कु. रमिला सलाम
एम.ए.चतुर्थ सेमे.(समाजशास्त्र)

हिन्दू धर्म संस्कारों में 'त्रयोदश संस्कार' है । विद्याध्ययन के पश्चात् विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना होता है । यह संस्कार पितृ ऋण से उऋण होने के लिए किया जाता है । मनुष्य जन्म से ही तीन ऋणों से बंधकर जन्म लेता है – 'देव ऋण', ऋषि ऋण' और 'पितृ ऋण'। इनमें से अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञादिक कार्यों से 'देव ऋण', वेदादिक शास्त्रों के अध्ययन से ऋषि ऋण और विवाहित पत्नी से पुत्रोत्पत्ति आदि के द्वारा पितृ ऋण से उऋण हुआ जाता है ।

प्रमुख संस्कार

हिन्दू धर्म में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है । विवाह दो शब्दों से मिलकर बना है– वि + वाह । अतः इसका शाब्दिक अर्थ है–विशेष रूप से (उत्तरदायित्व का) वहन करना। "पाणिग्रहण संस्कार" को सामान्य रूप से "हिन्दू विवाह" के नाम से जाना जाता है । अन्य धर्मों में विवाह पति और पत्नी के बीच एक प्रकार का करार होता है, जिसे विशेष परिस्थितियों में तोड़ा भी जा सकता है । परंतु हिन्दू विवाह पति और पत्नी बीच जन्म–जन्मांतरों का सम्बंध होता है, जिसे किसी भी परिस्थिति में नहीं तोड़ा जा सकता । अग्नि के सात फेरे लेकर और ध्रुव तारे को साक्षी मान कर दो तन , मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन में बंध जाते हैं । हिन्दू विवाह में पति और पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध से अधिक आत्मिक सम्बन्ध होता है और इस सम्बन्ध को अत्यंत पवित्र माना गया है ।

उद्देश्य

श्रुति का वचन है– दो शरीर, दो मन और बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं का समन्वय करके अगाध प्रेम के व्रत को पालन करने वाले दंपति उमा–महेश्वर के प्रेमादर्श को धारण करते हैं, यही विवाह का स्वरूप है। हिन्दू संस्कृति में विवाह कभी ना टूटने वाला एक परम पवित्र धार्मिक संस्कार है, यज्ञ हैं । विवाह में दो प्राणी (वर–वधु) अपने अलग अस्तित्वों को समाप्त कर,एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं और एक–दूसरे को अपनी योग्यताओं एवं भावनाओं का लाभ पहुँचाते हुए गाड़ी में लगे दो पहियों की तरह प्रगति पथ पर बढते हैं । यानी विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन है, जिसका उद्देश्य मात्र इंद्रिय–सुखभोग नही, बल्कि पुत्रोत्पादन, संतानोत्पादन कर एक परिवार की नींव डालना है ।

विवाह प्रणाली

विवाह संस्कार सृष्टि के आरंभ में विवाह जैसी कोई प्रथा नहीं थी । कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री से यौन–संबध बनाकर संतान उत्पन्न कर सकता था । पिता का ज्ञान न होने से मातृपक्ष को ही प्रधानता थी तथा संतान का परिचय माता से ही दिया जाता था । यह व्यवस्था वैदिक काल तक चलती रही । इस व्यवस्था को परवर्ती काल में ऋषियों ने चुनौती दी तथा इसे पाशाविक संबंध मानते हुए नये वैवाहिक नियम बनाए । ऋषि श्वेतकेतु का एक संदर्भ वैदिक साहित्य में आया है कि उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिए विवाह प्रणाली की स्थापना की और तभी से कुटुंब–व्यवस्था का श्री गणेश हुआ । आजकल बहुप्रचलित और वेदमंत्रों द्वारा संपन्न होने वाले विवाहों को 'ब्राह्यविवाह' कहते हैं । इस विवाह कि धार्मिक महत्ता मनु ने इस प्रकार लिखी है ।

दश पूर्वान् परान्वश्यान् आत्मनं चैकविंशकम् ।
ब्राम्ही पुत्रः सुकृतकृन् मोचये देनसः पितृन्॥

अर्थात 'ब्राह्यविवाह' से उत्पन्न पुत्र अपने कुल की 21 पीढ़ियों को पाप मुक्त करता है – 10 अपने आगे की, 10 अपने से पीछे और

एक स्वयं अपनी । भविष्य पुराण में लिखा है कि जो लड़की को अलंकृत कर ब्राह्मविधि से विवाह करते हैं, वे निश्चय ही अपने सात पूर्वजों और सात वंशजों को नरकभोग से बचा लेते हैं । भारतीय–संस्कृति में अनेक प्रकार के विवाह प्रचलित रहे हैं । मनुस्मृति के अनुसार विवाह–ब्राम्ह, देव, आर्ष, प्राजापत्य, असुर, गंधर्व,राक्षस और पैशाच 8 प्रकार के होते हैं । उनमें से प्रथम 4 श्रेष्ठ और अंतिम 4 क्रमशः निकृष्ट माने जाते हैं। विवाह के लाभों में यौनतृप्ति, वंशवृद्धि, मैत्रीलाभ, साहचर्य सुख, मानसिक रुप से परिपक्वता, दीर्घायु, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति प्रमुख है । इसके अलावा समस्याओं से जूझने की शक्ति और प्रगाढ प्रेम संबध से परिवार में सुख–शांति मिलती है । इस प्रकार विवाह–संस्कार सारे समाज के एक सुव्यवस्थित तंत्र का स्तम्भ है ।

हिन्दू विवाह भोगलिप्सा का साधन नहीं, एक धार्मिक–संस्कार है । संस्कार से अंतः शुद्धि होती है और शुद्ध अंतःकरण में तत्त्वज्ञान व भगवतप्रेम उत्पन्न होता है, जो जीवन का चरम एवं परम पुरुषार्थ है । मनुष्य के ऊपर देवऋण, ऋषिऋण एवं पितृऋण – ये तीन ऋण होते हैं । यज्ञ–यागादि से देवऋण स्वाध्याय से ऋषिगण तथा विवाह करके पितरों के श्राद्ध–तर्पण के योग्य धार्मिक एवं सदाचारी पुत्र उत्पन्न करके पितृऋण का परिशोधन होता है । इस प्रकार पितरों की सेवा तथा सदधर्म का पालन करने की परंपरा सुरक्षित रखने के लिए संतान उत्पन्न करना विवाह का परम उद्देश्य है । यही कारण हैं कि हिन्दु धर्म में विवाह को एक पवित्र–संस्कार के रूप में मान्यता दी गयी है ।

कहानी

निराला बगीचा

– कु. वैशाली बघेल
बी.ए.प्रथम वर्ष

राजू अपने माता–पिता के साथ दिल्ली में तीन मंजिला मकान में रहता है ।एक दिन राजू दादा–दादी को अपने साथ दिल्ली ले आया ।सभी ने उनकी खूब सेवा की ।कुछ दिनों के बाई दादा–दादी का मन शहर से ऊब गया ।उन्होनें राजू से कहा, ''हम गाँव वापस जाना चाहते हैं ।वहाँ खुली हवा है, ताजी सब्जियाँ हैं।यहाँ तो आस–पास पेड़ भी नहीं हैं ।'' राजू ने दादा जी की बातों को ध्यान से सुना ।उसने दादा–दादी से पूछा यदि मैं घर मे ही पेड़ और कुछ ताजी सब्जियाँ बो दूँ तो क्या आप गाँव नहीं जाएंगें ? राजू की बात सुनकर दोनों हँसे और बोले तुम यह कैसे करोगे? राजू बोले ''आप बस देखते जाइए ।'' राजू ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर घर की छत के एक हिस्से में मिट्टी डाली और उसमें टमाटर, हरी मिर्च, लौकी, तोरई और बैंगन के बीज बो दिए ।साथ की दूसरे हिस्से में गुलाब, गेंदा, चम्पा और तुलसी के पौधे भी लगा दिए ।अब दादा–दादी रोज छत पर जाकर खुली हवा का आनंद लेते हैं ।

गीत

(राष्ट्रीय एकता शिविर के अनुभव पर आधारित)

-कु. विनिता तेता
रा.से.यो. स्वयं सेवक

ये शिविर था सात दिनों का, पर दिलों को जोड़ता चला गया ।
प्रांत, जात, भाषाओं की सीमाओं को मिटाता गया साथ मिलकर खाना,
साथ में बतियाना । नाचना, गाना और मौज मस्ती मनाना
पता नहीं अनजानों से कब दिल का ये रिश्ता जुड़ गया ।
यूं देखते यूं, सीखते, जिंदगी का रूख ही मुड़ गया ।
कोई कहाँ से आया है, ये जरूरी था ही नहीं ।
थी जरूरी बस एक बात यही ।
जोड़ना है देश को मिलकर हमें, झुकने देश को हम देंगे नहीं ।
युवाओं का ये संग्राम, दुनिया ये देखता रहा ।
दोस्तों के बीच रहकर, हर कोई खुश होता रहा ।
कई मुश्किलें आती थीं, पर हल हमारे पास था ।
एक मुस्कुराहट के साथ, बढ़ती रही ये मित्रता ।
छूटा साथ सभी का, पर कोई दिल से मिटा नहीं ।
दोस्ती इतनी गहरी की, धागा ये टूटा नहीं ।
भारत विश्व गुरू होगा, यही अरमान मन में है ।
एकता के साथ चलते जाना है अब हमें ।
यही मंत्र, यही तंत्र ये सात दिनों का पर्व सीखा गया ।
हर सीमा को तोड़कर, सबको खूब ये मिला गया ।
जाते जाते अश्क था आंखों में और फिर मिलने की उम्मीद भी ।
यही प्रार्थना माता भगवती, स्वस्थ समर्थ रहें सभी ।
कहे तारिणी आपकी याद आती है ।
फिर कब मिलेंगे ये चाह रूलाती है ।
मिलेंगे एक दिन सब, खड़े होंगे देश के लिए ।
जाति, धर्म, प्रांत और बोली को भुलाकर,
एकता के संग, तिरंगा हाथों में लिए ।
विश्व पटल पर हम सब लहराएंगे उसे,
वन्दे मातरम् कहते हुए ।
हम सब मिलकर बनाएंगे श्रेष्ठ भारत,
ज्ञान विज्ञान और वेद शास्त्रों को संग लिए ।
वन्दे मातरम् ।

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,कांकेरछ.ग.
महाविद्यालयीन परिवार सत्र 2021-22

बायें से दायें–प्रो.नवरतन साव (संपादक) डॉ.श्रीमती बसंत नाग (सह–संपादक), डॉ.सरला आत्राम (प्राचार्य), डॉ.अर्चना सिंह (संपादक) डॉ.निधि भट्ट (सह–संपादक)

महाविद्यालय द्वारा वृद्धाश्रम, नांदनमारा में कम्बल वितरण

** एम.एस-सी. (रसायन शास्त्र) के विद्यार्थियों द्वारा प्रायोगिक कार्य **

** एम.एस-सी. (भू विज्ञान) के विद्यार्थियों द्वारा प्रायोगिक कार्य **

डॉ.सरला आत्राम (प्राचार्य) एवं ले.विजय प्रकाश साहू के साथ कैडेट्स

प्रतिवेदन
समाजशास्त्र विभाग

– डॉ. व्ही. के. रामटेके
विभागाध्यक्ष

समाजशास्त्र विषय समाज के सभी अंगों का अध्ययन करता है। यह स्वतंत्र विषय नहीं है हम सभी इनसे अछूते नहीं है । यह विषय समाज के सर्वांगीण विकास के लिये कृत संकल्पित है। इस महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग सन् 1983 में अपने अस्तित्व में आया । वह नन्हें बीज के रूप में अंकुरित हुआ था । आज विशाल वृक्ष के रूप में पुष्पित और पल्लवित होकर अपने छत्र–छाया में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण तथा विकास में अपनी अहम् भूमिका का निर्वाह कर रहा है । अपनी गौरवशाली परम्परा के अनुरूप समाजशास्त्र विभाग द्वारा समय समय पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनके परिणाम उत्साह जनक रहे हैं –

पाक कला एवं अपशिष्ट पदार्थों का सदुपयोग

1. शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित रूप से विद्यार्थियों की लगनशीलता अध्यापन की गहन रूचि, गंभीरता के कारण एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने बस्तर विश्वविद्यालय द्वारा घोषित प्रावीण्य सूची में आठ विद्यार्थियों ने अपना स्थान बनाया है जिनमें भगवान दास पटेल, कु. नेहा साहू, कु. डिम्पल, कु.रोशनी साहू, कु. टिकेश्वरी, लोमेन्द्र यादव, कु. लुमा एवं कु. ममता का नाम उल्लेखनीय है । पुनित राम उइके के सत्र 2021 में स्वर्ण पदक प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है ।

2. समाजशास्त्र विषय में शोध का सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि यह मानव ज्ञान को सही दिशा प्रदानकर उन्हें विकसित और परिमार्जित करने के साथ–साथ योजना बनाने में सहायक सिद्ध होता है । इन्हीं उद्देश्य की पूर्ति हेतु 48 विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर तथ्यों का संग्रह करके अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है ।

3. समाजशास्त्र विषय समाज की सुरक्षा और संरक्षण हेतु भी जाना जाता है ।पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण, स्वास्थ्य संरक्षण हेतु रक्तदान भी विद्यार्थियों के द्वारा किया गया है । कु. भारती पटेल, पुनितराम उइके, भगवानदास पटेल, पिंकेश्वर साहू, अभिलाल वोगा का योगदान सराहनीय है ।

4. सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के व्यंजन प्रतियोगिता आयोजित की गयी ।छ.ग. व्यंजनों की मिठास एवं सुस्वाद को युवा वर्ग तक पहुँचाकर फॉस्टफूड के दुष्परिणामों से अवगत कराया गया ।

5. विभाग के प्राध्यापकों ने अपनी लेखन क्षमता एवं शोधकार्यों के प्रति अभिरूचि को प्रदर्शित किया । डॉ.(श्रीमती) बसंत नाग सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र सत्र के दौरान 04 अंतर्राष्ट्रीय शोधपत्र, 01 पुस्तक का प्रकाशन भी किया ।स्व. डॉ. के.आर.ध्रुव ने एक पुस्तक प्रकाशित किये, डॉ. बसंत नाग शोध निर्देशक प्रदान के रूप में भी पीएच–डी. कार्यों में निर्देशन कर रही हैं। विभागाध्यक्ष डॉ. विजय रामटेके, स्व. डॉ. के.आर. ध्रुव, डॉ.(श्रीमती) बसंत नाग के द्वारा वेबीनार, सेमीनार में अपनी सक्रिय सहभागिता कर विभाग की सार्थकता को दर्शाया ।

6. पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिये जागरूकता अभियान में भागीदारी के अलावा अपशिष्ट पदार्थो से कलात्मक एवं उपयोगी वस्तुओं का निर्माण विद्यार्थियों के द्वारा किया गया ।

समाजशास्त्र विभाग भविष्य में भी विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों को दिशा निर्देश प्रदान करने के लिये प्रयासरत है ।

मंजिल चाहे कितनी भी ऊँची क्यों ना हो उस मंजिल का रास्ता हमेशा पैरों के नीचे ही होता है ।

राजनीति शास्त्र–विभाग

– डॉ. लक्ष्मी लेकाम
विभागाध्यक्ष

महाविद्यालय के स्थापना सत्र 1962 से ही स्नातक स्तर पर राजनीति विज्ञान विषय का अध्यापन कार्य प्रारंभ था। स्नातकोत्तर कक्षाएं वर्ष 1975 से प्रारंभ हुई तब से इसकी लोकप्रियता बनी हुई है। राजनीति विज्ञान विभाग में विभागाध्यक्षों की सूची निम्नानुसार है –

1. प्रो. एम. के. व्यास
2. डॉ. श्रीमती सरला आत्राम
3. डॉ. श्रीमती लक्ष्मी लेकाम

इस महाविद्यालय से जिन छात्रों ने राजनीति विज्ञान में अध्ययन किया है वे राजनीति में अपनी सक्रिय भूमिका दे रहे हैं तथा प्रशासनिक पदों पर भी कार्यरत हैं। वर्तमान में राजनीति विज्ञान में 03 पद स्वीकृत हैं जिसमें प्राध्यापक का पद रिक्त है। जिस पर संविदा नियुक्ति की गई है। सहायक प्राध्यापक के पद पर डॉ श्रीमती लक्ष्मी लेकाम एवं डॉ श्रीमती कमला ठाकुर कार्यरत हैं। प्राध्यापक पद के विरुद्ध अतिथि प्राध्यापक श्री कोमल सिंह भलावी कार्यरत हैं। सत्र 2021–22 में बीए भाग एक में 217, भाग दो में 170 तथा भाग तीन में 208 छात्र संख्या है।

विभाग द्वारा नवांगतुक विद्यार्थियों का स्वागत समारोह

स्नातकोत्तर स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली का प्रारंभ 2014–15 से हुआ। वर्तमान में एमए द्वितीय सेमेस्टर में 32 एवं चतुर्थ सेमेस्टर में 23 विद्यार्थी अध्ययन रत हैं। राजनीति विज्ञान विभाग में सत्र 2021–22 के लिए परिषद् का गठन किया गया। परिषद् के संरक्षक प्राचार्या डॉ श्रीमती सरला आत्राम, विभागाध्यक्ष एवं मार्गदर्शक डॉ श्रीमती लक्ष्मी लेकाम, परिषद् प्रभारी डॉ श्रीमती कमला ठाकुर तथा मार्गदर्शक के रूप में अतिथि प्राध्यापक श्री कोमल सिंह भलावी ने योगदान दिया। परिषद् के अध्यक्ष श्री गोविंदा मंडावी (एमए तृतीय सेमेस्टर), उपाध्यक्ष सुश्री सुफिया खान (एम.ए. प्रथम सेमेस्टर) तथा कोषाध्यक्ष सुश्री सोनल गुप्ता (एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर) हैं।

परिषद् के द्वारा प्रति सप्ताह समसामयिक विषयों पर सेमिनार, वादविवाद, निबंध तथा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है।

शोधकर्ताओं के लिए शोध की अपार संभावनाओं को देखते हुए एमए चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों को लघु शोध प्रबंध (प्रोजेक्ट कार्य) प्राध्यापकों के सफल निर्देशन में करवाया जाता है। इस प्रकार के कार्य से संबंधित क्षेत्र की समस्याओं से विद्यार्थी रूबरू होते हैं और उसके निराकरण का प्रयास भी किया जाता है। राजनीति विज्ञान विभाग को शहीद महेन्द्र कर्मा विश्विद्यालय जगदलपुर बस्तर द्वारा शोध केंद्र के रूप में मान्यता दी गई है। विभागाध्यक्ष डॉ श्रीमती लक्ष्मी लेकाम के निर्देशन में चार शोधकर्ता पंजीकृत हैं, जिनका शोधकार्य प्रगति पर है।

हिंदी–विभाग

– डॉ. एस. आर. बंजारे
विभागाध्यक्ष

भानुप्रताप देव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की स्थापना सन 1987– 88 में हुई है । वर्तमान सत्र 2021 – 22 में एम. ए. हिंदी प्रथम/द्वितीय सेमेस्टर मैं 35 विद्यार्थी और तृतीय/चतुर्थ सेमेस्टर में 15 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। बी. ए. प्रथम वर्ष में 212, द्वितीय वर्ष में 126 , और तृतीय वर्ष में 194 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। महाविद्यालय के हिंदी विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने एन .सी .सी., एन .एस .एस. ,खेलकूद, साहित्य इत्यादि क्षेत्रों में महाविद्यालय और विभाग को गौरवान्वित किया है ।

वर्तमान में विभाग में 03 नियमित सहायक प्राध्यापक और 01 अतिथि सहायक प्राध्यापक कार्यरत हैं । विभागाध्यक्ष डॉ एस आर बंजारे के कुशल मार्गदर्शन , सहयोगी श्री एन .आर .साव एवं परिषद प्रभारी श्री विजय प्रकाश साहू के कुशल संचालन में विद्यार्थी विविध कार्यक्रमों में अपनी रुचि एवं सक्रियता से प्रतिभा का विकास कर रहे हैं ; जिसमें साहित्यिक प्रश्न मंच ,परिचर्चा ,वाद – विवाद, कविता पाठ ,कहानी पाठ ,तात्कालिक भाषण जैसे व्यक्तित्व विकास प्रतियोगिता शामिल है। हिंदी साहित्य परिषद महाविद्यालय में साहित्य सृजन के लिए वातावरण बनाने एवं महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की अंतर्भूत प्रतिभा को उभारने का निरंतर कार्य कर रहा है ।

हिंदी विभाग में साहित्य परिषद का कार्यक्रम

विगत 2 वर्षों से कोरोना कॉल होने के कारण ऑफलाइन कक्षाएं बाधित हुई फिर भी ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की जाती रही। वर्ष का आधा समय ऑफलाइन कक्षाओं के लिए मिला उसमें प्रति वर्ष की भांति हिंदी साहित्य परिषद का गठन किया गया और साहित्यिक गतिविधियां संचालित की गई।

महाविद्यालय का हिंदी विभाग शहीद महेंद्र कर्मा बस्तर विश्वविद्यालय के अंतर्गत शोध केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। शोध निर्देशक के रूप में डॉ एस आर बंजारे और पीएचडी शोध छात्र के रूप में पांच शोधार्थी प्रवेश लेकर शोध कार्य कर रहे हैं। यह हिंदी विभाग की विशेष उपलब्धि है।

इस वर्ष हिंदी साहित्य परिषद का गठन एवं स्वागत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सरला आत्राम ने कहा कि बगैर भाषा के मनुष्य गूंगा होता है तथा व्यक्तित्व को समृद्धशाली बनाने में भाषा का महत्व पूर्ण स्थान है । यद्यपि वे राजनीति विज्ञान के विद्यार्थी एवं प्राध्यापिका रही हैं लेकिन हिंदी साहित्य से उनका गहरा जुड़ाव रहा है। उन्होंने विष्णु सखाराम खांडेकर की महाभारत कालीन सर्वकालिक पात्र कर्ण के जीवन पर आधारित ख्याति प्राप्त उपन्यास ' मृत्युंजय' एवं ' महाश्वेता देवी की ' प्रारब्ध ' उपन्यास का उल्लेख करते हुए कहा कि इन दोनों पुस्तकों का उनके व्यक्तित्व निर्माण में अहम भूमिका रही हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को ऐसे प्रेरक पुस्तकों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया और महाविद्यालय हिंदी विभाग के गौरवशाली परंपरा को याद करते हुए कहा कि महाविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व विद्यार्थी आज यहां सहायक प्राध्यापक के पद पर पदस्थ हैं जो कि अनुकरणीय हैं । उन्होंने प्रो. नवरतन साव, प्रो. विजय प्रकाश साहू, अतिथि व्याख्याता डॉ सीमा परिहार को बधाई दी ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. एस. आर. बंजारे ने बताया कि वर्तमान समय में हिंदी में एम. ए . करने वाले विद्यार्थियों के लिए रोजगार की अनंत संभावनाएं हैं, जिनमें पत्रकारिता, अनुवाद एवं इंटरप्रिटेशनर ,संपादन ,पटकथा लेखन, भाषण लेखन ,प्रकाशन क्षेत्र, टीवी ,फिल्म ,रेडियो, मार्केटिंग, पर्यटन एवं शिक्षा के क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए अनेक अवसर उपलब्ध हैं। प्रो. नवरत्न साव ने कहा कि हिंदी साहित्य परिषद एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी साहित्यिक प्रतिभा को निखार कर व्यक्तित्व विकास कर सकते हैं । अतिथि व्याख्याता डॉ सीमा परिहार ने अपने विद्यार्थी जीवन का अनुभव बांटते हुए यह मुकाम हासिल करने के लिए हिंदी विभाग के प्राध्यापकों को श्रेय दिया और विद्यार्थियों को अपने गुरुजनों के दिखाए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया ।

परिषद् प्रभारी प्रो. विजय प्रकाश साहू ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए परिषद के कार्य एवं उद्देश्यों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के विद्यार्थी अधिक संख्या में उपस्थित रहे । अंत में डॉ. सरला आत्राम एवं डॉ सीमा परिहार को शाल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। यशवंत कोड़ोपी, वीरेंद्र कोला, पुष्पा पटेल, पल्लवी मरसकोले, प्रतिभा जैन, जुली राय, सौरभ सलाम, राजकुमार नेताम, पुष्पा नाग,महेश्वरी नाग, राजेश नेताम, वैशाली बघेल, कामाक्षा सुद्दलवार, ऐश्वर्या साहू आदि का सक्रिय सराहनीय सहयोग रहा ।

अर्थशास्त्र–विभाग

– डॉ. एल.आर. सिन्हा
विभागाध्यक्ष

अर्थशास्त्र एक मानवीय विज्ञान है । इसका मूल उद्देश्य मनुष्य का विकास करना है, मनुष्य के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना और मनुष्य के कल्याण में वृद्धि करना है । अर्थशास्त्र में सीमित संसाधनों के इष्टतम एवं अनुकूलतम उपयोग का अध्ययन किया जाता है । अर्थशास्त्र विभाग महाविद्यालय के गठन से ही अस्तित्व में रहकर प्राचीनतम एवं संपन्न विभाग रहा है जहां स्नातक एवं स्नातकोत्तर की कक्षाएं संचालित हो रही है । विभाग में प्राध्यापकों– विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता के कारण उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त होते रहे हैं –

1. शिक्षा के क्षेत्र में कु. भारती साहू (2013), कु. अनिता मरकाम (2017), कु. विनिता चोपड़ा (2019), सूर्य प्रताप सिंह (2000), कु. गीता साहू (2021) ने विश्वविद्यालय प्रावीण्य सूची में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है । इसके साथ ही विश्वविद्यालय प्रावीण्य सूची में 2020 में पांच विद्यार्थियों ने स्थान प्राप्त किया तथा 2021 के विश्वविद्यालय प्रावीण्य सूची में स्वर्ण पदक के साथ विभाग के 7 विद्यार्थियों ने अपना स्थान बनाया है, यह विभाग के साथ ही पूरे महाविद्यालय के गौरव की बात है ।
2. अर्थशास्त्र विषय में शोध के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने हेतु समय–समय पर अनेक प्रोजेक्ट कराया जाता है जिससे प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण कर तालिका एवं चित्रों के माध्यम से विद्यार्थी अपना परिणाम प्रस्तुत करते हैं । इससे विद्यार्थियों को शोध के प्रति जागरूकता बढ़ती है ।
3. विभाग में प्रत्येक शनिवार को विद्यार्थियों के द्वारा सेमीनार प्रस्तुत किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में विषय के प्रति गंभीरता रहती है एवं वे विषयवस्तु को समझ कर समझाने की कला सीखते हैं । इससे निश्चित रूप से उनकी वाक्कुशलता बढ़ती है और वे अपने भावी संघर्ष के लिए आवश्यक एक महत्वपूर्ण कला में पारंगत होते हैं ।
4. अर्थशास्त्र ऐसा विषय है जिससे कोई भी वर्ग अछुता नहीं रहता है । विद्यार्थियों को राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर एवं अंतराष्ट्रीय स्तर के आर्थिक मुद्दों पर जानकारी एवं चर्चा की जाती है ।
5. विभाग के प्राध्यापक के द्वारा शोध निर्देशन एवं शोध पत्र लेखन के द्वारा विभाग में शोध कार्य निरंतर संपन्न हो रहा है । विभागध्यक्ष डॉ. एल. आर. सिन्हा के निर्देशन में तीन शोधार्थियों ने अपना शोध कार्य पूर्ण कर लिया है ।

अर्थशास्त्र विभाग भविष्य में भी विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थियों को दिशा निर्देश प्रदान करने के लिए प्रयासरत है ।

विभाग द्वारा नवांगतुक विद्यार्थियों का स्वागत समारोह

भूगोल–विभाग

– डॉ. डी.एल. पटेल
विभागाध्यक्ष

- अतीत की झरोखे से –
- विभाग की स्थापना –
- अकादमिक प्रोत्साहन हेतु सर्वोच्च अंक प्राप्त विद्यार्थी को गोल्ड मैडल स्वर्ण मण्डित पदक द्वारा – डॉ.डी.एल.पटेल विभागाध्यक्ष, भूगोल
  स्मृति में – स्व. रामप्रसाद पटेल (पिताश्री)

सेमेस्टर पद्धति में सर्वोच्च अंक प्राप्त मेधावी विद्यार्थियों की सूची

क्र.	सत्र	नाम	प्राप्तांक / पूर्णांक	प्रतिशत	विभागीय मेडल	महाविद्यालय मेडल	विश्वविद्यालय मेडल
1.	2016–17	सुशिला नरेटी	1466 / 2000	73.73	प्रथम	प्रथम	प्रथम
2.	2017–18	सुप्रिया विश्वास	1517 / 2000	75.85	प्रथम	प्रथम	प्रथम
3.	2018–19	विरेन्द्र कुमार	1517 / 2000	75.85	प्रथम	प्रथम	प्रथम
4.	2019–20	माधुरी निषाद	1547 / 2000	77.35	प्रथम	–	प्रथम
5.	2020–21	भेषज कुमार	1634 / 2000	81.70	कोरोना संक्रमण के कारण स्थगित		

➢ **प्रतिवेदन 2021-22**

प्रवेश-

एम.ए. प्रथम सेमेस्टर – 35 (सीट संख्या में वृद्धि 30 से बढ़ाकर 35 की स्वीकृति)
एम.ए.तृतीय सेमेस्टर – 27

➢ **कार्यरत शिक्षक / कर्मचारी** -

1. डॉ.डी.एल.पटेल, विभागाध्यक्ष 29.11.1989 सहायक प्राध्यापक प्रवर श्रेणी
2. श्री भुवनेश्वर कंवर सहायक प्रध्यापक
3. डॉ. योगिता साहू अतिथि व्याख्याता (निरंतर चतुर्थ वर्ष)
4. राजकिशोर साहू प्रयोगशाला तकनीशियन

➢ **अकादमिक गतिविधियाँ -**

प्राचार्य के संरक्षण एवं विभागाध्यक्ष भूगोल के मार्गदर्शन में भूगोल परिषद का गठन किया गया जिसके परिषद प्रभारी श्री भुवनेश्वर कंवर तथा छात्र अध्यक्ष भेषज कुमार मनोनीत हुए।

महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के सर्वोच्च केन्द्र होते हैं। शोध कार्य एवं नवाचार संबंधित विषय को संजीवनी प्रदान करते हैं। शोध के प्रथम चरण का कार्य विभागीय स्तर पर भौतिक, सामाजिक – आर्थिक सर्वेक्षण के माध्यम से कराया जाता है जो लघु शोध प्रबंध, शोध प्रोजेक्ट का द्वार खोलता है। चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों के द्वारा विश्वविद्यालय के अलग–अलग जिलों के 27 गांवों का प्रोजेक्ट तैयार किया गया।

विभागीय सेमिनार पूर्व नियोजित माह के प्रति शनिवार के आधार पर कुल 11 सेमिनार का आयोजन किया गया।

अंतर्विश्वविद्यालयीन/अंतर्महाविद्यालयीन व्याख्यान के अंतर्गत 'भूगोल कल, आज और कल' विषय पर दिनांक को आयोजन किया गया जिसके मुख्य वक्ता प्रो.सी.पी. मिश्रा सेवानिवृत प्राध्यापक भूगोल एवं प्राचार्य दुर्गा महाविद्यालय रायपुर तथा डॉ.विमल पटेल प्राध्यापक भूगोल डी.पी. विप्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर थे।

➢ **विभाग की उपलब्धियाँ-**

विभाग के भूतपूर्व 06 छात्रों द्वारा नैट एवं 04 छात्रों द्वारा सेट परीक्षा उत्तीर्ण किया गया। जो विभाग के लिये गर्व का विषय है। विभाग के पूर्व छात्र समलेश पोटाई एवं बीरबल केमरो ने छग.लोक सेवा आयोग से सहायक प्राध्यापक भूगोल पर चयनित होकर विभाग एवं महाविद्यालय का मान बढ़ाया।

➢ **गैर शैक्षणिक गतिविधियाँ-**

रासेयो में पंजीकृत संख्या – 61 समस्त छात्र–छात्रायें

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निरंतर कार्य – नगर के गढ़िया पहाड़ में पौधारोपण एवं औषधीय पौधा गिलोय का वृहत् रोपण किया गया।

महाविद्यालय परिसर में प्लास्टिक संग्रहण एवं स्वच्छता का कार्य किया जाकर 04 देव वृक्ष पीपल का रोपण किया गया।

कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए 02 ऑनलाईन वेबीनार का आयोजन, 61 गांवों में मास्क वितरण, जागरूकता रैली का आयोजन छात्र – छात्राओं के प्रयास से स्थानीय स्तर पर किया गया।

मैदान में हारा हुआ इंसान दोबारा से जीत सकता है लेकिन मन से हारा हुआ इंसान कभी नहीं जीत सकता है ।

इतिहास–विभाग

– प्रो. शरद ठाकुर
विभागाध्यक्ष

➨ विभाग की स्थापना 1988–89

➨ संरक्षक – डॉ. सरला आत्राम

➨ विभागाध्यक्ष – प्रो. शरद ठाकुर

जब से विभाग प्रारंभ हुआ है, विभागाध्यक्षों का नाम –

1. प्रो. जे.आर. वार्ल्यानी
2. डॉ. के. आर. मण्डावी
3. प्रो. शरद ठाकुर

➨ पदों की संख्या

प्राध्यापक – 01 पद

सहा. प्राध्यापक – 02 पद

➨ कार्यरत सभी का नाम

विभागाध्यक्ष – प्रो. शरद ठाकुर

सहा. प्राध्यापक – प्रो. प्रताप चौधरी

अतिथि व्याख्यता – डॉ. पूनम साहू

➨ गतिविधियां

रंगोली प्रतियोगिता	दिनांक – 16/12/2021
पाककला प्रतियोगिता	दिनांक – 20/01/2022
व्याख्यानमाला	दिनांक – 07/03/2022

DEPARTMENT OF ENGLISH
PROFILE

- Dr. Archana Singh
H.O.D.

A very significant landmark in the history of Bhanu Pratap Deo Govt. P.G. College Kanker is the establishment of the Department of English which commenced right from the time when the college was established in the year 1962, July. Initially English Language subject was offered in Graduate Course under Foundation Course and then English Literature subject at the UG level was commenced with highly qualified and experienced faculty. Since its inception following professors have served the department as heads: -

1. Prof. D.K.S. Thakur
2. Prof. N.D.R. Chandra
3. Dr. P.M. Das
4. Dr. Rakesh Tiwari
5. Prof. Patras Kindo
6. Dr. Archana Singh

The sanctioned post of teaching staff in the department by the Govt. of Chhattisgarh is THREE. Presently these teachers are working against the sanctioned posts: -

1. Dr. Archana Singh
2. Prof. Patras Kindo
3. Dr. Nidhi Bhatt
4. Mrs. Priyanka Jaisawal (Model College)

- In the month of September 2019 a Workshop was organized by the department to improve the communication skill in the students.
- From 1st December to 15th December 2021 a Value Added Course on "Personality Development and Career Counselling" has been organized by the department. Approximate 150 students have participated in the course and benefitted.
- From March 2020 world was severely affected by the corona virus and lockdown was imposed by the government. To utilize this time the department has created a Whatsapp group to teach students about English Grammar online.
- On 25th July 2020, the department of English has organized an International Webinar along with the departments of Psychology and Zoology on Covid 19.
- On 23rh January 2021, the department of English along with the department of Psychology organized a Webinar on mental strength.

English Day Celebration on 23rd April

So far one book, one edited book and 40 Research Papers have been published in International / National Journals / Edited books by the faculty members of the department. It is a matter of pride for the department that the faculty members have participated in various National and International Conferences/ Seminars and Webinars and presented their research papers. Dr. Archana Singh presented a research paper in an International Conference held in Cape Town, South Africa.

Apart from Academic achievements students of the department also participate in other activities which reflect the functioning of the department. Participation in other activities provides ample opportunities for self-expression and pursuing individual interest. Thus, department of English has been striving since its inception to bring best in students and inspire them to become good human beings.

To end with this famous proverb, "If you are planning for a year, sow rice; if you are planning for a decade, plant trees; if you are planning for a lifetime, educate people."

विधि–विभाग

– प्रो. विजय बेसरा
विभागाध्यक्ष

1. विधि विभाग में वर्तमान में कुल छात्र–छात्रओं की संख्या 221 है।
2. विधि विभाग द्वारा सत्र् 2021–22 में जिला विधिक सेवा प्रधिकारण द्वारा आयोजित लोक अदालत में छात्र–छात्राओं ने भाग लिया और वहां की गतिविधियों के विषय में सीखा।
3. विधि विभाग के द्वारा सत्र् 2021–22 में जिला सत्र् न्यायालय, बाल सम्प्रेषण गृह एवं बाल न्यायालय का छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया ।
4. विधि विभाग के द्वारा राज्यविधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालिन इंटरसीप प्रोग्राम में विधि विभाग के छात्र–छात्राओं ने जिला विधिक सेवा प्राधिकारण के माध्यम से इंटरसीप का कार्यक्रम में भाग लिया और बिलासपुर में भी कार्यक्रम में सम्मिलित होकर कार्य को सीखा ।
5. विधि विभाग के द्वारा ड्रॉफ्टिंग एवं प्लिडिंग विषय पर जिला अभियोजन अधिकारी श्री राजकुमार मिश्रा के द्वारा ऑनलाईन विस्तरित जानकारी छात्र–छात्राओं को दी गई ।
6. विधि विभाग के द्वारा सिविल जज एवं एडीओपी की तैयारी के लिए न्यायाधीश मंजीत जांगड़े द्वारा छात्र–छात्राओं को ऑनलाईन मार्गदर्शन दिया गया।
7. विधि विभाग के द्वारा विधि छात्र परिषद का गठन किया गया था ।

विधि विभाग द्वारा नशामुक्ति अभियान

वाणिज्य–विभाग

– डॉ. आर. के. एस. ठाकुर
विभागाध्यक्ष

वाणिज्य विभाग भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर (छ.ग.) का एक प्रमुख विभाग है। वाणिज्य विभाग की स्थापना सन् 01 जुलाई 1962 में स्नातक (बी. कॉम.) के साथ हुई थी। तत्पश्चात 1983 में स्नातकोत्तर (एम. कॉम.) की शुरूआत हुई। इस विभाग की स्थापना का मूल उद्देश्य वनंचल क्षेत्र में विद्यार्थियों को वाणिज्य, व्यवसाय एवं प्रबंध के क्षेत्र में दक्ष बनाना है। वाणिज्य विभाग द्वारा विद्यार्थियों में उद्यमिता के क्षेत्र में व्यावसायिक कौशल विकसित करना, व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे CA, CS, CWA,CFA के लिए आधार प्रदान करना, विद्यार्थियों को वाणिज्य के क्षेत्र में शोध हेतु प्रोत्साहित किया जाता है तथा एम.कॉम.चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुसार प्रबंध, वाणिज्य एवं आर्थिक समस्याओं से संबंधित परियोजना कार्य हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है।

1. वाणिज्य विभाग में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर 400 सीट निर्धारित है।

2. इस महाविद्यालय के विद्यार्थी श्री विजय कुमार साहू तथा (2016) एवं सुश्री सेजल माणिक (2018) को बस्तर विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह में गोल्ड मेडल प्रदान किया गया।

3. CGPSC द्वारा आयोजित सहायक प्राध्यापक परीक्षा 2019 में श्री विजय कुमार साहू ने पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान हासिल किया।

4. वाणिज्य विभाग के अधिकांश विद्यार्थी उदयमी के रूप स्वरोजगार स्थापित कर एवं पैतृक व्यवसाय में कुशलता पूर्वक व्यावसाय संचालित कर रहे हैं।

5. वाणिज्य विभाग द्वारा समय–समय पर कार्यशाला एवं सेमीनार का आयोजन किया जाता है जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर के वित्तीय, आर्थिक , व्यावसायिक मुद्दों पर चर्चा की जाती है जिससे विद्यार्थियों की रूचि वाणिज्य विषय के प्रति बढ़ती है ।

6. विद्यार्थियों को उद्योग, बैकिग, e-Commere, करारोपण, कर बचत,उद्यमिता विकास, वित्तीय समोवेशन, आर्थिक सशक्तिकारण, प्रबंध एवं कृषि विकास से संबंधित प्रोजेक्ट कार्य प्रत्येक वर्ष कराया जाता है जिससे छात्रो में कार्य अनुभव, विभिन्न क्षेत्रो में विचारशील, कुशलता इत्यादि को विकसित करने में सहायता मिलती है ।

7. विश्वविद्यालय परीक्षाओ में महाविद्यालय के विद्यार्थी बी.कॉम. एवं एम.कॉम. परीक्षा के प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवांन्वित किये है ।

भूविज्ञान–विभाग

– प्रो. पी. एस. गौर
विभागाध्यक्ष

बस्तर में नैसर्गिक सम्पदाओं का प्रचुर भंडार है जिनमें वन, खनिज और जल महत्वपूर्ण है। क्षेत्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये भानुप्रताप देव स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर में 1985 में स्नातक स्तर पर भूविज्ञान विषय प्रारंभ हुआ एवं विद्याार्थियों की माँग के अनुरूप 2018 में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ हुई।

भूविज्ञान एक प्राकृतिक विज्ञान है, यह विज्ञान की वह शाखा है जो समग्र रूप से पृथ्वी उत्पत्ति, संरचना, आयु, भूवैज्ञानिक इतिहास, विभिन्न भूवैज्ञानिक कारकों, भौतिक विशेषताओं, संरचना और विवर्ततिकी गतिशील पृथ्वी की प्रक्रियाओं की विभिन्न प्रणालियों और खनिजों, शिलाओं और जीवाश्मों के अध्ययन को शामिल करता है। भूविज्ञान में पृथ्वी को समझने के लिये गहन कार्यक्षेत्र की आवश्यकता है।अतः यह विषय एक आकर्षक और साहसिक विषय भी है।

भूविज्ञान का अध्ययन एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक तरीके से पृथ्वी के बारे में ज्ञान प्रदान करता है और खनिजों, हाइड्रोकार्बन, परमाणु खनिज और भूजल जैसे पृथ्वी के संसाधनों का पता लगाने के लिये व्यावहारिक ज्ञान भी देता है। भू–तकनीकी द्वारा बाँधों, नहरों, राजमार्गों और पुलों जैसी सिविल अभियंत्रिकी परियोजनाओं से संबंधित जानकारी प्रदान करता है और एक भूवैज्ञानिक जल, पर्यावरण और प्राकृतिक खतरों और इसके प्रबंधन में भी योगदान देते हैं।

भूविज्ञान विषय में एक बहुत रोमांचक और सार्थक केरियर हो सकता है। भूविज्ञान विषय में स्नातकोत्तर उपाधि लेने वाले विद्यार्थियों के लिये उज्ज्वल एवं आपार संभावनाएं हैं। वे अकादमिक क्षेत्र के साथ साथ विभिन्न केन्द्र और राज्य शासन के शासकीय, अर्ध्दशासकीय, सार्वजनिक अथवा निजी और बहुराष्ट्रीय संगठनों में भूवैज्ञानिक, प्रबंधक अथवा प्रशासक के रूप में कार्य कर सकते हैं इसके अतिरिक्त ये विद्यार्थी खान मालिक, खनन योजनाकार और सलाहकार तथा भूजल अन्वेषक, भूजल प्रबंधक और भू–तकनिकी सलाहकार जैसे स्वरोजगार के अवसर भी प्राप्त कर सकते है।

भूविज्ञान विभाग का उद्देश्य है कि यथा संभव उपलब्ध तकनीकों के माध्यम से कक्षा–शिक्षण (Class Room Teaching), व्यावहारिक (Practical) और क्षेत्र अध्ययन (field studies) के माध्यम से विद्यार्थियों को भूविज्ञान विषय का ज्ञान प्रदान करे तथा विभाग निष्ठापूर्वक विद्यार्थियों को कक्षा (Class) से लेकर क्षेत्र (Field) तक शिक्षित करने का प्रयास कर रहा है । साथ ही विभाग का लक्ष्य है कि छात्रों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण के साथ तैयार कर उन्हें आदर्श नागरिक और उत्कृष्ट भू–पेशेवर (Geo-Professionals) के रूप में राष्ट्र की सेवा करने हेतु सक्षम बनाना है।

महाविद्यालय में भूविज्ञान विषय त्रिवर्षीय बी.एस-सी. उपाधि स्नातक स्तर पर तीन विषय समूहों 1. भूविज्ञान–गणित–भौतिकशास्त्र, 2.भूविज्ञान–वनस्पतिशास्त्र–रसायनशास्त्र एवं 3. भूविज्ञान– प्राणीशास्त्र–रसायनशास्त्र में अध्यापन होता है। इन विषय समूहों में कुल सीट संख्या 80 है जबकि स्नातकोत्तर स्तर पर एम.एस.सी भूविज्ञान में सीट संख्या 25 है। स्नातक स्तर के प्रथम वर्ष में प्रवेश हेतु कोई भी भारतीय नागरिक जिसकी आर्हता 10+2 उच्चतर माध्यमिक परीक्षा किसी भी बोर्ड से विज्ञान विषय में जीवविज्ञान अथवा गणित विषय समूह लेकर उत्तीर्ण होना आवश्यक है तथा एम.एस.सी भूविज्ञान प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश हेतु भूविज्ञान विषय साथ बी.एस-सी. उपाधि प्राप्त किये जाने के उपरान्त प्रवेश लिया जा सकता है।

विगत 5 वर्षों में प्रवेश विवरण निम्नानुसार है :–

स.क्र.	सत्र	कुल स्नातक विद्यार्थियों की संख्या	कुल स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की संख्या	कुल प्रवेशित विद्यार्थी
1	**2021-2022**	217	25	**242**
2	**2020-2021**	219	24	**243**
3	**2019-2020**	225	12	**237**
4	**2018-2019**	107	02	**109**
5	**2017-2018**	099	--	**099**

महाविद्यालय के भूविज्ञान विभाग द्वारा शैक्षणिक गतिविधियों को संचालित किये जाने हेतु आदर्श एवं आवश्यक संसाधन भी हैं जिनमें स्मार्ट बोर्ड, एल.सी.डी. प्रोजेक्टर, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों को दृश्य श्रव्य माध्यमों द्वारा कक्षायें संचालित की जा रहीं है। विभाग में 350 से अधिक पुस्तकें, 250 के लगभग शोध पत्रिकाएं एवं 10600 से अधिक पुस्तकों की softcopies हैं जो विद्यार्थियों द्वारा कार्य अवधि में उपयोग की जा सकती है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय के पुस्तकालय में 550 से अधिक पुस्तकें विद्यार्थियों द्वारा उपयोग में लाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त ध्रुवित सूक्ष्मदर्शी, अयस्कों के अध्ययन हेतु विशेष सूक्ष्मदर्शी, खनिजों, शैलों, जीवाश्मों,विभिन्न संरचनात्मक–, भूआकृतिक–,अभियात्रिकी– एवं क्रिस्टल माडलों, थिन सेक्शन आदि उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त विभिन्न नक्शे, आवश्यक उपकरण एवं उपस्कर विद्यार्थियों के अध्ययन अध्यापन एवं प्रयोग कार्य हेतु उपलब्ध है।

भूविज्ञान विभाग द्वारा विज्ञान दिवस के अवसर पर ''विज्ञान संकाय'' के संयुक्त प्रयास से दिनांक 28 फरवरी 2022 को वेबीनार आयोजित किया गया जिसके प्रमुख वक्ता **डॉ राजीव बिड़वई** उप क्षेत्रीय निर्देशक, परमाणु

उर्जा विभाग, भारत सरकार थे आपके द्वारा "Intergreted Approach in Science and Technology for Sustainable Future" सार्वगर्भित व्याख्यान दिया गया । साथ ही विभाग द्वारा दिनांक 9 दिसम्बर 2021 को **डॉ. दिनेश थवायत**, क्षेत्रीय निर्देशक भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग, पृथ्वी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा **"छत्तीसगढ़ का भूविज्ञान एवं खनिज संसाधन : सोनाखान के विशष संदर्भ में "**पर वेबीनार में व्याख्यान दिया गया।

भूविज्ञान विभाग को आवश्यक संसाधन यथा पुस्तकें, शोध पत्रिकाएं, आवश्यक उपकरण/उपस्कर तथा अन्य सामग्रियॉ उपलब्ध कराने में **डॉ.एम.डब्लू.वाई खान** भू.पू. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, भूविज्ञान एवं जलसंसाधन प्रबंधन अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, **श्री जयंत पशीने**, वरिष्ठ महाप्रबंधक, छत्तीसगढ़ राज्य माइनिंग कॉरपोरेशन रायपुर, **डॉ. व्ही.के.मिश्रा**, भू.पू. अतिरिक्त संचालक, खनिज एवं खनि कर्म संचालनालय, रायपुर, **श्री डी.महेश बाबू** अतिरिक्त संचालक, खनिज एवं खनिज कर्म संचालनालय, रायपुर, **श्री श्रीकांत राव**, संयुक्त संचालक, खनिज एवं खनि कर्म संचालनालय, रायपुर, **डॉ.ऋति,** कनेक्टिकट राज्य विश्वविद्यालय कनेक्टिकट सं.रा.अमेरिका, **श्री प्रमोद नायक**, खनिज अधिकारी, जिला उत्तर बस्तर कांकेर तथा **जिला खनिज संस्थान न्यास जिला उत्तर बस्तर कांकेर** द्वारा विभाग को रू.15,25000/ का विशेष अनुदान आवश्यक उपकरणों, फर्नीचर एवं पुस्तकों आदि के क्रय किये जाने हेतु प्राप्त हुआ इसके अतिरिक्त विभाग के शिक्षकों द्वारा भी आवश्यक सहयोग प्रदान किया गया।

डॉ निनाद बोधनकर विभागाध्यक्ष भूविज्ञान एवं जलसंसाधन प्रबंधन अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, एवं विभिन्न संस्थानों के भूवैज्ञानिकों के द्वारा आतुरगॉव कांकेर में रेजिस्टीवीटीमीटर का प्रदर्शन जिसमें विभाग के विद्यार्थियों द्वारा भी भाग लिया गया।

वनस्पति शास्त्र विभाग

– प्रो. आर. कुलदीप
विभागाध्यक्ष

वनस्पति विभाग द्वारा 27/01/2022 को विज्ञान परिषद का गठन किया गया जिसके अंतर्गत निम्नलिखित पदाधिकारी नियुक्त किए गए।

- अध्यक्ष: फलेश्वर साहू M Sc III SEM
- उपाध्यक्ष: फलेंद्र साहू M Sc I sem
- सचिव: दीपशिखा B Sc III
- कोषाध्यक्ष: रवि देवांगन B Sc III

परिषद का उद्देश्य :

* विज्ञान के प्रति रुचि जागृत करना
* प्रायोगिक शिक्षा को बढ़ावा देना
* वैज्ञानिक क्रियाकलापों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना
* सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा देना है।

इस उद्देश्य के तहत परिषद के द्वारा वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

* विज्ञान प्रश्न मंच
* पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता
* निबंध प्रतियोगिता
* स्लोगन राइटिंग

संरक्षक - प्राचार्य
विभागाध्यक्ष- सुश्री आर कुलदीप
– सुश्री ऋचा सगने
परिषद प्रभारी- सुश्री पुष्प लता कंवर
सुश्री अनुजा कुजुर
सदस्य: श्रीमती रोशनी ठाकुर, श्री गोवर्धन सोनवानी

विभाग द्वारा नवांगतुक विद्यार्थियों का स्वागत समारोह

रसायन शास्त्र–विभाग

– प्रो. एस. के. सिन्हा
विभागाध्यक्ष

1 . विभाग का नाम :– रसायन शास्त्र

2 . विभागीय स्थापना –

क्र.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
01	प्राध्यापक	01	निरंक	1
02	सहायक प्राध्यापक	03	02 1 प्रो. एस.के. सिन्हा 2 प्रो. प्रियंका टोप्पो	01
03	प्रयोगशाला तकनीशियन	01	1 श्री रिखी राम भुआर्य	निरंक
04	प्रयोगशाला परिचालक	01	निरंक	01

3. विद्यार्थी पंजीयन –

क्र.	कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या
01	बी.एस–सी. भाग एक	315
02	बी.एस–सी. भाग दो	236
03	बी.एस–सी. भाग तीन	245
04	एम.एस–सी. रसायन शास्त्र प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर	29
05	एम.एस–सी. रसायन शास्त्र तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर	29

4. विद्यार्थियों की सहभागिता –

1. विज्ञान संकाय, भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर (छ.ग.) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता ।

2. विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम में सहभागिता ।

5. विभागीय उपलब्धियाँ –

1. शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर जगदलपुर के 2019–20 के रसायन शास्त्र विषय की प्रावीण्य सूची में जया राठौर एवं सोहद्रा ने क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय प्राप्त किया ।

2. रसायन शास्त्र विभाग में सत्र् 2020–21 में अध्यनरत छात्रा नीता नेताम ने सी.एस.आई.आर.–यू.जी.सी. द्वारा आयोजित नेट परीक्षा अखिल भारतीय रैंक 81 के साथ उत्तीर्ण की ।

जब लक्ष्य को पाना मुश्किल हो जाए तो अपने लक्ष्य को ना बदले बल्कि अपने प्रयासों में बदलाव करें ।

जिस समय हम किसी का अपमान करते है, उसी समय हम अपना सम्मान भी खो देते है ।

Department of Zoology
PROFILE

- Prof. Sumita Pandey
H.O.D.

Zoology is the branch of Science that studies the Animal Kingdom. In Zoology Degree Course, one gets a chance to learn about all the aspects of animal life including Cytology, Genetics, Embryology, Physiology, Evolution, Ecology, Biodiversity and many more.

The department of Zoology was established in the year 1988. The objectives' of the department is to provide quality education in Zoology and inculcate the spirit of resource conservation and love for nature. Program offered in the college is B.Sc. After completion of B.Sc, student can opt for further higher studies such as M.Sc. Fisheries, M.Sc. Environmental Science, and Entomology.
At present there are two assistant professors, one lab technician, and one lab attendant. Total number of students pursing B.Sc. degree with Zoology as subject is 540.

Activities during Session 2021-22

1. Wildlife Conservation Week
2. Swachhtha Abhiyan
3. National Science Day
4. Seminar by student on topic of Vector Disease
5. World Wildlife Day
6. World Environment Day

Different activities like Rangoli making, Quiz competition, Best out of Waste, Poster Making(Online), Slogan Competition were organized during the session.

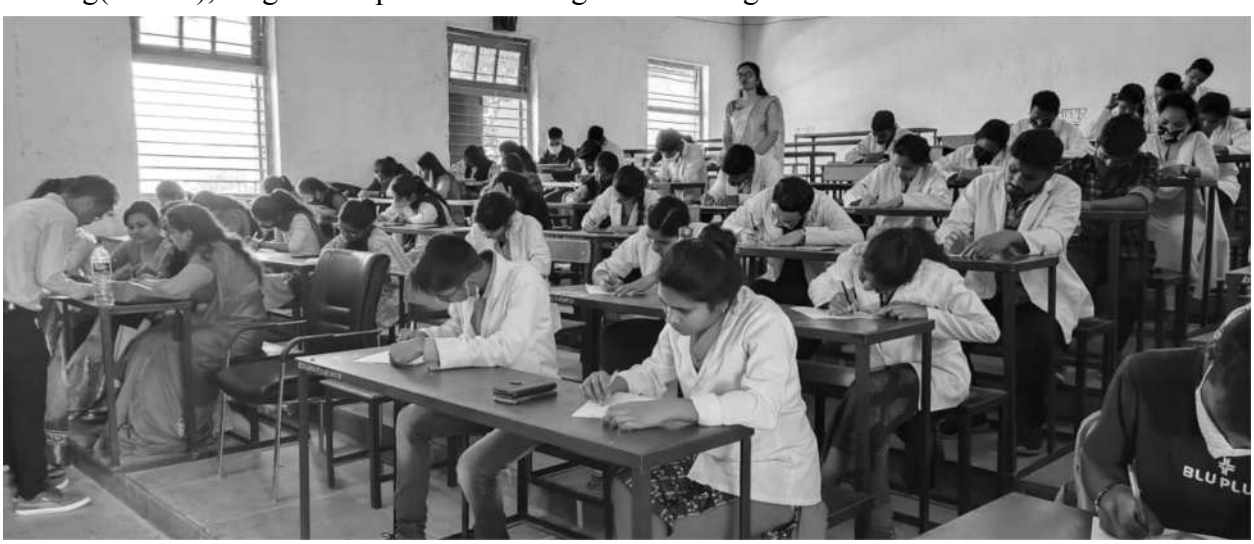

All the above activities were taken by Mrs. Sumita Pandey (Assistant Professor & HOD of Zoology), Mr. Aashish Netam (Assistant Professor), Dr. Sharmila Soni (Guest Lecturer) and under the guidance of Dr. Sarla Aatram, Principal B.P. Deo Govt P.G. College Kanker.

Department of Microbiology

PROFILE

- Dr. Nelson Xess
H.O.D.

In 2017 Microbiology subject has been introduced in the college at the college at the UG level. Initially there were only 10 students in the subject. At present, the total number of the students pursuing B.Sc. degree with Microbiology as subject is 150. There is only one post of Assistant Professor in the department. Presently Dr. Nelson Xess is working at the post. A well established laboratory with the state of art practical tools is in the department.

Microbiology is the study of the biology of microscopic organisms - viruses, bacteria, algae, fungi, slime molds, and protozoa. The methods used to study and manipulate these minute and mostly unicellular organisms differ from those used in most other biological investigations. These studies integrate Cytology, Physiology, Ecology, Genetics and Molecular biology, Evolution, Taxonomy and systematic with a focus on Microorganisms; in particular bacteria. The relevance and applications of these Microorganisms to the surrounding environment including human life and Mother Nature become a part of this branch. Since inception of this branch of Science, Microbiology has remained a field of actively research and ever expanding in all possible directions; broadly categorized as pure and applied science. Different branches of pure Microbiology based on taxonomy are Bacteriology, Mycology, Protozoology and Parasitology, Phycology and Virology; with considerable overlap between these specific branches over each other and also with other disciplines of life sciences, like Biochemistry, Botany, Zoology, Cell Biology, Biotechnology, Nanotechnology, Bioinformatics, etc. Areas in the Applied Microbial Sciences can be identified as: Medical, Pharmaceutical, And Industrial (Fermentation, Pollution control), Air, Water, Food and Dairy, Agriculture (Plant Pathology and Soil Microbiology), Veterinary, Environmental (Ecology, Geo-Microbiology); and the technological aspects of these areas. Knowledge of different aspects of Microbiology has become crucial and indispensable to everyone in the society. Study of microbes has become an integral part of education and human progress. Building a foundation and a sound knowledge-base of Microbiological Principles among the future citizens of the country will lead to an educated, intellectual and scientifically advanced society. Microbiological tools have been extensively used to study different life processes and are cutting edge technologies.

The aim of the undergraduate degree in Microbiology is to make students knowledgeable about the various basic concepts in wide ranging contexts which involve the use of knowledge and skills of Microbiology. B.Sc. Microbiology is Three Year Undergraduate Program covers wide range of basic and applied microbiology courses as well as a course of interdisciplinary nature. The course is designed to build a strong microbiology knowledge base in the student, and furthermore, acquaints the students with the applied aspects of this fascinating discipline as well. The student is thus equipped to apply the skilled learning in the program to solve practical societal problem. There is a continual demand for microbiologists in the work force – education, industry and research. Career opportunities for the graduate students are available in Manufacturing Industry and Research Institutes at technical level.

Students in the Microbiology Department at our college are also active in science eco groups, NCC, NSS, and sports.

क्रीड़ा–विभाग

– श्री सुधीर सोवानी
क्रीड़ा अधिकारी

1. इस वर्ष महाविद्यालय खेलकूद गतिविधियों में महाविद्यालय के महिला व पुरूषों की टीमों ने सेक्टर एवं अंतर विश्वविद्यालय टीम चयन प्रतियोगिता में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।
2. महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं का प्रातः 06:00 बजे से 10:00 बजे तक एवं संध्या 04:00 बजे से 06:00 बजे तक मैदान पर विधा अनुसार समय–समय पर प्रशिक्षण देकर अभ्यास करवाया गया।
3. महाविद्यालय के लगभग 200 छात्र–छात्राओं (पुरूष 103, महिला 97) ने विभिन्न विधाओं में विश्वविद्यालय टीम चयन प्रतियोगिता में **महाविद्यालय के 42** छात्र–छात्राओं ने विभिन्न विधाओं में **विश्वविद्यालय टीम चयन प्रतियोगिता में महाविद्यालय का प्रतिनिधत्व किया ।**
4. महाविद्यालय के तीन विद्यार्थी कु. ज्योति ठाकुर(भाला फेक), कु. श्रद्धा मरकाम (ऊँची कूद) और सौरभ सलाम (100 मी., 200 मी. एवं 4X400 मी. रीले एवं 4X100 मी. रीले रेस) ने **अखिल भारतीय विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय** का प्रतिनिधित्व किया ।
5. महोविद्यालय के मैदान में छात्र–छात्राओं के लिए विधा अनुसार खो–खो, कबड्डी, वॉलीबॉल, हैण्डबॉल, फुटबॉल व क्रिकेट का कोर्ट/मैदान तैयार किया गया ।
6. सेक्टर स्तरीय पुरूष कबड्डी वर्ग में महाविद्यालय के टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
7. सेक्टर स्तरीय महिला कबड्डी वर्ग में महाविद्यालय के टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
8. सेक्टर स्तरीय पुरूष हैण्डबॉल वर्ग में महाविद्यालय के टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
9. सेक्टर स्तरीय महिला हैण्डबॉल वर्ग में महाविद्यालय के टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
10. सेक्टर स्तरीय पुरूष फुटबॉल वर्ग में महाविद्यालय के टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
11. सेक्टर स्तरीय महिला खो–खो वर्ग में महाविद्यालय के टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
12. सेक्टर स्तरीय पुरूष चेस वर्ग में महाविद्यालय के एक सदस्य को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।
13. **महाविद्यालय के दो छात्र विशाल शोरी एवं आलोक कुमार पुरूष क्रिकेट वर्ग में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया ।**
14. **महाविद्यालय के पांच छात्राओं आदुरी मिस्त्री, लक्ष्मी मंडावी, अंजली जैन, दीपिका गोटा एवं डॉली नरेटी ने महिला फुटबॉल वर्ग में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया ।**
15. **सेक्टर स्तरीय पुरूष बैडमिंटन वर्ग में महाविद्यालय के मो. इज़हार शेख को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ ।**
16. **सेक्टर स्तरीय पुरूष/ महिला एथेलेटिक्स वर्ग में महाविद्यालय को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ ।**

राष्ट्रीय सेवा योजना

(पुरूष इकाई)

– प्रो. बी.एस.कंवर
कार्यक्रम अधिकारी

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर की महिला एवं पुरूष इकाई तथा शासकीय इन्दरू केंवट कन्या महाविद्यालय कांकेर की इकाई का संयुक्त रूप से सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसका विषय ''ग्रामीण विकास के लिए युवा'' रहा ।

कार्यक्रम के प्रथम दिवस में शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमति आरती रवि श्रीवास्तव जनभागीदारी अध्यक्ष शासकीय इन्दरू केंवट कन्या महाविद्यालय कांकेर द्वारा किया गया। उद्धाटन पश्चात विभिन्न दलों का गठन एवं पदाधिकारियों का चुनाव किया गया जिसमें कुल आठ दल बनाए गए। इस तरह शिविर में कुल 150 शिविरार्थी शामिल हुए ।

शिविर के बेहतर संचालन के लिए समय सारणी बनाई गई जिसका पालन शिविर के सातों दिन नियमित रूप से किया गया। शिविर की शुरूआत प्रायः योग व व्यायाम से होती थी तत्पश्चात् स्वयंसेवकों द्वारा दो घंटे का श्रमदान किया गया जिसमें निरंतर पांच दिनों तक पी.जी. कॉलेज परिसर की सफाई, कन्या महाविद्यालय परिसर की सफाई, हॉस्टल की सफाई व पी.जी.कॉलेज के खेल मैदान का मरम्मत कार्य किया गया।

बौध्दिक परिचर्चा कार्यकम के द्वितीय दिवस में मुख्य अतिथि डॉ. डी.एल. पटेल कार्यकम समन्वयक, बस्तर विश्वविद्यालय रहे उन्होने व्यक्तित्व विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व पर जानकारी दी एवं स्वयंसेवकों का उत्साह बढ़ाया।तृतीय दिवस में मुख्य अतिथि श्री सुरेश श्रीवास्तव व श्री एन. आर साव रहे, जिन्होने मंच संचालन कैसे किया जाता है? इसकी विस्तृत जानकारी दी। चतुर्थ दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्रीमति सरला आत्राम प्राचार्य पी.जी. कॉलेज कांकेर व डॉ. श्रीमति अर्चना सिंह विभागाध्यक्ष अंग्रेजी द्वारा महिला सशक्तिकरण पर व्याख्यान दिया गया तथा श्री डी.आर.साहू उपनिरिक्षक कांकेर द्वारा अभिव्यक्ति एप एवं महिला सुरक्षा संबंधित जानकारी प्रदान की गई।

शिविर के पांचवे दिन नेहरू युवा केन्द्र द्वारा "जिला स्तरीय आस पड़ोस युवा सांसद कार्यकम" आयोजित किया गया जिसमें हमारे शिविरार्थी शामिल हुए। कार्यकम में अतिथि के रूप में श्री शलभ कुमार सिन्हा (भा.पु.से.) पुलिस अधीक्षक कांकेर, श्री जितेन्द्र कुमार यादव (भा.प्र.से.) एस.डी.एम. भानुप्रतापपुर, सुश्री कल्पना ध्रुव एस.डी.एम. कांकेर व श्री हेमंत ध्रव जिला पंचायत अध्यक्ष कांकेर रहे। जिनके द्वारा करियर से संबंधित जानकारी दी गई व विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। शिविर के छठवें दिन शिविरार्थियों द्वारा छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधताओं को प्रदर्शित करते हुए रैली निकाली गई जिसके माध्यम से स्वच्छता एवं टीकाकरण का संदेश भी दिया गया।

उक्त गतिविधियों के अतिरिक्त शिविरार्थियों से उनके मौलिक लेख, समस्याएं या किसी विषय पर सुझाव आमंत्रित किया जाता था जिस पर शाम को चर्चा की जाती थी तथा संपादकीय समूह द्वारा विभिन्न लेखों एवं कविताओं का चुनाव करके प्रस्तुत किया जाता था। राष्ट्रीय सेवा योजना का सूत्र वाक्य "मैं नहीं तुम" का वास्तविक अर्थ क्या है हमने इन सात दिनों में सीखने का प्रयास किया। मेरा ये मानना है कि हमारे स्वयंसेवकों का निश्चित रूप से व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हुआ। हमें आज पूर्ण विश्वास है कि समाज में हम अपनी पहचान और देश के विकास में सहयोग कर सकेंगे।

राष्ट्रीय सेवा योजना

(महिला इकाई)

– प्रो. अलका केरकेट्टा
कार्यक्रम अधिकारी

भानुप्रताप देव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर में 4 मई 2022 को नशा मुक्ति अभियान के तहत तम्बाकू मुक्त वातावरण निर्मित करने व्याख्यान माला का आयोजन किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तहसीलदार आनंद कुमार नेताम विशिष्ट अतिथि जिला अभियोजन अधिकारी राज कुमार मिश्रा एवं शासकीय अधिवक्ता सौरभमणि मिश्रा थे । महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सरला आश्राम द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई ।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि तहसीलदार आनंद कुमार नेताम ने युवाओं में नशे की बढ़ती हुई आदत को बहुत गंभीर समस्या बताया । उन्होंने कहा कि नशे से व्यक्ति की समाजिक एवं आर्थिक क्षति होती है । नशामुक्ति के अंतर्गत लोगों को नुक्कड़ नाटक व गीत प्रतियोगिता आदि के माध्यम से जागरूक किया जाना चाहिए ।

विशिष्ट अतिथि जिला अभियोजन अधिकारी राजकुमार मिश्रा ने कहा कि नशा पर अंकुश लगाने के लिए आबकारी अधिनियम एन.डी.पी.एस. एक्ट जैसे कठोर कानून है लेकिन कानून से अपराधी को सिर्फ सजा हो सकती है और इस तरह के आयोजन से समाज में जागरूकता लाया जा सकता है । नशामुक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है ।

प्राचार्य डॉ. सरला आश्राम ने तम्बाकू के इतिहास के बारे में बताया, उन्होने कहा एक सुंदर चमकदार चिलम में तम्बाकू को मुगल बादशाह अकबर के सामने पेश किया, जो बाहर से आकर्षक था, लेकिन उसका सेवन व्यक्ति को अंदर से खोखला कर देता है और हमारी सुवा पीढ़ी इसकी गिरफ्त में आ रही है । एक विकसित राष्ट्र के लिए युवाओं को नशामुक्त होना होगा, तब हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में पहले नम्बर पर होगा ।

कार्यक्रम को शासकीय अधिवक्ता सौरभमणि मिश्रा ने भी सम्बोधित किया । इस दौरान निबंध व नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । छात्र–छात्राओं ने नशामुक्ति के लिए रैली भी निकाली ।

महाविद्यालय के रक्तदाता विद्यार्थियों की सूची

क्र.	रक्तदाता	कक्षा	रक्त समूह
1	विद्यासागर साहू	B.A.-III	O+
2	संतराम यादव	B.A.-III	B+
3	जितेश पटेल	B.A.-III	A+
4	रविन्द्र यादव	B.A.-II	B+
5	देवेन्द्र प्रकाश निषाद	B.A.-I	B+
6	अक्षय पाण्डे	B.Sc.-I	O
7	दिनेश सिन्हा	B.A.-I	A+
8	शैलेन्द्र साहू	M.Sc.-II Sem.Geology	O+
9	संदीप साहू	B.A.-II	AB+
10	नीलकण्ड साहू	B.A.-II	O+
11	लक्ष्मण दीपक	M.A.	O+
12	भुवन साहू	B.Sc.-III	B+
13	भगवानदास पटेल	M.A.-I Sem. Sociology	O+
14	टकेश्वर पटेल	M.Sc.-II	O+
15	योगेश पटेल	B.Sc.-III	B+
16	हिमांशु साहू	B.A.-II	B+
17	तरूण राज साहू	B.Sc.-III	A+
18	भोला चौहान	LL.B.	A+
19	दिवाकर वर्मा	LL.B-III	AB+
20	गुरूदास विश्वास	LL.B-III	B+
21	देवेन्द्र सिन्हा	M.A.-II Sem. Sociology	AB+
22	योगेन्द्र सिन्हा	B.Sc.-III	A+
23	फलेश्वर साहू	M.Sc.-IV Sem. Botany	AB+

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य एवं सहायक प्राध्यापकों की सूची

govtpgcollegekanker@gmail.com

क्र.	नाम	पदनाम	विषय	मोबा. नम्बर
1	डॉ. श्रीमती सरला आत्राम	प्राचार्य	राजनीति शास्त्र	9826369585
2	श्री पी.एस.गौर	सहायक प्राध्यापक	भूगर्भ शास्त्र	7694979525
3	डॉ. व्ही.के. रामटेके	सहायक प्राध्यापक	समाजशास्त्र	7974494559
4	डॉ. लक्ष्मी लेकाम	सहायक प्राध्यापक	राजनीति शास्त्र	9424294748
5	डॉ. एस. आर. बंजारे	सहायक प्राध्यापक	हिन्दी	9425259879
6	डॉ. कमला ठाकुर	सहायक प्राध्यापक	राजनीति शास्त्र	7415346181
7	डॉ. एल. आर. सिन्हा	सहायक प्राध्यापक	अर्थशास्त्र	9424275285
8	डॉ. डी. एल. पटेल	सहायक प्राध्यापक	भूगोल	9424275020
9	श्री शरद ठाकुर	सहायक प्राध्यापक	इतिहास	9479031333
10	श्री एन. आर. साव	सहायक प्राध्यापक	हिन्दी	7974803016
11	डॉ. आर. के. एस. ठाकुर	सहायक प्राध्यापक	वाणिज्य	9424273845
12	डॉ. अर्चना सिंह	सहायक प्राध्यापक	अंग्रेजी	9407666900
13	सुश्री आर. कुलदीप	सहायक प्राध्यापक	वनस्पति शास्त्र	9425593305
14	डॉ. बंसत नाग	सहायक प्राध्यापक	समाजशास्त्र	9424290046
15	श्री पतरस किण्डो	सहायक प्राध्यापक	अंग्रेजी	9589631199
16	श्री सुरेन्द्र सिन्हा	सहायक प्राध्यापक	रसायन	9926219623
17	श्री विजय प्रकाश साहू	सहायक प्राध्यापक	हिन्दी	7000540156
18	श्रीमती सुमिता पाण्डेय	सहायक प्राध्यापक	प्राणी शास्त्र	9424281448
19	श्री अशोक कुमार ज्योति	सहायक प्राध्यापक	भौतिक शास्त्र	8223914514
20	श्री नरेन्द्र कुमार साहू	सहायक प्राध्यापक	विधि	9039977978
21	श्री भुनेश्वर सिंह कंवर	सहायक प्राध्यापक	भूगोल	7999170403
22	श्री प्रताप चौधरी	सहायक प्राध्यापक	इतिहास	9754921896
23	डॉ. निधि भट्ट	सहायक प्राध्यापक	अंग्रेजी	9340462332
24	श्री सुधीर सोवानी	क्रीड़ा अधिकारी	क्रीड़ा	9604551504
25	श्री नेलसन खेस	सहायक प्राध्यापक	सूक्ष्म जीवविज्ञान	9893345951
26	श्रीमती अलका केरकेट्टा	सहायक प्राध्यापक	मनोविज्ञान	7000352058

27	श्री विजय बेसरा	सहायक प्राध्यापक	विधि	8319188735
28	सुश्री ऋचा सगने	सहायक प्राध्यापक	वनस्पति विज्ञान	7647067454
29	श्रीमती प्रियंका टोप्पो	सहायक प्राध्यापक	वाणिज्य	9754063684
30	डॉ. हेमलता साहू	सहायक प्राध्यापक	वाणिज्य	7999717007
31	श्री आशीष कुमार नेताम	सहायक प्राध्यापक	प्राणीशास्त्र	8871061256

शासकीय आदर्श आवसीय महाविद्यालय, कांकेर (छ.ग.)

सहायक प्राध्यापकों की सूची :–

क्र.	नाम	पदनाम	विषय	मोबा. नम्बर
1	श्री विजय कुमार साहू	सहायक प्राध्यापक	वाणिज्य	8109342902
2	श्रीमती प्रियंका जायसवाल	सहायक प्राध्यापक	अंग्रेजी	7587121151
3	श्री खिलेश्वर कोसमा	सहायक प्राध्यापक	भौतिक शास्त्र	6264616569
4	सुश्री प्रियंका गवर्ना	सहायक प्राध्यापक	वाणिज्य	7587427176
5	डॉ. अशोक कुमार भारती	सहायक प्राध्यापक	रसायन शास्त्र	8319854660

अधिकारी :–

क्र.	नाम	पदनाम	मोबा. नम्बर
1	श्री एन. एस. कश्यप	रजिस्ट्रार	9406108892

तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की सूची :–

क्र.	नाम	पदनाम	मोबा. नम्बर
1	श्री जीवन लाल यादव	सहायक ग्रेड-01	9826778926
2	श्री सुनेश्वर ठाकुर	सहायक ग्रेड-02	9109553387
3	श्री दिवाकर वर्मा	डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	9406145324
4	श्री एस.आर. अहरवाल	प्रयोगशाला तकनीशियन	9424289179
5	श्री आर.के.ध्रुव	प्रयोगशाला तकनीशियन	9424222144
6	श्री बी.आर.मरकाम	प्रयोगशाला तकनीशियन	9165431950
7	श्री मनोज ठाकुर	प्रयोगशाला तकनीशियन	8120402641
8	श्रीमती रोशनी ठाकुर	प्रयोगशाला तकनीशियन	8435362290
9	श्री रिखी राम	प्रयोगशाला तकनीशियन	8319326181
10	श्री राजकिशोर साहू	प्रयोगशाला तकनीशियन	8234953190
11	श्री जी. सोनवानी	प्रयोगशाला परिचालक	9424274945
12	श्री भुवन लाल	प्रयोगशाला प्ररिचालक	9754518911
13	श्री भारत लाल	भृत्य	9165533681
14	श्रीमती राजकुमारी शोरी	भृत्य	8966847441
15	श्री परसराम मंडावी	चौकीदार	8962611125
16	श्री सूरज कुमार बिछिया	स्वीपर	9926124264
17	श्री पुरूषोत्तम कुमार यादव	बुक लिफ्टर	8815625612
18	श्रीमती अमरीका चौधरी	सा. बा. छा. स्वीपर	9406400250

दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों :–

क्र.	नाम	पदनाम	मोबा. नम्बर
1	श्री अर्जुन कुमार नाग	कम्प्यूटर ऑपरेटर	9685978040
2	श्री गोवर्धन लाल ध्रुव	माली/चौकीदार	8223078425
3	श्री चम्पालाल नेताम	चौकीदार बालक छात्रावास	8817221582
4	श्री खेमूराम पटेल	चौकीदार बालिका छात्रावास	8982450823
5	श्रीमती द्रोपती नाग	सा. बालिका छात्रावास चौकीदार	8817721745
6	श्रीमती कांति	सफाई कर्मचारी	7440715189

अतिथि व्याख्याताओं प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक पद के विरूद्ध की सूची सत्र 2021–22 :–

क्र.	संकाय / विभाग	नाम	पदनाम
1	इतिहास	डॉ. पूनम साहू	अतिथि व्याख्याता
2	रसायन शास्त्र	श्री गिरीश कुमार	अतिथि व्याख्याता
3	प्राणी शास्त्र	डॉ. शर्मिला सोनी	अतिथि व्याख्याता
4	हिन्दी	डॉ. सीमा परिहार	अतिथि व्याख्याता
5	अर्थशास्त्र	डॉ. प्रीति वैष्णव	अतिथि व्याख्याता
6	वाणिज्य	श्री राकेश थवाईत	अतिथि व्याख्याता
7	वाणिज्य	श्री जोगेन्द्र कुमार साहू	अतिथि व्याख्याता
8	विधि	कु. लुब्धेश्वरी	अतिथि व्याख्याता
9	बी.सी.ए.	कु. डिम्पल गंजीर	अतिथि व्याख्याता
10	गणित	परमेश्वर सोनकर	अतिथि व्याख्याता
11	भूगोल	डॉ. योगिता साहू	अतिथि व्याख्याता
12	भूविज्ञान	श्री सेमंत बघेल	अतिथि व्याख्याता
13	भूविज्ञान	श्री मनीष कुमार अठभैया	अतिथि व्याख्याता
14	राजनीति शास्त्र	श्री कोमल सिंह भलावी	अतिथि व्याख्याता
15	मानवविज्ञान	कु. सीमा साहू	अतिथि व्याख्याता

स्व–वित्तीय मानसेवी सहायक प्राध्यापकों की सूची सत्र 2021–22 :–

क्र.	संकाय / विभाग	नाम	पदनाम
1	डी.सी.ए./पी.जी.डी.सी.ए.	कु. रूखमणी यादव	स्व-वित्तीय मानसेवी सहा. प्राध्या.

आदर्श महाविद्यालय के अतिथि व्याख्याताओं की सूची सत्र 2021–22 :–

क्र.	संकाय / विभाग	नाम	पदनाम
1	वाणिज्य	श्री चित्रसेन राय	अतिथि व्याख्याता
2	हिन्दी	डॉ. आभा श्रीवास्तव	अतिथि व्याख्याता

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

डॉ. कृपाराम ध्रुव

जन्म: 13 जून 1961 (पूर्व प्रभारी प्राचार्य) मृत्यु: 8 फरवरी 2022

रक्तदान के बाद शासकीय चिकित्सालय में महाविद्यालय के विद्यार्थी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

Ekta Printers Dmt. 94255-12665